शेक्सपियर विश्व-साहित्य के गौरव, अंग्रेजी भाषा के अद्वितीय नाटककार शेक्सपियर का जन्म २६ अप्रैल, १५६४ ई० मे स्ट्रैटफोर्ड-आन्-ऐवोन नामक स्थान मे हुआ। उसकी बाल्यावस्था के विषय मे बहुत कम ज्ञात है। उसका पिता एक किसान का पुत्र था, जिसने अपने पुत्र की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध भी नही किया। १५८२ ई० मे शेक्सपियर का विवाह अपने से ८ वर्ष बड़ी ऐनहैथवे से हुआ और सम्भवतः उसका पारिवारिक जीवन सन्तोषजनक नही था। महारानी ऐलिजाबेथ के शासनकाल मे १५८७ ई० मे शेक्सपियर लन्दन जा कर नाटक कम्पनियो में काम करने लगा। हमारे जायसी, सूर और तुलसी का प्रायः समकालीन यह कवि यही आ कर यशस्वी हुआ और उसने अनेक नाटक लिखे, जिनसे उसने धन और यश दोनो कमाये। १६१२ ई० मे उसने लिखना छोड दिया और अपने जन्मस्थान को लौट गया और शेष जीवन उसने समृद्धि तथा सम्मान से बिताया। १६१६ ई० मे उसका स्वर्गवास हुआ।

इस महान् नाटककार ने जीवन के इतने पहलुओं को इतनी गहराई से चित्रित किया है कि वह विश्व-साहित्य में अपना सानी सहज ही नही पाता। मारलो तथा बेन जानसन जैसे उसके समकालीन कवि उसका उपहास करते रहे, किन्तु वे तो लुप्त-प्रायः हो गये, और यह कविकुल-दिवाकर आज भी देदीप्यमान है।

शेक्सपियर ने लगभग ३६ नाटक लिखे हैं, कविताएँ अलग।

उसके कुछ प्रसिद्ध नाटक है—जूलियस सीजर, ऑथेलो, मैकवैथ, हैमलेट, लियर, रोमियो जूलियट (दु खान्त), ग्रीष्म-मध्यरात्रि का स्वप्न, वेनिस का सौदागर, बारहवी रात, तिल का ताड (मच एडू अबाउट नथिंग), शीतकाल की कथा, तूफान (सुखान्त)। इनके अतिरिक्त ऐतिहासिक नाटक है तथा प्रहसन भी है। प्राय उसके सभी नाटक प्रसिद्ध है।

शेक्सपियर ने मानव-जीवन की शाश्वत भावनाओ को बडे ही कुशल कलाकार की भाँति चित्रित किया है। उसके पात्र आज भी जीवित दिखाई देते है। जिस भाषा मे शेक्सपियर के नाटको का अनुवाद नही है वह भाषाओ मे कभी नही गिनी जा सकती।

भूमिका

आँथेलो एक दु खात नाटक है। शेक्सपियर ने इसे सन् १६०१ से १६०८ ई० के बीच लिखा था। यह समय शेक्स-पियर के नाट्य-साहित्य के निर्माण-काल मे तीसरा काल माना जाता है जबकि उसने अपने प्रसिद्ध दु.खात नाटक लिखे थे। इस काल के नाटक प्राय: निराशा से भरे हैं।

आँथेलो की कथा संभवत. शेक्सपियर से पहले भी प्रच-लित थी। दरबारी नाटक मडली ने राजा जेम्स प्रथम के समय मे पहली नवम्बर १६०४ ई० को सभा मे 'वेनिस का मूर' नामक नाटक खेला था। शेक्सपियर ने भी आँथेलो नाटक का दूसरा नाम—'वेनिस का मूर' ही रखा है। सभवत. यह शेक्स-पियर का ही नाटक रहा हो। कथा का मूल स्रोत सभवत: १५६६ ई० मे वेनिस मे प्रकाशित जिराल्डी चिन्थिओ की 'हिकै-तोमिथी' पुस्तक से लिया गया है। अगरेज़ी साहित्य को इस कथा का शेक्सपियर के अतिरिक्त कही विवरण प्राप्त नही होता। शेक्सपियर की कथा और चिन्थिओ की कथा मे काफी अन्तर है।

इस कथा मे मेरी राय मे खलनायक इआगो का चित्रण इतना सबल है कि देखते ही बनता है। प्राय प्रत्येक पात्र अपना सजीव चित्र छोड जाता है। विश्व-साहित्य मे आँथेलो एक महान् रचना है क्योकि इसके प्रत्येक पृष्ठ मे मानव-जीवन की उन

गहराइयो का वर्णन मिलता है, जो कि सदैव स्मृति पर खिच कर रह जाती है।

मैंने अपने अनुवाद को जहाँ तक हुआ है सहज बनाने की चेष्टा की है। कुछ बातें हमे याद रखनी चाहिये कि शेक्सपियर के समय मे स्त्रियो का अभिनय लडके करते थे। दूसरे उसके समय मे नाटको मे पर्दों का प्रयोग नही होता था, दर्शको को काफी कल्पना करनी पडती थी। इन बातो के बावजूद शेक्स-पियर की कलम का जादू सिर पर चढ कर बोलता है। यदि आपको इस नाटक मे कोई कमी लगे तो उसे शेक्सपियर पर न मँढ कर, मेरे अनुवाद पर मँढिये, मैं आभारी होऊँगा।

—रागेय राघव
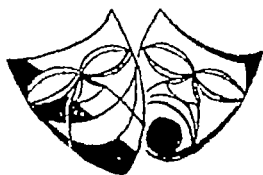
पात्र-परिचय

ऑथेलो	: मूर*
ब्रैबेन्शियो	: डैसडेमोना का पिता
कैसियो	: एक सम्मानित सैन्य पदाधिकारी (लेफ्टिनेंट)
इआगो	: खलनायक सेना में 'ऐन्शेन्ट' पद पर है
रोडरिगो	: वेनिस का एक नागरिक, डैसडेमोना का प्रेमी
ड्यूक	: वेनिस का शासक
मोनटानो	: साइप्रस का राज्यपाल (गवर्नर)
लोडोविको ग्रेशियानो	} वेनिस के सभ्रात नागरिक ब्रैबेन्शियो के सबधी
विदूषक	: ऑथेलो का सेवक
डैसडेमोना	: ब्रैबेन्शियो की पुत्री, ऑथेलो की पत्नी
इमीलिया	: इआगो की स्त्री
बियान्का	: कैसिओ की रखैल

[साइप्रस के नागरिक दूत, सवादवाहक, अफसर, जहाजी लोग (माझी), गायक तथा सेवकगण, सिनेट (विधान-परिपद्) के सदस्य—सिनेट इत्यादि]

मूर—उत्तरी अफरीका के निवासी का एक वशज जो ईसाई है और इटली का वासी है। वह रग का काला है क्योकि उसमें हब्शी जाति का-सा रग बाकी है, वैसी ही आकृति है। एक समय मध्यकाल में मूर बड़े महत्त्वपूर्ण होते थे।

पहला अंक

दृश्य १

[रोडरिगो और इआगो का प्रवेश]

रोडरिगो : क्या वात करते हो! मुझसे वहाने और चाले और वह भी तुम करोगे इआगो! इसकी तो मुझे आशा न थी! मेरे धन के वटुए की तनियो को तो तुमने सदैव अपना समझ कर खोला-वंद किया है और तव भी सव कुछ जान-बूझ कर तुमने मुझसे दुराव किया?

इआगो : भगवान की सौगंध, कुछ मेरी भी सुनोगे या अपनी-अपनी कहे जाओगे? मुझे तो सपने मे भी इसका गुमान नही था! अगर जान कर छिपाता तव तो तुम्हारी घृणा भी उचित होती!

रोडरिगो : तुम नही कहते थे कि तुम्हे उससे घृणा थी!

इआगो : यदि मै उससे घृणा न करता होऊँ तो तुम मुझसे घृणा करो! वेनिस नगर के तीन-तीन संभ्रात नागरिक व्यक्तिगत रूप से उसके पास गये कि वह मुझे अपना लेफ्टिनेन्ट वनाये, मेरे ही लिये उन्होने उससे सविनय प्रार्थना की! और क्या मैं अपना मूल्य नही जानता कि किसी भी परिस्थिति मे मै उस पद के लिये विल्कुल योग्य था! किन्तु उसके अह को ठेस लग गई। वह तो स्वार्थी ठहरा। उसने फौजी काम की वारीकियो के वारे मे वह वड़ी-वड़ी वाते की, वह उलझने पेश की कि सुनने योग्य था! उसने उनसे साफ इंकार कर दिया। नतीजा क्या निकला! मेरी सिफारिश करने वालो को उसने वताया कि उक्त पद के लिये अफसर का चुनाव तो वह पहले ही कर चुका था। और किसका नाम वताया

उसने, जानते हो ? फ्लोरेन्स का माइकिल कैसियो, एक महान गणितज्ञ[1] का, शायद उसे एक सुदर स्त्री ने बरबाद भी कर दिया है।[2] कभी उसने युद्धभूमि मे सेना का सचालन नही किया, सिवाय इसके कि उसे किताबी जानकारी हो, शायद एक अनुभवहीन अविवाहित स्त्री से अधिक युद्ध के विषय मे वह कुछ नही जानता। उसका सारा सैनिकत्व अभ्यासहीन वितण्डामात्र है। और उस आदमी को किसकी जगह चुना गया है जानते हो ? मेरी जगह, मैं—जिसकी योग्यता को रोह्ड्स और साइप्रस ही नही, अनेक ईसाई तथा विधर्मी भूमियो मे हज़ारो आँखो ने देखा है। मैं तो इस पर हैरान हूँ कि मेरी जगह लेने वाला व्यक्ति सिर्फ बही-खाते लिखने के योग्य है। वह मुनीम उसका लेफ्टिनेन्ट बने, और मूर-महाराज का पुराना सेवक मैं एक अनुचरमात्र ही बना रहूँ ! ईश्वर क्या तू नही देखता ? यही मेरी पुरानी सेवाओ का फल है ?

रोडरिगो : मै तो, भगवान की सौगध, उस मूर का बधिक होना चाहता हूँ   फाँसी लगा दूं उसे

इआगो : लेकिन और कोई चारा भी तो नही, नौकरी का यह अभिशाप तो है ही कि उन्नति पक्षपात और सिफारिश पर ही निर्भर रहती है। अफसर खुश तो रास्ता साफ, वर्ना यह कौन देखता है कि योग्यता क्या है ? नौकरी करते कितना समय निकल गया, कितना अनुभव प्राप्त हुआ ! इस तरीके मे तो एक गया उसके पीछे वाले

---

१ व्यग्य में कहता है, वैसे वह उसे आगे मुनीम से अधिक नहीं समझता।

२ इसका अर्थ वैसे स्पष्ट नहीं है। कुछ लोगों का मत यों है—शायद अब वह एक सुदर स्त्री के चक्कर में पड़ने वाला है, जो उसे बरबाद कर देगी। एक और मत है—अब वह सुदर स्त्री को पत्नी बनायेगा, तो वह अवश्य ही उसे खोखला करके बरबाद कर डालेगी।

को अपने आप जगह मिल गई ! अब देखो न, तुम ही न्याय करो, क्या ऐसी हालत मे मै उस मूर से कभी भी प्रेम कर सकता हूँ ?

रोडरिगो : मै तो उसके आधीन कभी नौकरी ही नही करता ।

इआगो : भाई मेरे, इस तरफ से फिक्र छोड दो। मैं उसकी सेवा करता हूँ, क्यो ? सिर्फ अपनी योजना को उसके विरुद्ध पूरा करने को। सब तो स्वामी वन नही सकते, न सब स्वामियो की सेवा भी उसी भक्ति से की जा सकती है ! तुमने वहुत-से कर्त्तव्यरत सेवक देखे होगे जो अपने स्वामियो के लिये रोटी और वेतन के लिये ही अपने जीवन तक को खपा देते है ! गधे की तरह बुढापे तक खटते है और अन्त मे अशक्त हो जाने पर निकाल दिये जाते हैं। ऐसे ईमानदार नीचो को तो कोडे लगाने चाहिये । कुछ ऐसे नौकर होते है जो दिखाई तो वडे कर्त्तव्यरत और ईमानदार देते है पर अपने मतलब मे चौकस होते है। इस तरह मालिक को दिखावे से प्रसन्न करके अपना घर भरते है। यही लोग असल मे मजा लूटते हैं। वे अपने स्वामी के वल पर धन प्राप्त करते हैं और साहसी होते हैं। मै ऐसो मे से ही हूँ। अगर तुम रोडरिगो हो, उसी प्रकार यदि मै मूर हूँ तो कभी इआगो न रहूँ। ईश्वर साक्षी है कि ऑथेलो की सेवा मैं प्रेम और कर्त्तव्यवश नही, वल्कि अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये करता हूँ। मेरा ध्येय विचित्र है, जिसमे वाहरी रूप से मै कुछ और हूँ और मेरे भीतर कुछ और ही है। अगर मै इतना मूर्ख हो जाऊँ कि मेरे वाह्य व्यवहार से ही मेरे मन की वात का पता चल जाये तो समझ लेना कि मै ससार मे उपहास का पात्र वन जाऊँगा, जिसका भीतर-बाहर एक होता है उसका तो हर मूर्ख उपहास करता है। सचाई यह है कि मैं वह नही हूँ जिसका कि दिखावा करता हूँ ।

रोडरिगो : लेकिन इस बात को यदि ऐसा ही माना जाये कि वह सफल हो गया तो वह मोटे होठो वाला मूर कितनी प्रसन्नता नही पा गया ?

इआगो : बढो, उसके पिता को जगाओ, उसे सूचना दो। फिर ऑथेलो का पीछा करो, उसकी प्रसन्नता का नाश करो। पथो पर पुकार-पुकार कर उसके अपराधो की घोषणा करो। डैसडेमोना के रिश्ते-दारो को उस मूर के विरुद्ध भडकाओ। हालाँकि वह इस समय हरियाली मे है, उसके चारो ओर भयकर मरुभूमि पैदा करने का यत्न करो। यद्यपि चारो ओर उसे प्रसन्नता ही प्रसन्नता दिखाई दे रही है, फिर भी तुम उसे दुख और विषाद मे ले जाने की चेष्टा करो। ऐसा करो कि उसके आनद की चमक धुँधली पड कर बुझ जाये।

रोडरिगो . यह रहा उसके पिता का घर, मैं उसे पुकार कर बुलाता हूँ।

इआगो : ऐसी तडपती आवाज मे पुकारो, ऐसा चीत्कार उठाओ, जैसे महानगर मे अनजाने आग लग जाने पर रात को भीषण कोलाहल होता है।

रोडरिगो : जागो जागो ब्रैबेन्शियो श्रीमान् ब्रैबेनशियो, उठो

इआगो : उठो, ब्रैबेन्शियो चोर चोर अपने घर को देखो जागते रहो कहाँ है तुम्हारी पुत्री तुम्हारा धन चोर चोर

[ब्रैबेन्शियो एक खिड़की से झाँकता है।]

ब्रैबेन्शियो : यह कौन मुझे इस बुरी तरह चिल्ला कर बुला रहा है ? आखिर बात क्या है ?

रोडरिगो : श्रीमान् क्या आपका सारा परिवार घर मे है ?

इआगो : क्या आपके द्वारा सब सुरक्षित है ? बद हैं ?

ब्रेबेन्शियो : लेकिन इन सवालो के पूछे जाने का मतलब क्या है ?
इआगो : श्रीमान्, आप लूटे जा रहे है और आपको पता भी नही है ? अपनी इज्जत को ढंकने का प्रयत्न करिये। आपका हृदय फट गया है, क्योकि आपकी आत्मा की छाया आपकी लडकी आपको छोड गई है। इस समय, हाँ इसी समय, अभी भी। एक अधेड़ काला मेढा[1] तुम्हारी लाडली गोरी भेड़ को फुसला रहा है। जागो, जागो, बजा दो घटा और जगा दो इन नीद मे खुर्राटे भरते हुए नागरिको को, वर्ना वह शैतान आपको नाना बना कर छोडेगा। मै कहता हूँ जागिये !
ब्रेबेन्शियो : क्या कहा ! पागल हो गये हो क्या ?
रोडरिगो · अहे सम्मानित श्रीमन्त ! आप मेरी आवाज़ पहचानते हैं ?
ब्रेबेन्शियो : नही, कौन हो तुम ?
रोडरिगो : मेरा नाम रोडरिगो है।
ब्रेबेन्शियो : इस नाम से तो तुम्हारा स्वागत और भी कम होगा। मैंने तुमसे कह दिया है कि मेरे घर के चक्कर मत लगाया करो। मैं साफ शब्दो मे तुमसे कह चुका हूँ कि मेरी लडकी तुम्हारे लिये नही है। और अब खाना खाकर, डट कर शराब पी कर तुम नशे मे यहाँ आये हो कि अपनी ईर्ष्या, प्रतिहिंसा और नीचता का प्रदर्शन करते हुए तुम मेरा विरोध करो और मेरी नीद बिगाड़ो !
रोडरिगो : शांत होइये श्रीमन्त ! शात होइये।
ब्रेबेन्शियो : लेकिन याद रखो कि मेरी शक्ति और मेरी आत्मा इतनी निर्बल नही कि तुम्हे इसका कड़वा फल न चखा सकें !
रोडरिगो : धीरज धरिये श्रीमान्।

---

१. हिन्दी में मेंढे की मादा के लिये भेड़ के अतिरिक्त शब्द नहीं है। और इस भाव का कोई समानान्तर भी नहीं है।

ब्रैबेन्शियो : तो बताओ यह चोरी-डकैती की बकबास क्या है ? यह वेनिस है और मै किसी वियाबान मे तो नही रहता ?

रोडरिगो : परम सम्भ्रात ब्रैबेन्शियो ! मैं आपके पास बडे ही सच्चे दिल से आया हूँ। मेरी आत्मा बिल्कुल शुद्ध है।

इआगो : श्रीमान् ! आप उन लोगो मे से है जो शैतान के कहने से भगवान की भक्ति भी नही कर सकते, क्योकि आप जानते हैं कि बुराई मे से अच्छाई कभी नही निकल सकती। क्योकि हम आपकी सहायता करने आये हैं, आप हमे गुण्डा समझते हैं ? आपकी लडकी को एक मस्ताने घोडे ने घेर लिया है, आप अपनी सतान को हिनहिनाता देखना पसद करेंगे ? आप अपनी लडकियो के लिये मूर[1] घोडो का प्रबध करेंगे ?

ब्रैबेन्शियो : जरूर ही तू ऊँचा बदमाश है।

इआगो : आप ज़रूर हैं, सिनेटर जो हैं।[2]

ब्रैबेन्शियो : इसका तुझे जवाब देना होगा। रोडरिगो, तुझे तो मैं जानता हूँ।

रोडरिगो : श्रीमान् ! मै हर बात का जवाब दूंगा। लेकिन कृपया यह बतायें कि क्या आपकी भी इसमे कुछ रजामदी थी कि आपकी लाडली बेटी इस रात की अधेरी बेला मे, सिर्फ एक माँझी के साथ, न सिपाही, न रक्षक, एक किराये के टट्टू नीच माँझी के साथ[3] वासनामत्त मूर के आलिगन मे बद्ध होने के लिये गई है ? अगर ऐसा हो तो बता दें। शायद आपकी भी ऐसी कुछ इच्छा इस कार्य्य

---

१ मूर ऑथेलो भी है, अफरीका घोडा भी। उस समय के साहित्य में कितनी मुखरता का उदाहरण मिलता है !

२ यह व्यग्य है।

३ वेनिस में नहरें बहुत हैं, जिनमें नावें चलती हैं।

मे रही हो ! अगर आप इसे जानते हो तो हम अवश्य इस कोलाहल के लिये अपराधी हैं, घोर अपराधी है। लेकिन अगर आपको इस विषय मे कुछ भी ज्ञात नही है, तो जहाँ तक शिष्टाचार का मेरा ज्ञान है, मै यही कह सकता हूँ कि आप हमारे प्रति अशिष्ट रहे है। आप यह न समझे कि आप जैसे सम्भ्रात और ऊँची स्थिति के व्यक्ति से ऐसे विषय मे हम कोई मज़ाक कर जायेंगे, इतनी बुद्धि और शिष्टता हम भी जानते हैं। मै फिर दुहराता हूँ कि यदि आपकी पुत्री ने आपकी कोई आज्ञा इसमें प्राप्त नही की है, तो उसने आपके प्रति जघन्य अपराध किया है क्योकि उसने अपने कर्त्तव्य, सौदर्य्य, बुद्धि और वैभव को एक अमितव्ययी, भटकते हुए वासनामत्त पुरुष के साथ बाँध दिया है, जो आज यहाँ है कल कही और है। आप मेरी बात की सचाई की जाँच करे। अगर वह अपने कमरे मे हो, या आपके सारे घर मे कही हो, तो राज्य के विधान के अनुसार आप मेरे इस धोखा देने के प्रयत्न के लिये मुझे कड़े से कड़ा दण्ड दे, मैं तैयार हूँ।

ब्रैबेन्शियो : बत्ती जलाओ ! अरे कोई है ! मुझे रोशनी दो ! कहाँ है मेरे आदमी, उन्हें बुलाओ, क्या जो मैंने सुपना देखा था यह दुर्घटना उसकी सचाई की ओर उगली नही उठाती ! अभी से मुझे भय होता है कि यह सत्य ही है। अरे रोशनी दो, मुझे बत्ती दो ![1]

[प्रस्थान]

इआगो : अब मुझे विदा दो ! मुझे जाना है। मूर की सेवा में रहते हुए मेरे लिये यह उचित नही है कि इस प्रकार आम तरीके से मै उसके विरुद्ध खड़ा हुआ पाया जाऊँ। मैं जानता हूँ कि इस हरकत के लिये राज्य उसे कितनी भी कड़ी फटकार क्यो न दे, लेकिन राज्य का

१ बत्ती—मशाल।

भी इतना साहस नही होगा कि उसे नौकरी से निकाल दे, क्योकि इस समय उसके बिना राज्य का काम भी नही चल सकता। साइप्रस युद्ध शीघ्र ही प्रारम्भ होने वाला है, और वही उस युद्ध का सचालन करने की क्षमता रखता है। उसकी जगह ले सके ऐसा कोई धीर-वीर दिखाई नही देता ; इसलिये मैं उससे कितनी भी घृणा क्यो न करूँ, चाहे उसके पास रहने को नरक-यातना के बराबर ही क्यो न मानूं, लेकिन वर्त्तमान की विवशता के कारण बाहरी तौर पर मुझे स्वामिभक्ति और प्रेम दिखाते रहना आवश्यक है। पक्की तौर से पकडवाने के लिये तुम इन्हे सराय[1] की ओर ले चलो, मै तुम्हे वहाँ उसके साथ ही मिल जाऊँगा। अच्छा, मै चलता हूँ।

[प्रस्थान। रात का चोग़ा पहने ब्रैबेन्शियो, मशालें उठाये हुए नौकरों के साथ प्रवेश करता है।]

ब्रैबेन्शियो : कितनी जघन्य बात सत्य हो गई ! वह चली गई है। मेरे जीवन से अब आनन्द की घडियाँ भी चली ही गई समझो। मेरे लिये कटुता के अतिरिक्त अब बचा ही क्या है ? बताओ रोडरिगो ! तुमने उसे कहाँ देखा ? अरी अभागिन ! मूर के साथ, यही न कहा था तुमने ! हाय ! अब भी क्या कोई पिता होने की इच्छा करेगा ? तुम्हे कैसे पता चला कि वह डैसडेमोना ही थी ! मुझे वह ऐसा धोखा दे गई ? तुमसे उसने कुछ कहा था क्या ? और रोशनियाँ ले लो, मेरे सारे सम्बन्धियो को जगा लो ! क्या समझते हो, उन दोनो ने शादी कर ली होगी ?

रोडरिगो : मुझे तो यही लगता है।

---

१. सैगिटरी का अर्थ यहाँ सराय लिया गया है, वैसे जी० बी० हैरिसन का मत है कि इस नाम की कोई इमारत कभी भी वेनिस में रही हो, इसका प्रमाण नहीं मिलता।

ब्रेबेन्शियो : हे भगवान ! वह घर से भाग कैसे निकली ? मेरा रक्त ही मुझे धोखा दे गया ? अरे पिताओ ! आज से कभी बाहरी बातो को देखकर ही अपनी पुत्रियो पर विश्वास मत कर बैठना। रोडरिगो ! ऐसे भी तो कुछ जादू-टोने होते है न जिनसे क्वारी लडकियो की मति फेर दी जाती है, क्या तुमने ऐसी बातो के बारे मे नही पढा ?

रोडरिगो : हाँ श्रीमान्, पढा है।

ब्रेबेन्शियो : अरे मेरे भाई को जगा दो। रोडरिगो ! अच्छा होता कि तुम ही उससे विवाह कर लेते ! अरे, कुछ इधर जाओ, कुछ उधर ढूंढो। (नौकरों से कह कर फिर रोडरिगो से) तुम्हे भी कुछ पता है कि वह कहाँ होगी ? कहाँ होगा वह मूर !

रोडरिगो : शायद मै बता सकूं, लेकिन और रक्षक अपने साथ कर लीजिये और मेरे साथ चलिये।

ब्रेबेन्शियो : कृपया तुम्ही बताओ। मै हर घर को बुलाऊँगा। शायद ही मेरे बुलाए से किसी घर से लोग मेरे साथ चलने को न निकले। अरे शस्त्र बाँध लो ! और हथियार ले लो ! रात के लिये कुछ विशेप अफसरों को भी तत्पर करो। चलो मेरे अच्छे रोडरिगो ! तुम जो कष्ट मेरे लिये उठा रहे हो, तुम देखना, मै कभी तुम्हे उसका बदला चुकाये बिना यो ही नही छोड दूंगा।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[ऑथेलो, इआगो का मशालें लिये हुए अनुचरों के साथ प्रवेश]

इआगो : यद्यपि युद्ध-व्यापार मे मैंने हत्याएँ की है, लेकिन इसे मैं अपनी चेतना का सार तत्त्व मानता हूँ कि कभी ठडे दिल से खून न किया

बारह दूत आ चुके हैं और नीद में से जगा-जगा कर सिनेट के कई सदस्य ड्यूक के निवासस्थान पर एकत्र भी कर लिये गये हैं। आपकी उपस्थिति की अत्यन्त आवश्यकता है। जब आप अपने निवासस्थान पर नही मिले तब सिनेट ने तीन दल बना कर लोगो को आपको भिन्न-भिन्न स्थानो मे खोजने को रवाना किये हैं।

ऑथेलो अच्छा हुआ तुम मुझे मिल गये। मै जरा घर मे एक बात कह कर अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

[प्रस्थान]

कैसियो ऐन्शेन्ट![1] जनरल यहाँ क्या कर रहे हैं!

इआगो मानो न मानो, आज जनरल ने बडी दौलत से भरा जहाज़ जीता है, समुद्र का नही, धरती का। यदि यह इनाम कानूनी मान लिया गया तो समझ लो कि हमेशा के लिये खज़ाना हाथ आ गया।

कैसियो मैं समझा नही।

इआगो जनरल ने विवाह कर लिया है।

कैसियो : किससे ?

इआगो शादी की है

[ऑथेलो का पुनरागमन। इआगो सहसा वह वाक्य छोड कर]

इआगो चलो कैप्टन! तुम चलने को तैयार हो ?

ऑथेलो हाँ मैं संग चल सकता हूँ।

कैसियो शायद सैनिको का दूसरा दल आपको खोजता हुआ आ पहुँचा है।

[ब्रैबेन्शियो, रोडरिगो, अन्य अफसरों के साथ मशालें लिये आते हैं।]

---

१. पद का नाम। लेफ्टिनेंट से नीचे इआगो का पद है। शब्दार्थ है पुरातन।

इआगो : यह तो ब्रैबेन्शियो है। जनरल ! सावधान रहे। इनका उद्देश्य अच्छा नही है।

ऑथेलो ठहरो ! रुक जाओ !

रोडरिगो . श्रीमान्, यह मूर ही है।

ब्रैबेन्शियो . उस चोर का सर्वनाश हो !

[दोनों ओर से तलवारें खिचती हैं।]

इआगो इधर वढिये श्रीमान् रोडरिगो ! आपसे मेरे दो-दो हाथ हो जाये, मै आपके लिये तैयार हूँ।

ऑथेलो : अपनी चमचमाती तलवारो को म्यान में रख लीजिये, कही ओस के कारण उनमे ज़ग न लग जाये। सम्मानित श्रीमान् ! आपके शस्त्रो से कही अधिक सम्मान पाने की अधिकारिणी आपकी आयु है !

ब्रैबेन्शियो . ओ धूर्त चोर ! कहाँ छिपा दी है तूने मेरी पुत्री ? ओ अभिशप्त ! अवश्य तूने उस पर जादू कर दिया है ! यदि उस पर कोई इन्द्रजाल न डाला गया होता तो कल्पना के किसी छोर को पकड कर भी यह विचार नही आता कि डैसडेमोना जैसी सुदरी, विदुषी, और प्रसन्नचित्त लड़की, कभी ऐसा काम कर गुजरती ! जिसने अपनी जाति के अनेक घने घुंघराले केशो वाले धनी और सपन्न तरुणो से विवाह करना अस्वीकार कर दिया, वह क्या कभी जगहँसाई कराने को, अपने अभिभावको का सरक्षण छोड़ कर, तुझ जैसे काले भुजग की भुजाओ मे गिरने को आ जाती ? तुझे देख कर उसे आनंद तो दूर, उल्टे भय ही होता। सारा ससार देखे क्या यह प्रगट बात असम्भव हो सकती है कि तूने ही अपने कुटिल जादू से उसकी चेतना का हरण कर लिया है ? तूने जड़ी-बूटियो और धातुओ के धूर्त्त प्रयोग से उस कुमारी की वुद्धि

बारह दूत आ चुके हैं और नीद मे से जगा-जगा कर सिनेट के कई सदस्य ड्यूक के निवासस्थान पर एकत्र भी कर लिये गये हैं। आपकी उपस्थिति की अत्यन्त आवश्यकता है। जब आप अपने निवासस्थान पर नही मिले तब सिनेट ने तीन दल बना कर लोगो को आपको भिन्न-भिन्न स्थानो मे खोजने को रवाना किये है।

ऑथेलो अच्छा हुआ तुम मुझे मिल गये। मैं ज़रा घर मे एक बात कह कर अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

[प्रस्थान]

कैसियो ऐन्शेन्ट ![1] जनरल यहाँ क्या कर रहे हैं!

इआगो मानो न मानो, आज जनरल ने बडी दौलत से भरा जहाज़ जीता है, समुद्र का नही, धरती का। यदि यह इनाम कानूनी मान लिया गया तो समझ लो कि हमेशा के लिये खज़ाना हाथ आ गया।

कैसियो मैं समझा नही।

इआगो जनरल ने विवाह कर लिया है।

कैसियो : किससे ?

इआगो शादी की है

[ऑथेलो का पुनरागमन। इआगो सहसा वह वाक्य छोड कर]

इआगो चलो कैप्टन ! तुम चलने को तैयार हो ?

ऑथेलो हाँ मैं सग चल सकता हूँ।

कैसियो शायद सैनिको का दूसरा दल आपको खोजता हुआ आ पहुँचा है।

[ब्रैबेन्शियो, रोडरिगो, अन्य अफसरों के साथ मशालें लिये आते हैं।]

---

१. पद का नाम। लेफ्टिनेंट से नीचे इआगो का पद है। शब्दार्थ है पुरातन।

इआगो . यह तो ब्रैबेन्शियो है। जनरल! सावधान रहें। इनका उद्देश्य अच्छा नही है।

ऑथेलो · ठहरो! रुक जाओ!

रोडरिगो श्रीमान्, यह मूर ही है।

ब्रैबेन्शियो . उस चोर का सर्वनाश हो!

[दोनों ओर से तलवारें खिचती हैं।]

इआगो . इधर बढिये श्रीमान् रोडरिगो! आपसे मेरे दो-दो हाथ हो जाये, मै आपके लिये तैयार हूँ।

ऑथेलो : अपनी चमचमाती तलवारों को म्यान मे रख लीजिये, कही ओस के कारण उनमे ज़ग न लग जाये। सम्मानित श्रीमान्! आपके शस्त्रो से कही अधिक सम्मान पाने की अधिकारिणी आपकी आयु है!

ब्रैबेन्शियो ओ धूर्त चोर! कहाँ छिपा दी है तूने मेरी पुत्री? ओ अभिशप्त! अवश्य तूने उस पर जादू कर दिया है! यदि उस पर कोई इन्द्रजाल न डाला गया होता तो कल्पना के किसी छोर को पकड़ कर भी यह विचार नही आता कि डैसडेमोना जैसी सुदरी, विदुषी, और प्रसन्नचित्त लडकी, कभी ऐसा काम कर गुज़रती! जिसने अपनी जाति के अनेक घने घुँघराले केशो वाले धनी और सपन्न तरुणो से विवाह करना अस्वीकार कर दिया, वह क्या कभी जगहँसाई कराने को, अपने अभिभावको का सरक्षण छोड़ कर, तुझ जैसे काले भुजग की भुजाओ मे गिरने को आ जाती? तुझे देख कर उसे आनंद तो दूर, उल्टे भय ही होता। सारा ससार देखे क्या यह प्रगट बात असम्भव हो सकती है कि तूने ही अपने कुटिल जादू से उसकी चेतना का हरण कर लिया है? तूने जडी-बूटियो और धातुओ के धूर्त्त प्रयोग से उस कुमारी की बुद्धि

नष्ट करके उसे पराजित कर दिया है। मै इस मामले को न्याय के सामने ले जाऊँगा। तू जादू और तत्र-मत्र करने का अपराधी है। मैं तुझ पर निषिद्ध क्रियाओ और जघन्य कार्य्यों मे रत रहने का अभियोग लगाता हूँ, जो धर्म्म-विरुद्ध हैं और समाज के लिये हानिकारक हैं। इसको गिरफ्तार कर लो और यदि यह विरोध करता है, तो उससे स्वय ही हानि उठायेगा, उसका उत्तरदायित्व हम पर नही होगा। पकड लो इसे।

आॅथेलो : हाथ मत उठाओ, न मेरे रक्षक लडें, न मुझ पर आक्रमण करने वाले। यदि युद्ध ही करना होता तो बिना किसी के भडकाने से भी मैं युद्ध कर सकता था। आप मुझे अपने इस अभियोग का उत्तर देने के लिये कहाँ ले जाना चाहते हैं ?

ब्रैबेन्शियो : जब तक कचहरी नही लगती, तब तक के लिये हम तुझे वदीगृह मे डाल देना चाहते हैं।

आॅथेलो : मान लो मैं बदी भी हो गया, लेकिन उससे ड्यूक को सतोष कैसे होगा जिनके भेजे हुए आदमी इस समय भी मुझे घेरे खडे हैं, ताकि राज्य के एक वहुत ही महत्वपूर्ण कार्य्य के लिये मुझे अपने साथ ले जा सकें।

अफसर : परम आदरणीय श्रीमन्त ! यह नितात सत्य है। ड्यूक अपनी काउसिल (परिषद्) के साथ हैं और उन्होने जनरल को तुरत ही वुलवाया है।

ब्रैबेन्शियो क्या कहा ? ड्यूक परिषद् के साथ ! रात के इस समय विचारो मे डूबे हुए हैं ? वहुत अच्छा ! चलो। इसे वही ले चलो। मै अभी अपने मामले को वही तय कराऊँगा। मेरा मसला कोई मामूली और वेकार मसला नही है। ड्यूक और सिनेट के सदस्य मेरे प्रति की गई वुराई को अपने साथ की हुई वुराई की तरह ही

समझेंगे । अगर ऐसी हरकतो के लिये सजाएँ नही दी गई तो विधर्मी और गुलाम हमारे राजनीतिज्ञ और शासक ही जो वन वैठेगे ।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[ड्यूक और सिनेट के सदस्य एक मेज़ के चारों ओर बैठे हैं। (सामने नहीं) मेज़ पर वत्तियाँ हैं। (पास में) सेवक हैं।]

ड्यूक इन सवादो मे कोई गुरुत्त्व नही है कि इन्हे कोई महत्त्व दिया जाये ।

सिनेट का एक सदस्य . ठीक कहते हैं। यह तो एक दूसरे से मेल भी नही खाते । इन पत्रो मे जो खबरे मुझे मिली है, उनके हिसाव से शत्रु की शक्ति एक सौ सात जहाज़ो की है।

ड्यूक और जो सूचना मुझे मिली है उसके अनुसार शत्रु के पास १४० जहाज़ हैं।

सिनेट का दूसरा सदस्य यह लीजिये । मेरे पास २०० जहाज़ों की खवर है। हालांकि विगतवार से देखने पर यह खवरे एक दूसरी से पूरी तरह नही मिलती, लेकिन ऐसा भेद होना कोई आश्चर्य्य का विपय नही है। आखिर तो यह सारी ख़वरें अदाज़ नही हैं फिर भी एक वात सच है और वह यह कि साइप्रस की तरफ तुर्की जहाज़ी वेडा वढता आ रहा है।

ड्यूक : हाँ, ध्यान से देखने पर यह विल्कुल संभाव्य ही प्रतीत होता है। सख्या की गलती हो सकती है, लेकिन सवादो की मुख्य वात, मुझे डर है, कही सच ही न निकल आये ?

जहाज़ी[1] (भीतर से) क्या हुआ ? क्या हुआ ? अरे क्या है !

[जहाज़ी का प्रवेश]

अफसर यह लीजिये ! जहाज़ो से एक दूत आया है ।

ड्यूक क्या बात है ?

जहाज़ी तुर्की बेडा रोह्ड्स की ओर बढ रहा है, इसलिये श्रीमान् एंजिलो ने मुझे राज्य के अधिकारियो को सूचना देने की आज्ञा दी है ।

ड्यूक साइप्रस की जगह रोह्ड्स ! यहाँ तो गतव्य ही बदल गया। इसके विपय मे आप लोगो की क्या राय है ?

सिनेट का एक सदस्य : यह सवाद सत्य नही हो सकता। जो हो, इसके औचित्य पर विचार कर लिया जाये। यह तो केवल एक छलावा दिखाई देता है ताकि हम भ्रम मे पड जायें और जब कि हमे साइप्रस की रक्षा का प्रबध करना चाहिये, हम रोह्ड्स की ओर ध्यान बँटा बैठे। तुर्कों के लिये साइप्रस का महत्त्व देखते हुए और यह भी कि उनके लिये रोह्ड्स की तुलना मे साइप्रस को जीतना आसान होगा, क्योकि उसमे न वैसे कोई प्राकृतिक लाभ ही हैं, न उसकी भाँति कोई रक्षा का ही अच्छा प्रबध है, हमे इन सब बातो पर ध्यान देना चाहिये और यह नही समझना चाहिये कि तुर्क बेवकूफ हैं, उनमे योग्यता नही है जो वे उसे अत के लिये त्याग देंगे जो कि वास्तव मे अपना पहला महत्त्व रखता है, न यही मानना चाहिये कि एक आसान और लाभदायक योजना को छोड कर वे ऐसे कार्य्य पर उतारू होगे जिसमे खतरा तो है ही साथ ही जिसमे हानि की भी सभावना है ।

---

१ सेलर—खलासी—या मांझी ।

ड्यूक : नही, किसी भी हालत मे तुर्क रोह्ड्स की ओर उन्मुख नही लगता।

[एक दूत का प्रवेश]

दूत : सम्मानित और आदरणीय सज्जनो! श्रीमतो! रोह्ड्स की ओर बढते हुए तुर्कों से एक जहाजी बेडा और मिल गया है।

सिनेट का एक सदस्य : अच्छा! यही तो मैं भी सोचता था। संख्या में कितने जहाज़ होगे ?

दूत : तीस जहाज़ है। अब उन्होने अपना छलावा छोड दिया है, और रास्ता बदल कर वे स्पष्टतया ही साइप्रस की ओर बढ रहे हैं। आपके वीर और विश्वसनीय पदाधिकारी श्रीमान् मोनटानो ने यह संवाद अन्यत विनम्रता के साथ भेजा है और उनकी प्रार्थना है कि इस पर पूर्णतया विश्वास किया जाये।

ड्यूक तब तो यह निश्चित हो गया कि शत्रु साइप्रस की ओर आ रहा है। क्या मार्कस लुक्किकोस नगर मे उपस्थित नही है ?

सिनेट का एक सदस्य : वे इस समय फ़्लोरेन्स मे है।

ड्यूक . कृपया हमारी ओर से उन्हे पत्र लिखे और शीघ्रातिशीघ्र डाक लगाकर हमारा सवाद भेजे।

सिनेट का एक सदस्य यह लीजिये ब्रैबेन्शियो और महावीर मूर आ रहे हैं।

[ब्रैबेन्शियो, ऑथेलो, कैसियो, इआगो, रोडरिगो, और अफ़सरों का प्रवेश]

ड्यूक : महावीर ऑथेलो, राज्य के आम दुश्मन तुर्कों के खिलाफ हमे तुम्हारी सेवाएँ फौरन हासिल करनी चाहिये। मै आपको देख नही पाया, स्वागत श्रीमान् ब्रैबेन्शियो, आज रात आपकी अमूल्य राय से हम अभी तक वचित थे, अब आप भी सहायता करे।

ब्रेबेन्शियो वही तो मैं आपसे चाहता हूँ श्रीमानो के श्रीमत, मुझे क्षमा करे। न तो मेरी स्थिति ने ही, न राज्यकार्य्य मे से किसी वात ने आज की रात मुझे नीद मे से जगाया है। राज्य के इस आम खतरे ने भी मुझमे दिलचस्पी पैदा नही की है। क्योकि मेरा अपना दुख ऐसी भीषरण बाढ की तरह है जो सारे दुखो को निगलने की सामर्थ्य रखता है, किंतु स्वय अभी तक वैसा ही प्रचड है।

ड्यूक : क्यो ? क्या हुआ।

ब्रेबेन्शियो मेरी पुत्री ! आह मेरी पुत्री !

सिनेट के सदस्य क्या वह नही रही ? (मर गई ?)

ब्रेबेन्शियो हाँ मेरे लिये वह मर चुकी है। उसे धोखा दिया गया है। मुझसे चुरा लिया गया है, नीम-हकीमो से खरीदी गई जडी-बूटियों और जादू से उसकी बुद्धि हर ली गई है। क्योकि कोई भी साधा-रण बुद्धि वाला भी जिसकी कि बुद्धि अपाहिज, अधी और अभाव-ग्रस्त नही है, बिना जादू के जाल मे फँसे, ऐसी भयकर भूल नहीं कर सकता।

ड्यूक कौन है वह आदमी जिसने गैरकानूनी तरीके से तुम्हारी पुत्री को विवेक से और तुमको तुम्हारी पुत्री से अलग किया है ? कानून के कठोर हाथ को तो आप स्वय समझकर लागू करने का अधिकार रखते हैं, भले ही दण्ड पाने वाला व्यक्ति मेरा पुत्र ही क्यो न हो ?

ब्रेबेन्शियो आह ! श्रीमत ड्यूक का मै सादर अभिवादन करता हूँ। यह है वह आदमी, यही है वह मूर, जिसे आपने विशेप आज्ञा देकर राज्यकार्य्य के सम्बन्ध मे यहाँ बुलाया है।

सब हमे इसके लिये खेद है।

ड्यूक तुम्हे इस वारे मे क्या कहना है ?

ब्रैबेन्शियो . कुछ नही, सिवाय इसके कि जो मैने कहा है उसे स्वीकार कर ले।

ऑथेलो . सम्भ्रात, शक्तिशाली और विचक्षण श्रीमन्तो ! आप मेरे कुलीन, विश्वसनीय और अच्छे स्वामी है। यह बिल्कुल सत्य है कि मैंने इस वृद्ध महोदय की पुत्री को अपने पास रख लिया है। हाँ, मैंने उससे विवाह किया है यह भी सत्य है। यही मेरा एकमात्र अपराध है। मेरी वाणी कठोर है, मै मुखर हूँ, और प्रेम से मीठे बोल बोलना मुझे नही आता, क्योकि सात वर्ष की आयु से केवल नौ मास पहले तक मेरी भुजाओ ने अपना सबसे अच्छा समय शिविरो से ढँकी हुई युद्धभूमियो में बिताया है। इस विशाल ससार के बारे में, युद्ध और युद्ध की लोमहर्षक घटनाओं के अतिरिक्त, संभवत मै कुछ भी जानकारी नही रखता, जिस पर बात कर सकूँ! अपनी रक्षा करने के प्रयत्न मे मुझे अधिक सफलता की आशा नही है। किन्तु आपने मुझे दया करके आज्ञा दी है, तो मै बिल्कुल स्पष्टतया बिना नमक-मिर्च लगाये अपनी सारी प्रेम-कथा सुनाऊँगा, ताकि आप स्वयं जान सके कि किस जादू, किस जडी-बूटी के प्रभाव से, किस कौशल से, इनकी पुत्री का प्रेम प्राप्त किया है, क्योकि मुझ पर यही तो अभियोग लगाया गया है !

ब्रैबेन्शियो वह एक लजीली कुमारी है, शांत उसका चित्त है, कभी उसमे कृत्रिमता नही झलकती, लाज स्वयं उस पर लजाती है। क्या यह विश्वास किया जा सकता है कि वह अपनी प्रकृति के विरुद्ध, अपने देश, अपनी आयु, अपनी जाति की परंपरा, लोक-मर्यादा का भय, सब कुछ की उपेक्षा करके ऐसे व्यक्ति से प्रेम करेगी, जिसकी कि सूरत देख कर उसके हृदय मे भय उत्पन्न होने की संभावना अधिक प्रतीत होती है ? डैसडेमोना जैसी पूर्णता

अपना स्वभाव भूल कर प्रकृति के विरुद्ध भी ऐसा कर सकती है—ऐसा निर्णय देने वाला न्याय स्वय अपूर्ण ही कहलायेगा। ऐसी अस्वाभाविक वात क्यो हुई, यह जानने के लिये अवश्य इसे स्वीकार करना पडेगा कि इस विषय मे कोई न कोई जघन्य नारकीय तरीका अवश्य अपनाया गया होगा, वर्ना ऐसा हो कैसे सकता था ? इसलिये मै आपके सामने फिर सशक्त शब्दो मे दुहराता हूँ कि अवश्य उस पर किसी जादू की वस्तु का प्रयोग किया गया है और उसके रक्त पर गहरा प्रभाव पडा है, अवश्य ही कोई जडी-बूटी है जिसे तात्रिक ढग से सिद्ध किया गया होगा।

ड्यूक · लेकिन विश्वासपूर्वक दुहरा देना तो प्रमाण नही वन जाता। जब तक और ठोस और गहरे प्रमाण इन सभावनाओ और योजनाओ के विषय मे प्रस्तुत नही किये जाते, मै कैसे इनसे विश्वस्त हो सकता हूँ ?

सिनेट का एक सदस्य कहो आॅथेलो! बताओ! क्या तुमने इस कुमारी को किसी कुटिल और अनुचित रीति से अपने वश मे किया है या जैसी कि दो व्यक्तियो मे प्रेम-सभाषणो में प्रार्थनाएँ होती हैं, मीठी वाते होती हैं, उनसे उसे प्रभावित कर लिया है ?

आॅथेलो मै प्रार्थना करता हूँ कि सैगिटरी से डैसडेमोना को यहाँ वुलवा लिया जाये। और अपने पिता की उपस्थिति मे वही मेरे विषय मे वताये। यदि अपनी वात मे वह कहे कि मैंने किसी अनुचित रीति को अपनाया है तो न केवल यह विश्वास, यह पद, जो आपने मुझे दिये हैं, मुझसे ले लिये जाये, वरन् आपका भीषण दण्ड मुझे जीवन से ही वञ्चित कर दे।

ड्यूक डैसडेमोना को यहाँ वुलवाया जाये।

[दो या तीन व्यक्तियों का प्रस्थान]

ऑथेलो · एन्शेन्ट ! (इआगो) तुम उन्हें रास्ता बताओ, क्योकि तुम इन सबसे अधिक परिचित हो · ··

[इआगो का प्रस्थान]

और जब तक वह आती है, जिस ईमानदारी से मै परमात्मा के सामने अपने अपराधो को स्वीकार करता हूँ, उसी भाँति आपके गंभीर विचारार्थ, बताऊँगा कि मैंने किन उपायो से उस सुन्दरी के प्रेम को प्राप्त किया, किस प्रकार वह मेरी बनी ।

ड्यूक · ठीक है ऑथेलो ! बता सकते हो !

ऑथेलो : उसके पिता मुझसे स्नेह करते थे, और बहुधा अपने यहाँ निमंत्रित करते थे। किस प्रकार मेरा पवित्र जीवन व्यतीत हुआ यह बार-बार पूछा करते थे। वे विभिन्न युद्ध, घेरे, और दुस्साहस के वर्णन सुनते थे। वे सब जो मैंने जीवन मे स्वयं देखे थे; मै अपने लड़कपन से अब तक की कहानियाँ उन्हे सुनाया करता था। और इसी मे कभी मै उन भयानक खतरों की बात सुनाता जिनमे से बाल-बाल बचा था। कभी भूमि और समुद्र के वक्ष पर किये गये दुस्साहसो को सुनाता। विकराल घेरो मे से जीवन-रक्षा के लोमहर्षक वर्णन सुनाता कि कब मै बंदी बना, किस प्रकार वहाँ से छूटा और इन यात्राओ मे मुझ पर क्या कुछ गुजरा। मुझे तो गुलाम बना कर बेचा गया था। और इन्ही यात्रा-विवरणों में बहुधा मुझे विशाल गुहाओं, रेगिस्तानो, अनगढ चट्टानो, खानों और गगनचुम्बी पर्वतो के वर्णन भी सुनाने पडते। वे नरभक्षी जो एक दूसरे को खाते थे, और वे मनुष्य जिनके सिर उनके वक्ष-स्थल मे से उगते थे, कभी-कभी मेरा विषय बन जाते। डैसडेमोना को इन बातो मे बड़ी रुचि थी। वह बड़े ध्यान से सुनती थी। और जब कभी घरेलू धंधो के लिये बुला भी ली जाती थी तो

जहाँ तक हो सके जल्दी से जल्दी काम समाप्त करके आने की चेष्टा करती और मेरे जीवन की कथा को बडे ध्यान से सुनती थी। अपने मे उसकी इतनी दिलचस्पी देखकर एक बार मैंने ऐसा सुअवसर पाया जब वह मेरी जीवन-गाथा सुनने को तत्पर थी। उस समय उसने मुझसे प्रार्थना की कि मै उसे अपनी पूरी जीवन-कथा सुनाऊँ, क्योकि अभी तक वह जहाँ-तहाँ से ही सुन पाई थी, सो भी पूरा ध्यान देकर नही। मैंने स्वीकार कर लिया और तब अपने तारुण्य मे झेले हुए कुछ दुखद घटनाएँ सुनाई। वह रोने लगी। जव मेरी कथा समाप्त हुई, उसके मुख से लबी आहें निकली, मानो वे ही मेरे लिये उपहार थी। उसने अत्यत गद्गद स्वर से स्वीकार किया कि मेरी कथा अत्यत रोचक, विचित्र ही नही, वरन् अद्भुत रूप से करुण भी थी। उसने कहा, अच्छा होता वह उसे नही सुनती, और फिर भी वह यही चाहती थी कि ऐसा व्यक्ति ही परमात्मा की असीम कृपा से उसका पति हो। उसने मुझे हृदय से धन्यवाद दिया और आभार स्वीकार करके कहा कि यदि मेरा कोई मित्र ही उसे प्यार करता हो तो मै मित्र को ही यह कहानियाँ सुना दूं, और यह कथाएँ ही उसका प्रेम जीतने के लिये काफी थी। इससे मुझे प्रगट रूप से इगित मिल गया और मैंने उसके सामने प्रेम प्रगट कर दिया। स्पष्ट ही जो खतरे मैने उठाये थे, उनके कारण वह मुझसे प्रेम करती थी और में इस भावना से पराभूत हो गया कि वह मुझ पर करुणा करती थी। यही है वह जादू, जिसका मैंने उस पर प्रयोग किया था। यह लीजिये, डैसडेमोना आ गई है, जो कुछ मैने कहा है, वही उसका समर्थन करेगी।

[डैसडेमोना, इआगो और सेवकों का प्रवेश]

ड्यूक ऐसी कथा तो निश्चित रूप से मेरी लडकी को भी मोहित कर लेती श्रेष्ठ ब्रैबेन्शियो ! अब तो जहाँ तक हो इस उलझे हुए मामले को सुलझाइये ! खाली हाथो से न लडकर इसान अपने टूटे हथियारो का ही प्रयोग करते है ।

ब्रैबेन्शियो मै आपसे प्रार्थना करता हूँ कि उसकी बात भी सुन ले । यदि वह स्वीकार कर लेती है कि इस प्रेम को उकसाने मे उसका आधा हाथ रहा है, और तब यदि मै इस पुरुष को तनिक भी दोष दूँ, तो मेरा सर्वनाश हो जाये। आ मेरी सरलहृदये पुत्री ! इस कुलीन सभा मे, बता तो सही, ऐसा कौन है जिसकी आज्ञा का पालन करना तेरा कर्त्तव्य है ?

डैसडेमोना . आदरणीय पिता ! मेरा कर्त्तव्य विभाजित हो गया है । यह शिक्षा जो मुझे एकाग्रचित्त से आपके प्रति श्रद्धा करना सिखाती है और यह जीवन, इनके लिये मै आपका आभार मानती हूँ । इसलिये आपकी पुत्री के रूप मे आपकी आज्ञा का पालन मेरा कर्त्तव्य है । किंतु इस ओर मेरे पति है, और अपने पिता की तुलना में मेरी माता ने आपके अर्थात् अपने पति के प्रति जो कर्त्तव्य निबाहा है, पिता पर पति को अन्यतम स्थान दिया है, वही अपने पति मूर के प्रति निबाहना मै अपना कर्त्तव्य समझती हूँ, क्योंकि वह उनका भाग है ।

ब्रैबेन्शियो : भगवान तुम्हारा भला करे ! आज से मेरे-तुम्हारे संबंध समाप्त ! (ड्यूक से) आप अपने राज्यकार्य्य की ओर ध्यान दे । पिता होने से तो अच्छा होता कि मै किसी को गोद ले लेता । सुनो ऑथेलो ! डैसडेमोना को तुमसे अलग रखने की मै प्राणपण चेष्टा करता, किन्तु तुम उसे अब जीत चुके हो तो मै भी अब अपने हृदय से कहता हूँ कि मै उसे तुम्हे देता हूँ । पुत्री ! डैसडेमोना ! तुम्हारा

चरित्र देख कर मैं प्रसन्न हूँ कि मेरे और कोई सतान नही है, अन्यथा तुम्हारा यह आज्ञा भग करना मुझे उनके प्रति कठोर और अत्याचारी बना देता। मैं उन्हे दारुण बधनो मे जकड देता। हो चुका ड्यूक श्रेष्ठ ! हो चुका, मेरा व्यक्तिगत कार्य्य हो चुका।

ड्यूक जो कुछ आपने स्वय कहा, उसका समर्थन करते हुए, मैं भी अपना निर्णय देना चाहता हूँ और इन प्रेमियो से आपका समझौता कराना चाहता हूँ। जिसका इलाज ही नही, उसे तो अच्छा हुआ-सा ही समझना चाहिये, क्योकि तब हम उसका निकृष्टतम रूप देख लेते हैं और फिर किसी मिथ्या धारणा के आधीन नही रहते। जो दुर्भाग्य आ गया है, उसके लिये खेद करना तो वास्तव मे व्यर्थ होगा। यदि बुराई ठीक नही हो पाती, तो उसके परिणाम मे और भी अधिक दाह हृदय मे वस जाता है। किंतु दुर्भाग्य की मार सहते समय यदि हम धैर्य्य धारण कर लेते हैं और केवल मुस्कराते भी रहते हैं तो अपने सुखो के अपहरण करने वाले की उस शक्ति को हर लेते हैं जो हमे कुचल देती है। किन्तु जो उसके लिये बिसूरने बैठ जाता है, वह स्वय अपने को लुटा देता है।

ब्रेबेन्शियो · जिस तर्क से आप मुझे सात्वना दे रहे है, उसे ही राज्य-कार्य्य पर भी लागू कर दीजिये। मान लीजिये, तुर्क हमसे साइप्रस छीन लेते हैं तो हमे मुस्कराना चाहिये और तब शायद हमे इस हानि का भी अनुभव नही होगा। जिस पर स्वय नही आ पड़ती वह तो पर उपदेश मे कुशल ही होता है। किंतु जो स्वय भोगी होता है उसे दुख के साथ इन सिद्धात-वाक्यो को भी सहन करना पडता है, क्योकि दुख के निवारण के लिये धैर्य्य से भिक्षा मांगनी पडती है, जो स्वय ही अत्यत दरिद्र होता है। यह वचन तभी तक ठीक हैं जब तक व्यथा अपनी नही होती, धैर्य्य पर बात करना और

टीस का अनुभव न करना सहज है, किंतु यह मर्म पर दुधारे की भांति चलने वाले शब्द, मीठेभी होते हैं, कडवे भी, यह तो अवसर की वात है। किंतु शब्द अंततोगत्वा शब्द ही होते है, मैने कभी नही सुना कि घायल हृदय पर कभी श्रवण-मार्ग से कोई प्रभाव पडा हो। मै आपसे सविनय यही प्रार्थना करता हूँ कि आप अपने राज्यकार्य्य मे लगे और अपने कार्य्य को आगे चलाये।

ड्यूक · तुर्क पूर्ण सैन्य सज्जा और तत्परता के साथ साइप्रस की ओर वढ रहे हैं। ऑथेलो ! तुम परिस्थिति के पूर्ण ज्ञाता हो। यद्यपि हमारे पास ऐसा व्यक्ति है जो इस कर्त्तव्य का पूर्णतया निर्वाह कर सकता है, किंतु फिर भी जनमत जो कि वहुत वडा महत्त्व रखता है, तुम्हारी ही ओर अधिक वोल रहा है और तुम्हे ही अधिक विश्वसनीय और योग्य मानता है। इसलिये आवश्यक है कि अपने आनद की इस वेला मे तुम अपने को नियन्त्रित करो और इस कठोर और घोर यात्रा के लिये तत्पर हो जाओ !

ऑथेलो : आदरणीय सिनेट के सदस्यगण ! सुने ! मैं युद्ध-जीवन का इतना अधिक आदी हो गया हूँ कि सग्राम-भूमि का कठोर और दारुण विस्तार मेरे लिये फूलो की शैय्या के समान हो गया है। यह स्वीकार करना मेरे लिये सहज है कि मै दुख और कठोरता के पथ पर तुरत पाव रख देता हूँ। इसलिये मै तुर्कों से युद्ध करने को तत्पर हूँ, मै इस तुमुल सग्राम का नेतृत्व करने को उद्यत हूँ, किंतु चाहता हूँ कि मेरी पत्नी के लिये उचित प्रवध कर दिया जाये, और उसकी स्थिति और पद के अनुकूल स्थान, धन, तथा अन्य वस्तुओं का प्रवन्ध हो जाये।

ड्यूक · क्यो ? वह अपने पिता के पास रह सकती है।

ब्रैवेन्शियो : नही, मैं उसे नही रखूंगा।

ग्रॉथेलो न मैं ही ।

डैसडेमोना न मै ही वहाँ रहूँगी कि उनकी ग्राँख के सामने वनी रहकर काँटे-सी गडा करूँ । परमदयालु ड्यूक ! मेरी दयनीय प्रार्थना पर ध्यान दीजिये । मैं तो सीधी-सादी ग्रौर ग्रचतुर हूँ । ग्रापकी वाणी मेरी सहायता करने का ग्राश्वासन दे !

ड्यूक क्या चाहती हो तुम डैसडेमोना ?

डैसडेमोना मूर के साथ जीवन व्यतीत करने के लिये ही तो मैने उनसे प्रेम किया है । जो विद्रोह मैने किया है ग्रौर जिस प्रकार मैंने ग्रापत्तियो का सामना किया है, मैं ससार मे घोषणा कर सकती हूँ कि मै उन पर पूर्णतया ग्रासक्त हूँ ग्रौर उनकी वीरता तथा ग्रोज गुण ने ही मुझे इतना प्रभावित किया है । वे युद्ध मे चले जाये ग्रौर मैं घर पर छूट जाऊँ, तो जिस लिये मैंने उनसे प्रेम किया, वह मूल कारण ही झुठा दिया जायेगा । उनकी ग्रनुपस्थिति मुझे ग्रत्यत उदास ग्रौर विरक्त वना देगी । कृपया मुझे उनके साथ जाने की ग्राज्ञा दे ।

ग्रॉथेलो स्वामी ! डैसडेमोना की प्रार्थना को निष्फल नही करे । ईश्वर साक्षी है कि मैं यह दया इसलिये नही चाहता कि वासना मेरे मुख मे वोल रही है । यौवन के वे प्रारभिक उन्माद ग्रव मेरे लिये ग्राकर्पक नही रहे हैं क्योकि मैं उफान की सीमा से ग्रागे ग्रा गया हूँ । केवल मेरी पत्नी को इसका ग्रानद प्राप्त होगा, इसलिये मै ग्रापसे करुणा ग्रौर दया की भिक्षा चाहता हूँ । ईश्वर न करे, ग्राप निश्चित ही रहे, उसके साथ होने के कारण ग्राप मुझे राज्यकार्य्य के प्रति उदासीनता दिखाते हुए नही पायेगे । यदि कभी चचल कामदेव की चपलता मेरी दृष्टि से कर्त्तव्य-पथ को धुधला भी कर दे, ग्रौर मैं लोल वासनाग्रो के ग्रावर्त्त मे पड जाऊँ, ग्रौर मेरी शुद्ध

चेतना, मेरी वुद्धि मलिन पड जाये तो मेरा शिरस्त्राण कुलवधुओं के हाथ में एक पात्र मात्र बनकर रह जाये और लोक मे विद्यमान समस्त विपदाएँ और अपमान मेरे यश पर आक्रमण करके मेरा सर्वनाश कर दे।

ड्यूक तव तुम उसे ले जाओ या छोड जाओ तुम्हारा व्यक्तिगत विषय ही रहे। कार्य्य वहुत गभीर है और तुरंत कर्त्तव्य चाहता है, उस पर अपना सारा ध्यान केन्द्रित कर दो। कार्य्य पुकारता है, गति और वेग को उत्तर देना होगा।

सिनेट का सदस्य आप आज रात ही को प्रयाण करे।

आॅथेलो : जैसी आज्ञा हो। अवश्य।

ड्यूक : हम कल प्रात.काल नौ वजे फिर मिलेगे। आॅथेलो अपना कोई आदमी हमारे पास छोड जाओ, वह हमारी लिखित आज्ञा तथा तुम्हारे सम्मानित पद के अनुरूप अन्य आवश्यक वस्तुएँ ले जायेगा।

आॅथेलो . जैसी आज्ञा महाराज ! मेरा ऐन्शेन्ट वडा ईमानदार आदमी है, और वडा ठोस भी है। मै अपनी पत्नी को उसके सरक्षण मे छोडूंगा। मेरे जाने के वाद जो भी आवश्यक वस्तुएँ आप भेजना चाहे उन्हे साथ लेकर वह मेरी पत्नी को साइप्रस पहुँचा देगा।

ड्यूक : यही सही। गुडनाइट ! सवको गुडनाइट ! और आदरणीय श्रीमान् (**ब्रैवेनशियो से**) यदि अच्छाई एक ऐसी वस्तु है जिसमे लोक का समस्त सौंदर्य्य निहित होता है, तव आपका दामाद भी सुन्दर है, उसका कालापन अखरता नही, क्योकि वह सवको प्रसन्न करता है।

सिनेट का सदस्य : विदा ! वीर मूर ! डैसडेमोना को कोई कष्ट न देना !

ब्रैवेन्शियो मूर ! यदि तुम्हारे आँखे है तो उसे अवश्य देखना, उसने अपने पिता को धोखा दिया है, कौन जाने वह तुम्हे धोखा न देगी ?

ऑथेलो उसके प्रेम पर मेरा जीवन न्यौछावर है। मेरे अच्छे इआगो ! मै अपनी डैसडेमोना तुम्हारे पास छोडना चाहता हूँ, मै चाहता हूँ कि तुम्हारी पत्नी इनकी देखभाल करे। ज्यो ही अवसर मिले, तुम दोनो को लेकर मेरे पास आ जाना। चलो डैसडेमोना ! केवल एक घटे का ही समय मेरे पास है, मुझे उसी मे तुमसे अपने हृदय की बातें भी कहनी है और यात्रा का प्रवध करते हुए सासारिक विषयो पर बातें करनी हैं। समय कम है, आओ इसका अधिक से अधिक उपयोग करें।

[**ऑथेलो और डैसडेमोना का प्रस्थान**]

रोडरिगो इआगो !

इआगो ओ महान हृदय वाले मित्र ! कहो, क्या हुआ ?

रोडरिगो तुम ही बताओ, अब मैं क्या करूँ ?

इआगो जाओ, और आराम से सोओ।

रोडरिगो इच्छा तो होती है कि अब जाकर डूब मरूँ।

इआगो अगर तुम ऐसा करोगे तो क्या कभी मेरे प्रेम के अधिकारी बन सकोगे ? तुम्हें ऐसी मूर्खता करने की आवश्यकता ही क्या है ?

रोडरिगो जब जीवन ही यातना बन जाये तब जीवित रहना भी क्या मूर्खता नही है ? और जब मौत ही हकीम बन जाये तो मरने के नुस्खे मे बुराई भी क्या है ? दर्द तो नही रहेगा।

इआगो धिक्कार है तुम्हे जो ऐसी क्षुद्र बातें करते हो ! २८ वर्ष के लबे अनुभव में मैंने जीवन को परखा है और जब से अच्छे और बुरे की मुझे पहँचान हुई है, मैने कोई ऐसा व्यक्ति नही देखा जो केवल अपने को ही प्रेम करता हो। एक दुश्चरित्र स्त्री के लिये डूब मरने के स्थान पर मै तो मनुष्यत्व को तज कर बदर तक बन जाना अच्छा समझता हूँ।

रोडरिगो तो मै करूँ भी तो क्या ? मै अपनी इस आसक्ति पर स्वयं लज्जित हूँ, किंतु इसका निवारण मेरे वश की वात नही है, इतनी अच्छाई मुझमे नही है, यह मैं स्वीकार करता हूँ।

इआगो अच्छाई ! क्या वेकार की वात है। मैं ऐसा ही या वैसा यह तो मेरे ही वस की वात है न ? हमारा शरीर उपवन है और हमारी इच्छाशक्ति ही उसका माली है। हम उसमे कुछ भी बोयें या न उगायें यह तो हमारे ही श्रम पर निर्भर है, हमारी ही रुचि और रुझान की बात है ? यही तो हम मनुष्यो का स्वभाव भी है, जिसमे इच्छाशक्ति ही सवका सचालन और निर्माण करती है। यदि मनुष्य के पास विवेक न होता तो इन भटकती वासनाओ और आदेशो का नियत्रण कौन करता ? प्रकृति की क्षुद्रता बिना अंकुश के तो भयानक परिणाम दिखाने की भी क्षमता रखती है। तुम जिसे प्रेम कहते हो वह तो वेगवती वासनामात्र है, जिसमे भयानक विषदश की सामर्थ्य है। विवेक ही उसे वाँध सकता है।

रोडरिगो . यह नही हो सकता।

इआगो : सोचकर देखो। इच्छाशक्ति की लगाम हट गई है और उन्मत्त वासना ही तुममे ऐसा भाव उत्पन्न कर रही है। गंभीर वनो, आत्मसयम रखो, डूब मरना, विल्लियो और पिल्लो का ही काम है। मैंने सदैव स्वीकार किया है कि मैं तुम्हारा गहरा मित्र हूँ और मै तुमसे स्नेह के गाढे वधनो मे वँधा हुआ हूँ। अपने वटुए मे पैसे भरो और मेरे साथ युद्धभूमि मे चलो। एक नकली दाढी लगाकर अपने चेहरे को ढँक लो। यह निश्चित है कि डैसडेमोना आँथेलो से अधिक समय तक अटकी नही रहेगी, न वही अपने प्रेम मे इतना दृढ़ वना रहेगा। जो इतने आवेश और आवेग से प्रारभ हुआ है वह उसी वेग से अंत भी हो जायेगा। लेकिन तुम वटुए मे

धन भर कर ले चलना। इन मूर लोगो की इच्छाएँ परिवर्तनशील होती हैं, अपने बटुए मे धन भरा रहना चाहिये। आज जिसे वह बहुत स्वादिष्ट भोजन समझ कर खा रहा है, कल ही वह उसे अत्यन्त कडवा लगने लगेगा। डैसडेमोना भी कल किसी नवयुवक को अपनी तृष्णा का केन्द्र बनायेगी। जब ऑथेलो से उसकी वासनाएँ तृप्त हो जायेंगी तब उसे अपनी भूल का अनुभव होगा और तब उसमे मोड आयेगा। लिहाज़ा, बटुए में पैसा भरे रहो। यदि नरक की यातना ही चाहते हो तो डूब मरने से भी अच्छा एक तरीका है। जितना धन इकट्ठा कर सकते हो कर लो। यदि डैसडेमोना पवित्रता और सतीत्व के चक्कर भी बीच मे डालती है, तब भी एक घुमन्त बर्बर मूर और एक अत्यन्त सुसस्कृत वेनिस की स्त्री डैसडेमोना के बीच की एक निर्बल शपथ कोई ऐसी बडी समस्या नही है, जो मुझ जैसे ज़मीन-आसमान के कुलाबे मिलाने वाले, शैतान से मदद पाने वाले व्यक्ति के लिये ऐसी कठिन साबित हो कि बुद्धि और कौशल से मै उसका हल नही निकाल सकूँ। मैं कहता हूँ, वह तुम्हे मिलेगी और तुम उसका आनद से भोग करोगे। लिहाज़ा धन ले चलो। डूब मरने की बात को आग लगा दो, वह तो सवाल ही नही उठता। हाँ यदि तुम अपनी इच्छा की वस्तु को प्राप्त करने के प्रयत्न मे फाँसी पर झूल जाने की बजाय मरना ही अच्छा समझते हो, तो भले ही डूब जाओ और सदा के लिये उससे हाथ धो बैठो।

रोडरिगो अच्छा मान लो मैं अटा रहूँ, तो तुम विश्वास दिलाते हो कि अत तक मेरा साथ दोगे?

इआगो मेरे बारे मे पक्की समझो। जाओ! धन एकत्र करो। मै तुम्हे कई बार बता चुका हूँ, और फिर-फिर कहता हूँ, कि मुझे मूर से

घृणा है। मेरी घृणा का कारण मेरे हृदय मे जमा हुआ है और तुम्हारा कारण भी कम नही है। आओ, हम प्रतिहिंसा के लिये अपने हाथ मिलाये और उसका विनाश सोचें। यदि तुम उसकी पत्नी को अपवित्र करके आनद ले सकोगे तो इसमे मेरा आनंद कम नही समझना। समय के गर्भ मे अनजानी घटनाएँ हैं, जिनका भविष्य मे ही जन्म होगा। जाओ, धन लाओ। कल फिर और बाते होगी। अब विदा।

रोडरिगो तो कल सुबह मुलाकात कहाँ होगी ?

इआगो . मेरे निवासस्थान पर।

रोडरिगो : मै ठीक वक्त पर आ पहुँचूंगा।

इआगो . विदा, रोडरिगो ! याद है न ?

रोडरिगो : क्या ?

इआगो : डूबना नही है, यह तो पक्की हुई न ?

रोडरिगो ` मै अपनी सारी ज़मीन बेच दूंगा।

[प्रस्थान]

इआगो इसी तरह मैं मूर्खो से अपनी आवश्यकताएँ पूरी करता हूँ। हाय ! अपने अगाध और अत्यत परिश्रम से उपार्जित ज्ञान से यदि मै इस मूर्ख के कार्य्य के लिये अपने लाभ और स्वार्थ का त्याग करके समय और शक्ति का दुरुपयोग करता तो कितने दारुण दुख की बात होती। मैं उस मूर से घृणा करता हूँ। लोग तो यह भी कहते हैं कि उसने मेरी स्त्री को भी अपवित्र किया है। मै इसकी सचाई के बारे मे कह नही सकता, किंतु संदेहमात्र के आधार को ही मैं ऐसे विषय मे प्रमाण मान कर कार्य्य कर सकता हूँ। जितना ही ऑथेलो मुझे अच्छा समझता है, उतनी ही मुझे अपनी योजना को कार्य्यान्वित करने मे सफलता मिलेगी। कैसियो सुन्दर पुरुष है।

देखूं । कैसियो भी निकले ग्रौर मेरा भी काम बने । दुधारी कुटि-लता के लिये क्या करना उचित होगा ! सोचता हूँ । कुछ दिन वाद ग्रॉथेलो के कान भरना शुरू करूँ कि कैसियो तुम्हारी डैसडेमोना से वहुत ग्रधिक घुलामिला हुग्रा है । कैसियो सुन्दर है, उस पर सदेह किया जाना उचित है । उस स्त्री को मिथ्याडबर रचने की प्रेरणा दे सकता हूँ । दूसरी ग्रोर ग्रॉथेलो मुक्त हृदय का व्यक्ति है, दयालु भी है । जो ग्रपने को ईमानदार दिखाते हैं, वह उन्ही को सच्चा समभता है, ग्रौर कोई भी नकेल पकड कर उसे गधे की तरह चला सकता है । यही ठीक है । यही बीज है जिसे धरती मे से फूट कर निकलना है । कुटिलता ग्रौर रहस्य का ग्रधकार इसकी रक्षा करे ताकि इस भयानक दानवी पड्यत्र का जन्म हो सके ।

[प्रस्थान]

दूसरा अंक

दृश्य १

[साइप्रस के गवर्नर मोनटानो तथा दो नागरिको का प्रवेश]

मोनटानो क्या अंतरीप से समुद्र के बारे मे कुछ पता चल रहा है ?

एक नागरिक · कुछ नही। केवल एक भयानक बाढ ही आकाश और पृथुल तरगो के बीच मे दीखती है, कोई पाल नही झलकती।

मोनटानो . मुझे लगता है, धरती पर यह तूफान और भी तेज़ होगा। अपने युद्ध-परिवेशो पर मैने ऐसा भीषण प्रभजन टूटते कभी नही देखा। यदि समुद्र पर भी ऐसी ही अवस्था है तो कौन-सा काठ का जहाज़ होगा जो आँधी का ऐसा वेग झेल सकेगा और यह हवा की चपेट कि चट्टानो को पिघलाने की शक्ति लिये चिंघाड़ती फिरती है ? पता नही इस सबका परिणाम क्या होगा ?

दूसरा नागरिक होगा क्या ? तुर्की जहाजी बेड़ा नष्ट हो जायेगा, बिखर जायेगा। फेनों से ढँके हुए तीर पर खड़े होने पर लगता है कि आकाश की ओर थपेडा मारती अजगर-सी भीमाकार तरंगें भीषण वायु के चपेटे खाकर ऐसी घुमड़ती हुई बढ़ती दिखाई देती है जैसे वे ध्रुव तारे के रक्षक ज्योति-प्रहरी सप्तर्षियों को ही निगल जायेंगी। मैंने तो समुद्र पर ऐसे तूफ़ान को कभी उमड़ते नही देखा।

मोनटानो यदि तुर्की जहाजी बेड़े ने किसी खाड़ी में छुप कर अपनी रक्षा नही कर ली है, तो निश्चय ही वह डूब गया होगा। ऐसे तूफान मे वह बच जाये, यह तो असम्भव लगता है।

[तीसरे नागरिक का प्रवेश]

तीसरा नागरिक सुनो भाइयो! मैं खबर सुनाता हूँ। युद्ध समाप्त हो गया। इस भयानक तूफान ने तुर्कों को ऐसा उखाड फेंका है कि उनकी साइप्रस पर हमले करने की सारी योजना ही छिन्न-भिन्न हो गई है। अभी-अभी वेनिस का एक बडा जहाज़ आया है, और उसके लोगो ने स्वय तुर्की जहाज़ी बेडे के एक बहुत बडे भाग को तूफ़ान मे नष्ट-भ्रष्ट होते देखा है।

मोनटानो क्या यह सच है?

तीसरा नागरिक वह जहाज़ वेरोना से बन्दरगाह मे आ गया है। ऑथेलो के लेफ्टिनेट माइकिल कैसियो किनारे पर आ गये हैं। मूर अभी समुद्र पर है और उन्हे अब साइप्रस के गवर्नर का स्थान दिया गया है।

मोनटानो बडी प्रसन्नता की बात है। वे इस आदर और सम्मान के योग्य है।

तीसरा नागरिक किन्तु तुर्की जहाज़ी बेडे के विनाश का सवाद लाने वाले कैसियो अभी तक मूर के विषय मे चिंतित दिखाई दे रहे हैं और ईश्वर से उनकी सुरक्षा की प्रार्थना कर रहे है। तूफान ने ही उन दोनो को अलग कर दिया था।

मोनटानो परमात्मा उनकी रक्षा करे। मैं स्वय उनके आधीन काम कर चुका हूँ। वे तो पूर्ण योद्धा हैं। सग्राम-भूमि मे उन्हे देखना चाहिये। चलो, हम समुद्र-तीर पर चल कर उस जहाज़ को देखें जो बदरगाह मे आया है और ऑथेलो के आने तक आकाश और लहरो के बीच मे तब तक अपनी आँखे गडाये खडे रहे जब तक लहरो पर उनके जहाज़ की पाल फरफराती न दिखाई दे जाये।

तीसरा नागरिक : चलिये। वही चले। अभी तो हर क्षण नये जहाज़ों के आने की आशा है।

[**कैसियो का प्रवेश**]

कैसियो · मैं आप सब लोगो को मूर के प्रति इतना आदर दिखाने के कारण धन्यवाद देता हूँ। वे सचमुच वीर हैं। समुद्र भीषण हो गया था। तूफान ने ही मुझे उनसे विलगा दिया। ईश्वर उनकी रक्षा करे।

मोनटानो वे जिस जहाज मे है, है तो वह अच्छा न ? मजबूत तो है ?

कैसियो . वैसे तो वह मज़बूत लकडी का बना है। उस जहाज़ का चालक भी बडा कुशल और अनुभवी है। अभी मेरी आशाएं मिट नही गई है। मृत्यु की छाप ने मुझे ग्रस नही लिया है जो मै हताश हो जाऊँ।

[नेपथ्य में—पाल ! जहाज़ ! पाल ! चौथे नागरिक का प्रवेश]

कैसियो : यह कैसा शोर है ?

दूसरा नागरिक . सारा नगर तो खाली पड़ा है। समुद्र-तीर पर खड़ी भीडे चिल्ला रही हैं—पाल ! पाल ! जहाज़ !

कैसियो : मुझे तो लगता है कि यह नये गवर्नर ही होगे।

[तोपों की सलामी सुनाई देती है।]

दूसरा नागरिक . सलामी देने का मतलब है कि दोस्त जहाज ही आया है।

कैसियो : मेरी विनय है कि स्वयं जाकर आप ठीक पता चलायें कि कौन आये है।

दूसरा नागरिक मैं जाता हूँ।

[प्रस्थान]

मोनटानो क्यो लेफ्टिनेट ! क्या तुम्हारे जनरल का विवाह हो गया है ?

कैसियो · निश्चय ! उनका विवाह तो बडा आनंददायी रहा है उन्हे। जिस स्त्री से उन्होने विवाह किया है उसका मै किन शब्दों मे वर्णन करूँ ? रूप और यौवन की जितनी सुदर कथाएँ आपने

सुनी है वे तो पीछे रह गई, वह इतनी सुदर है कि कल्पना के पख भी उसे उड कर पार नही कर पाते। कवियो के कलम उनके वर्णन नही कर सकते। चित्रकारो की तूलियाँ वे रग नही दर्शा सकती।

[दूसरे नागरिक का पुन प्रवेश]

कैसियो बताइये ! कौन आये हैं ?

दूसरा नागरिक यह तो कोई इआगो हैं। जनरल के एन्शेन्ट है।

कैसियो . अवश्य उनकी यात्रा बडी अच्छी रही होगी। भयानक तूफान और गरजती आधियाँ, समुद्र के गर्भ मे छिपे प्रतारक जतु जो अनजाने जहाज़ो का सब कुछ नष्ट करने को विह्वल रहते है, और न सिर्फ अनगढ चट्टानें ही, परन्तु सर्वग्राहिणी दलदले भी, इन सब की भी विध्वसक प्रकृति जैसे नष्ट हो गई है क्योकि डैसडेमोना के सौंदर्य्य ने मानो उन पर जादू कर दिया है, तभी तो उसका जहाज़ इतनी सुगमता से बिना किसी हानि के इतनी शीघ्र आ पहुँचा है ?

मोनटानो यह डैसडेमोना कौन है ?

कैसियो . वही तो, जिसके बारे मे मैने अभी कहा, हमारे सचालक का सचालन करने वाली शक्ति। वह इसी वीर इआगो की सरक्षता मे भेजी गई थी और आशा से एक सप्ताह पूर्व ही आ पहुँची है। देवाधिदेव जूपीटर ! ऑथेलो की रक्षा करो। तुम ही उसकी पालो मे अपना प्रचड श्वास भर कर उसे फुला दो, ताकि उसका शानदार जहाज सुरक्षित-सा इस खाडी मे आ पहुँचे ! वह आये और डैसडेमोना की बाहुओ मे शाति पाये। हमारे बुझे हुए हृदयो को फिर से ज्योतित कर दे और सारे साइप्रस मे हर्ष और सुख फैला दे।

[डैसडेमोना, इमीलिया, इआगो और रोडरिगो का प्रवेश]

कैसियो . वह देखिये ! जहाज का खजाना किनारे पर उतर आया है। अरे साइप्रस के निवासियो ! आदर और प्रेम से उसके सामने घुटने टेक कर प्रणाम करो ! स्वागत ! देवी ! स्वागत ! ईश्वर की असीम अनुकम्पा आपको कवच की भाति घेरे रहे !

डैसडेमोना धन्यवाद वीर कैसियो ! मेरे स्वामी के बारे मे क्या सवाद है ?

कैसियो : वे अभी नही आये हैं और सिवाय इसके कि वे सकुशल हैं और शीघ्र ही आ पहुँचेगे, मैं तो कुछ भी नही जानता।

डैसडेमोना मुझे चिता हो रही है। आप उनके साथ थे ? अलग कैसे हो गये ?

कैसियो · समुद्र की भयानक लहरो और तूफान के झकोरो ने हमे अलग कर दिया।

[नेपथ्य में : पाल ! जहाज़ ! तोपो का गर्जन]

सुनिये ! कोई जहाज़ आया लगता है।

दूसरा नागरिक . तोपों की सलामी दी जा रही है। इसका मतलब है कि यह भी दोस्त जहाज़ है।

कैसियो . सवाद लाइये।

[नागरिक का प्रस्थान]

कैसियो आह वीर एन्शेन्ट ! स्वागत ! (इमीलिया से) आप भी यहाँ है श्रीमती ? (इआगो से) बुरा न मानना मित्र, यदि मैं स्वागत के उपलक्ष्य मे तुम्हारी स्त्री का चुबन करता हूँ, यह साहस मेरी कुलीन परम्पराओ का प्रभाव है, न कि किसी कलुषित भावना का।

[चुंबन करता है।]

इआगो · जितना यह तुम्हे अपना अधर-दान देती है उतना ही यदि यह तुम्हे अपनी जीभ देती, जैसे कि मुझे देती है, तो अवश्य ही तुम भर पाते।

डैसडेमोना : लेकिन वह तो बात ही नही करती !

इआगो लेकिन मेरा कटु अनुभव मुझे बताता है कि जब मै सोने को होता हूँ तो यही जीभ कतरनी की तरह चलती है। मेरी[1] की शपथ यह मैं मानता हूँ कि आपके सामने यह अपने विक्षोभ को जीभ से व्यक्त नही करती, मन ही मन कोसती रहती है।

इमीलिया आपको ऐसा कहने का कोई कारण नही।

इआगो अरे रहने दो। सबके सामने तुम बडी मधुर, मिलनसार और सुदर दिखाई देती हो, जैसे कोई आकर्षक चित्र हो, और भीतर लोगो से मिलने के समय अवश्य तुम्हारी आवाज इतनी मीठी सुनाई देती है। लेकिन रसोईघर मे तुम जगली बिल्ली की तरह खोखियाती हो, जब तुम्हारे दिल मे किसी का नुकसान करने का इरादा पैदा होता है तब तुम भगतिन बन जाती हो, किंतु जरा किसी ने छेड दिया तो शेरनी की तरह बफर उठती हो। जब घर-गिरस्ती के काम की जरूरत होती है उस समय तो तुम पर आलस छा जाता है, पर जब रात को बिस्तर पर होती हो, तब जरूर तुम घरवाली के कामो मे जरूरत से ज्यादा दिलचस्पी लेती हो।

डैसडेमोना धिक्कार है तुम पर ! नारी की निंदा कर रहे हो !

इआगो नही, किंतु है यह सत्य ही, भले ही आप मुझे इसके लिये तुर्क कह ले—विधर्मी कह ले, बर्बर कह ले। जागने पर तुम्हारा मन व्यर्थ के आनदो की प्राप्ति की ओर जाता है, क्रीडारत रहता है, पर जब बिस्तरे की ओर जाती हो, तो मानो कोई बडा काम करने जाती हो !

इमीलिया आपको मेरी प्रशस्ति गाने की जरूरत ही क्या है ?

इआगो बेहतर हो, क्योकि जो मै कहूँगा वह प्रगट ही है।

---

१ ईसा मसीह की माता का नाम मेरी था।

डैसडेमोना अच्छा ! अगर मै कहूँ कि मेरा वर्णन करो तो तुम क्या कहोगे ?

इआगो रहने दे देवी ! मुझे कहने को विवश न करें, क्योकि आलोचना मे मै वडा मुँहफट हूँ।

डैसडेमोना . कोई वात नही। कहो तो ! हाँ कोई वदरगाह की ओर उस जहाज की खवर लाने गया है या नही, जिसको अभी तोपों ने सलामी दी थी ?

इआगो : हाँ देवी !

डैसडेमोना . मै प्रसन्न नही हूँ। मै अपने हृदय की भावनाओ को छिपाने के लिये ही इधर-उधर की बातो में मन लगाये रहने की चेष्टा कर रही हूँ। अच्छा। चलो ! मेरा वर्णन करने का प्रयत्न करो।

इआगो : मै समझ नही पाता कि कैसे कहूँ ? मेरे विचारो को मेरे मस्तिप्क मे से निकालने मे उतना ही कष्ट हो रहा है जितना ऊन मे से लासा निकालते समय होता है। सारा दिमाग ही उखडता-सा लगता है। किंतु मेरी म्यूज[1] अमरत है। लीजिये सुनिये, वह कहती है : यदि वह सुदरी और विदुषी है, तो सौदर्य्य आनद प्राप्त करने के लिये है और वुद्धि उसकी अपनी वस्तु है, जिससे वह अपने सौंदर्य्य को और भी सुदर वनाती है।

डैसडेमोना : खूव कहा। किंतु यदि वह काले रंग की है और चतुर भी है तो ?

इआगो : काली होने पर भी यदि वह चतुर है तो उसे एक गोरा प्रेमी अवश्य मिलेगा जो उसके कालेपन के उपयुक्त होगा।

डैसडेमोना ' ऊहुँ, यह तो अच्छा नही।

इमोलिया . अच्छा ! यदि वह गोरी हो पर मूर्ख हो !

---

१. म्यूज़—कला की देवी।

इआगो गोरी और सुदर स्त्री को आज तक किसने मूर्ख कहा ? उसकी तो मूर्खता भी उसे सदैव उत्तराधिकारी प्राप्त करा देती है।

डैसडेमोना यह तो शराबखानो मे बेवकूफो को हंसाने वाली पुरानी घिसी-घिसाई कहमुकरियाँ और कहावते है। बताओ तुम उस स्त्री के लिये क्या कहोगे जो काली और कुरूप ही नही, मूर्ख भी हो !

इआगो : ऐसी मूर्ख और कुरूप तो कोई स्त्री होती ही नही, जिसमे इतनी भी बुद्धि न हो कि सुदरी और चतुर स्त्रियो की तरकीबो की नकल नही कर सके।

डैसडेमोना ऐसा अज्ञान तो वास्तव मे दयनीय है। जो सबसे खराब है उसकी ही तुमने सबसे अधिक प्रशसा की है। किंतु उस प्रशसा की वास्तविक पात्री के बारे मे तुम क्या कहोगे, जिसकी अच्छाइयाँ इतनी गहरी बुनियाद पर टिकी होती हैं कि वे ईर्ष्या और सदेह को भी उखाड फेंक सकती हैं।

इआगो जो सदैव सुदरी है और कभी अभिमान नही करती, वह वाक्कुशल होती है, किंतु कभी वाचाल नही होती। जिसके पास काफी धन होता है, किंतु कभी तडक-भडक को पास नही आने देती, जो इच्छाओ को वश मे रख कर समय आने पर ही उनकी पूर्ति करती है, जो क्रुद्ध होने पर प्रतिहिंसा का सुयोग पाकर भी अपने प्रहार को रोक देती है और क्रोध को दूर करती है, सहन करने की सामर्थ्य रखती है, जो कभी इतनी अचतुर नही होती कि बुरे के लिये अच्छे को बदल डाले, जो सोच सकती है फिर भी अपने भावो को व्यक्त नही करती, जिसके पीछे प्रेमियो की भीड चलती है, किंतु जो पलट कर नही देखती, वह स्त्री यदि कभी ऐसी स्त्री हो सकती है

डैसडेमोना वह करती क्या है ?

इआगो : अधिक से अधिक बच्चों को दूध पिला सकती है और घर-गिरस्ती का हिसाब रख सकती है।

डैसडेमोना छि ! क्या चिंतन है ! क्या निष्कर्ष है ! इमीलिया ! ये तुम्हारे पति है अवश्य, परन्तु इनके विचारो को स्वीकार मत करना। कैसियो ! तुम्हारा इस विषय मे क्या विचार है ? इआगो तो बडे अश्लील और मुँहफट सलाहगीर है। है न ?

कैसियो . देवी ! वे मतलब की बाते है, और कोई लगाम नही लगाते। आप तो इन्हे विचारक के रूप मे न देख कर एक सैनिक के रूप मे देखे तो अधिक अच्छा हो।

इआगो : (स्वगत) अरे ! यह तो डैसडेमोना का हाथ पकड कर उसके कान में बात करता है। यह तो बहुत अच्छा है। इसी ज़रा से जाले मे तो कैसियो जैसी बडी मक्खी को फँसा दूंगा। अच्छा ! कैसियो ! तू डैसडेमोना के साथ मुस्करा रहा है ! मुस्करा ले। तेरे इस प्रेम-प्रदर्शन मे से ही तो तेरी बेडियाँ मै पैदा करूँगा जो तुझे बाँध लेगी। ठीक कहता है, ऐसा ही होगा। अगर तेरी इन तरकीबो से ही तेरी लेफ्टिनेंटी न छिनवा दूं तो कहना। अरे ! कैसे इसकी उँगलियो को बार-बार चूम रहा है ! इस चुंबन से ही तो तू अपनी कुलीनता और अच्छाइयो के आडम्बर को प्रगट कर रहा है ! फिर चुंबन लिया ? वाह रे स्त्री के सम्मान करने के प्रयोग ! फिर ले गया उंगलियो को होठो की ओर ! (तुरही बजती है।) मूर ! मूर की तुरही बजी !

कैसियो : यह तो आवाज मेरी पहँचानी है। उनके साथ ही बजाई जाती है।

डैसडेमोना : चलो हम उनका स्वागत करे।

कैसियो : लीजिये, वे आ गये।

[ऑथेलो और सेवकों का प्रवेश]

ऑथेलो : आह ! मेरी आज्ञादायिनी स्वामिनी !

डैसडेमोना : मेरे प्रिय ऑथेलो !

ऑथेलो : अपने सामने तुम्हे देख कर मुझे अपार हर्ष हो रहा है। तुम मेरे प्राणो का आनद हो ! यदि हर तूफान के बाद ऐसा सुख मिले, तो यह प्रचण्ड पवन तब तक चले जब तक मुर्दे करवटे न बदल डाले, कोई चिंता नही यदि उठती हुई लहरे आकाश मे स्वर्ग को छू ले या नरक तक पृथ्वी के नीचे धँस जाये। यदि मुझे कभी मरना है, तो मैं इस क्षण मर जाऊँ, क्योकि इस क्षण मै पूर्ण तृप्त हूँ और अज्ञात भविष्य मे सभवत ऐसी परितृप्ति कभी भी नही मिल सकेगी !

डैसडेमोना ईश्वर न करे, यह इच्छाएँ पूर्ण हो। जैसे-जैसे समय बीते, परमात्मा करे हमारा प्रेम और आनद नित्य परिवर्द्धित हो।

ऑथेलो भाग्य के देवताओ ! तथास्तु कहो ! आज मै ऊपर तक आनद प्लावित हो गया हूँ। कैसे कहूँ। मेरा आनद तो शब्दो मे समा नही पा रहा है ! गिरा अनयन है, नयनो मे वाणी नही है, मै इस गूंगे की मिठास का वर्णन कैसे करूँ ? (चुवन लेते हुए) यह और यह सच, यदि हमारे जीवन मे टकराहट हो तो यही उसका रूप हो [1]

इआगो (स्वगत) इस समय तो तुम्हारे तार मिले हुए है, लेकिन मै तो इस सामजस्य को तोड ही दूंगा, फिर देखना कैसा बेसुरा राग निकलता है। मै झूठ नही कहता, ईमानदार आदमी हूँ।

ऑथेलो चलो दुर्ग की ओर चले। मेरे पास बडी खुशखबरियाँ है। हमारा युद्ध समाप्त हो गया है। और तुर्क डूब गये है। मेरे मित्रो ! द्वीप

---

१ अर्थात् चुवन ही टकराहट का रूप हो।

के निवासियो ! आप लोग तो सकुशल है ? प्रिये ! साइप्रस की प्रजा तुम्हे बडा स्नेह और सम्मान देगी। यह सदैव मुझे बहुत चाहती है। प्रियतमे ! मै वाचाल हो गया हूँ और अपने ही सुखो मे रम गया हूँ न, कि मुझे कुछ ध्यान नही रहा ! मेरे अच्छे इआगो ! जरा खाडी तक चले जाओ और मेरे बक्स इत्यादि जहाज से उतरवा लो। जहाज के कप्तान को दुर्ग मे ले आना। वह बडा योग्य और सम्माननीय व्यक्ति है। चलो डैसडेमोना, साइप्रस मे मुझसे मिलकर आनद आ गया।

[ऑथेलो, डैसडेमोना और सेवको का प्रस्थान। केवल इआगो और रोडरिगो रह जाते हैं।]

इआगो क्या तुम कुछ समय बाद मुझसे बदरगाह पर मिलोगे ? यदि तुम वीर हो, और जैसा कि कहा जाता है कि क्षुद्र व्यक्ति भी प्रेम मे इतने उदात्त हो जाते है, जितने कि वे होते नही, तो मेरी बात सुनो ! आज रात लेफ्टिनेट की ड्यूटी है—रात्रि-प्रहरियो और रक्षको की देखभाल करना। एक बात पहले बता दूं कि डैसडेमोना और कैसियो मे गहरी प्रीति है।

रोडरिगो उससे ? यह कैसे हो सकता है ?

इआगो चुपचाप मेरी बात सुनो और अपने मुंह को बद ही रखो। याद है न ? शुरू मे ऑथेलो की बड़ी-बडी बाते सुनकर डैसडेमोना ने किस आवेश से उससे प्रेम किया था ? लेकिन बातो के कारण तो वह सदैव वैसा ही प्रेम नही कर सकती ? अगर तुममे थोडी भी बुद्धि है, तो शायद तुम भी ऐसा नही समझोगे। अपने हृदय की इच्छाओ को पूर्ण करने के लिये उसे कोई सुदर पात्र चाहिये। भला ऐसे शैतान के-से कुरूप मूर को देखकर वह सुख कैसे पा सकती है ? जब पहली वासना का आवेश शात हो जाता है, तब

उस अग्नि को भडकाने के लिये किसी नयी वस्तु की आवश्यकता होती है—समवयस्कता, सुदर मुख, अच्छा स्वभाव और रुचियाँ, इनमें से कोई भी ऐसी उत्तेजना दे सकता है। मूर मे तो ऐसा कोई गुण नही। अत यह स्पष्ट ही है कि जब ऐसी कोई बात डैसडेमोना को नही मिलेगी, जिसमे उसका मन रम सके, तो उसका कोमल स्वभाव उचाट खायेगा और उसकी आँखो से सारे पर्दे उतर जायेंगे। उसे लगेगा, वह सब कुछ खो चुकी है। वह उससे ऊबने लगेगी और तब वह अपने स्वभाव से मेल खाने वाले प्रेमी की खोज करने लगेगी। अब अगर ऐसी हालत हो जाये, और इसके सिवाय कुछ हो नही सकता, तब कैसियो के सिवाय और ऐसा कौन है जो उस परिस्थिति मे अधिक उपयुक्त और भाग्यशाली दीखता हो ? वह बडा मिठबोला है और ऐसी नैतिकता उसके पीछे नही, कि जो अपनी जघन्य तृष्णा पूरी करने के लिये मीठे व्यवहार का दिखावा करने से उसे रोक दे। उसके अतिरिक्त ऐसा कोई नही, जिसको डैसडेमोना अपने प्रेम का पात्र बना सके। वह बडा अविश्वसनीय व्यक्ति है और अवसरवादी भी है। वह अपने अनुकूल परिस्थितियाँ बनाना जानता है और ऐसे मौके कभी नही चूकता जिनमे वह अपनी कलुषित वासनाओ की तृप्ति कर सके। वह पक्का शैतान है। और फिर जवान है, खूबसूरत है और कमसिन, अनुभवहीन और मूर्खों को आकर्षित करने के सारे गुण उसमे मौजूद है। वह पक्का धूर्त्त है। और डैसडेमोना ने तो उसके प्रति अपने आकर्षण को प्रगट भी कर दिया है।

रोडरिगो लेकिन, जाने क्यो, मुझे इस सबमे विश्वास नही होता। वह स्त्री सर्वश्रेष्ठ मानवी गुणो से पूर्ण है।

इआगो क्या मूर्खता की बात है। वह एक साधारण स्त्रीमात्र है और

उसमें भी वही वासनाएँ तथा पाप की ओर लिप्त होने की तृष्णा है। यदि वह असाधारण होती तो वह मूर के प्रेम मे कभी नही पडती। वह भी अगूर की शराब ही पीती है। अरे अक्ल के दुश्मन! देखा नही था, वह कैसे उसके हाथ को दवा रही थी? अच्छा कहो, तुमने नही देखा था?

रोडरिगो देखा क्यो नही था, लेकिन वह तो सौजन्य की वात थी!

इआगो मै शर्त वद कर कहता हूँ कि वह वासना थी। अनैतिकता और तृष्णा के इतिहास की वह भूमिकामात्र थी। उनके होठ इतने पास आ गये थे कि उनके श्वास टकरा रहे थे। रोडरिगो! यह कुटिल विचार हैं। जव यह पारस्परिक मिलन इस प्रकार रास्ता वनाता है तव ही पाप की वास्तविक क्रिया अपने को साकार कर उठती है। वह स्वामिनी की भाँति आकर वाद मे अपना सर्वाधिकार कर लेती है। मूर्ख न वनो! मेरी वात मानो! मैं तुम्हे वेनिस से लाया हूँ। आज रात जो मैं तुमसे कहूँ उसके लिये सन्नद्ध रहो। कैसियो तुम्हे नही जानता। वह निकट ही होगा। किसी तरह उसे क्रुद्ध करने की कोई तरकीव निकाल लो, ज़ोर से वोल कर या उसकी फौजी पावदियो पर कोई धव्वा लगाकर, या जैसा भी मौका देखो उसे किसी तरह से चिढा दो।

रोडरिगो : अच्छी वात है।

इआगो : वह वडा तुनुकमिजाज है और उसे जल्दी गुस्सा चढ़ता है। हो सकता है, वह तुम पर वार भी करे। ऐसा करो कि वह तुम पर हमला करे। मैं तो इसी मे से ऐसा कारण ढूंढ निकालूंगा कि साइप्रस मे गदर हो जाये। कम से कम इतना तो हो जायेगा कि कैसियो को नौकरी से हाथ धोना पड़ जायेगा। तुम्हारी मजिल पास आ जायेगी और मुझे मौका मिल जायेगा कि मैं अपनी परिस्थिति का

लाभ उठा कर तुम्हारे लिये रास्ता साफ कर सकूंगा ताकि तुम्हारी इच्छाओ की शीघ्रातिशीघ्र पूर्ति हो जाये ।

रोडरिगो : मै तुम्हारे आदेशानुसार चलूंगा और प्रयत्न करूँगा कि इस अवसर का लाभ उठाया जा सके ।

इआगो : मैं विश्वास दिलाता हूँ । कुछ देर बाद मुझसे दुर्ग के पास मिल लेना । तब तक मै मूर का सामान लाने जाता हूँ । बिदा ।

रोडरिगो : बिदा ।

[प्रस्थान]

इआगो : मुझे विश्वास है कि कैसियो डैसडेमोना से प्रेम करता है और यह भी विश्वसनीय और उचित लगता है कि वह भी उसे चाहती है । यद्यपि मूर से मै घृणा करता हूँ फिर भी मानना पडेगा कि वह स्वभाव से स्नेही, दृढ तथा उदात्त है और वह डैसडेमोना के प्रति बहुत उदार, स्नेही और प्रेमी पति प्रमाणित हो गया । मै भी उसे प्यार करता हूँ, केवल वासनाजन्य तृष्णा के कारण नही, हालांकि मै अपने को पाप के प्रति अबोध भी नही मानता, लेकिन इसमे तो मेरी प्रतिहिंसा की तृप्ति होती है क्योकि मुझे सदेह है कि विपयी ऑथेलो ने मेरी स्त्री को भ्रष्ट किया है । यह विचार तो मेरी नस-नस मे विष भरे दे रहा है, और जब तक मै पत्नी के लिये पत्नी का बदला नही ले लूगा तब तक मुझे कभी भी चैन नही पडेगा । यदि यह नही होगा तो मैं ऑथेलो के हृदय मे ऐसी आग लगा दूंगा जो कभी भी बुझाई नही जा सकेगी । पहले तो मुझे इसके लिये कैसियो की कमियो को पकडना होगा, और यह तभी हो सकता है जब वह दो कौडी का कुत्ता रोडरिगो धैर्य्य धरकर मेरे आदेशो के अनुसार चले । जब कभी मौका लगेगा मै ऑथेलो

से कैसियो की गंदे से गंदे शब्दों मे निंदा करूँगा। मुझे यह भी सदेह है कि कैसियो की मेरी स्त्री से मित्रता है। ऑथेलो मेरे प्रति कृतज्ञ होगा, मै उसे मूर्ख बनाऊँगा, उसकी शाति के विरुद्ध षड्यत्र रचूगा, और उसके साथ ऐसा घात करूँगा कि वह पागल तक हो जाये! मेरी योजना यहाँ (सिर में) है, लेकिन अभी कुछ स्पष्ट नही है। कुटिलता का मुंह तभी स्पष्ट दिखता है जब वह प्रयोग में लाई जाती है।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[ऑथेलो के घोषणावाहक का प्रवेश। उसके हाथ में घोषणा-पत्र है, उसके पीछे प्रजा है।]

घोषणावाहक हमारे वीर सेनानायक ऑथेलो की, तुर्की बेड़े के पूरी तरह विनष्ट हो जाने का सवाद पाकर, यह इच्छा है कि प्रत्येक व्यक्ति विजय का आनंद मनाये, नृत्य, गीत और उत्सव के प्रबध किये जायें, क्योकि विजय के आनंद के अतिरिक्त यह उनके परिणाम का भी परमशुभ अवसर है। उनकी इस इच्छा की घोषणा की जाती है। भोजन के लिये लगरों का प्रबध किया गया है जहाँ कोई भी स्वतंत्रता से भोजन कर सकता है, उससे प्रीतिभोज का कोई मूल्य नही लिया जायेगा। इस समय पाँच बजे से ग्यारह बजे तक कोई रोक नही होगी। परमात्मा हमारे साइप्रस द्वीप तथा हमारे वीर तथा गौरवान्वित सेनानायक ऑथेलो का मंगल करे।

[प्रस्थान]

इआगो यदि मैं इसे पी हुई शराव के ऊपर बस एक प्याला भर और पिलाने मे सफल हो गया तो समझ लो यह किसी भी जवान औरत के लिये कुत्ते की तरह पागल और मस्त हो जायेगा। और उधर मेरा प्रेम मे पागल मूर्ख रोडरिगो भी डैसडेमोना के लिये शुभ कामना मे पी-पी कर धत्त हो चुका है और वह भी आज प्रहरी है। यहाँ मेरे साथ साइप्रस के तीन कुलीन और उद्दण्ड तरुण हैं जो ज़रा-सी बात पर भडक उठते हैं और भिडने को तैयार रहते हैं। मैंने उन्हे पिला-पिलाकर उत्तेजित कर रखा है। वे भी प्रहरी हैं। अब शराबियो के इस दल मे मुझे कैसियो को पिला कर ऐसे पेश करना है कि द्वीप-निवासी उत्तेजित हो उठे। लो वे आ गये। यदि मेरी आयोजना के अनुसार सब कार्य पूर्ण हो गये तो फिर मेरी नाव तो हवा और पानी की अनुकूलता मे मज़े में बहेगी।

[कैसियो का मोनटानो तथा अन्य नागरिकों के साथ प्रवेश। पीछे मदिरा-पात्रों के साथ सेवक हैं।]

कैसियो : भगवान कसम! उन्होने मुझे तो पहले ही पिला-पिला के चक्क कर दिया है।

मोनटानो : ज़रा-सी लीजिये। सैनिक हूँ, सच कहता हूँ, बहुत थोडी-सी।

इआगो : शराब लाओ।

[गाता है।]

खन खन प्याले बजें हमारे
खन खन खन खन खन खन !
होता है इसान सिपाही
और ज़िंदगी छोटी भाई,
पिये न क्यों फिर कहो सिपाही !
खन खन प्याले बजें हमारे
खन खन खन खन खन खन !

लडको ! और शराब लाओ !

कैसियो : भगवान कसम ! क्या ज़ोरदार गाना है !

इआगो : इसे मैने इगलेंड मे सीखा था, जहाँ के लोग पीने में कमाल करते हैं। तुम्हारे डेन, जर्मन, यहाँ तक कि मोटी तोंद वाले होलेंड-वासी भी इस मामले मे अगरेज़ो के सामने कुछ नही हैं।

कैसियो : क्या अगरेज़ इतना पियक्कड होता है ?

इआगो : डेन शराब के नशे मे पछाड़ खा जाये मगर अंगरेज चूं भी न करेगा। जर्मन को पीने मे मात देते वक्त तो उसे पसीना भी नही आता। होलेडवासी तो कै करने लगता है, जब कि अगरेज़ अगला प्याला भरवाने की इच्छा करता है।

कैसियो : हमारे वीर जनरल के स्वास्थ्य के लिये······

मोनटानो : लेफ्टिनेट मैं तुम्हारे साथ हूँ। शराब के साथ तो अब इंसाफ़ होगा।

इआगो : आह प्यारे इगलेंड !

राजा स्टीफन योग्य व्यक्ति था बड़ा वीर था
उसकी ब्रीचेस[1] की कीमत बस एक क्राउन[2] थी
दर्जी ने ६ पेंस[3] अधिक ले लिये हाथ से
गाली राजा ने दी उसको यही बात थी।
वह ऊँचे दर्जे का था इंसान नामवर,
तुम हो नीचे दर्जे के काहिल हो सबमे
गर्व राष्ट्र का लाता सदा पतन जगती में
संतोषी बन रहो, मिले जो लेकर, सुख से !

और शराब लाओ !

कैसियो : भगवान कसम ! यह गाना तो पहले वाले से भी अच्छा है।

---

१. चुस्त पाजामा। २. सिक्का। ३. छोटा सिक्का-आने की भांति।

इआगो : और गाऊँ ?

कैसियो : नही। क्योकि ऐसे गाने गाने वाले के लिये यह स्थान उपयुक्त नही है। भगवान सबसे ऊपर है। कुछ प्राणी ऐसे हैं जिनकी रक्षा होनी चाहिये, कुछ आत्माएँ ऐसी है जिनकी रक्षा नही होनी चाहिये।

इआगो : यह तो सच है लेफ्टिनेट !

कैसियो : जहाँ तक मेरा सवाल है, मै तो जनरल का कोई अनिष्ट नही चाहता। शायद इसीलिये मेरी रक्षा हो जायेगी।

इआगो : यही मेरी आशा भी है लेफ्टिनेट !

कैसियो : हाँ किन्तु तुम्हारी मर्जी से ही सही, पर मुझसे अधिक नही। लेफ्टिनेट से पहले एन्शेन्ट नही। छोडो भी यह सब। आओ अपने कर्त्तव्य का पालन करें। ईश्वर हमारे पापो के लिये हमे क्षमा करे। श्रीमान् ! आइये ! अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान दे। महाशयो ! मुझे यह न समझना कि मैं नशे मे हूँ। मैं जानता हूँ, यह मेरे ऐन्शेन्ट हैं। यह मेरा दायाँ हाथ है, यह बायाँ है। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। देखो। मैं बिल्कुल बाते कर रहा हूँ।

सब : बिल्कुल !

कैसियो : क्यो ? बिल्कुल ठीक। तब आप लोग मेरे बारे मे यह न सोचें कि मै नशे मे हूँ।

[प्रस्थान]

मोनटानो : किले के बुर्ज पर चलो, अब अपनी-अपनी जगह पर पहरा देना उचित है।

इआगो : (व्यग से) आपने इस आदमी को देखा, जो अभी बाहर गया है। वह अपने को इतना महान योद्धा समझता है कि सीज़र के पास खडा होने योग्य है ! और उसकी धूर्त्तता देखो ! बिल्कुल पता

नही चलता कि उसमे और उसकी भलमनसाहत मे फर्क क्या है ? कैसे अफसोस की बात है ! आँथेलो ने उस पर कितनी बडी जिम्मेदारी डाल रखी है ! मुझे डर है, किसी न किसी दिन जब यह नशे मे झूम जायेगा, द्वीप पर बडी हलचल मचा देगा।

मोनटानो : क्या अक्सर यह ऐसा ही हो जाता है ?

इआगो : हाँ, हर रात सोने जाते वक्त पीता है। अगर रात इसे सुला न दे तो इसके पीने का अंत न हो।

मोनटानो : तब तो जनरल को इसकी सूचना देना उचित है। शायद उन्हे इस बारे मे कुछ भी पता नही हो, हो सकता है कि रहमदिली की वजह से उन्होने सिर्फ इसकी अच्छाइयो पर गौर करके इसकी बुरी आदते नजर अन्दाज कर दी हो। ठीक है न ?

[रोडरिगो का प्रवेश]

इआगो (उससे अलग से) क्यो रोडरिगो ! मै कहता हूँ लेफ्टिनेंट के पीछे लग जाओ !

[रोडरिगो का प्रस्थान]

मोनटानो : यह कितने अफ़सोस की बात है कि आँथेलो ने अपने बाद एक नशेबाज़ को इतनी ताकत दे रखी है। ऐसे मामले मे वीर मूर को सूचित कर देना तो एक बहुत बडी ईमानदारी ही समझनी चाहिये।

इआगो भाई, मै तो सारे साइप्रस की दौलत के बदले में भी ऐसा नहीं कर सकता। मुझे कैसियो से बहुत प्रेम है और उसकी यह बुरी आदत छुडाने के लिये मैं तो कुछ भी करने को तैयार हूँ। सुनो-सुनो। यह भीतर शोर कैसा हो रहा है ?

[पुकार : बचाओ ! बचाओ ! रोडरिगो को भगाते हुए कैसियो का प्रवेश]

कैसियो : कमीने ! हरामी ! शैतान !

मोनटानो लेफ्टिनेंट ! क्या बात है ? क्या बात है ?

कैसियो यह बदमाश मुझे मेरा कर्त्तव्य सिखायेगा ? मै इसे मार के भुर्त्ता बना दूंगा !

रोडरिगो मार-मार के !

कैसियो फिर बोला लुच्चे ! (रोडरिगो को मारता है।)

मोनटानो नही ! वीर लेफ्टिनेट ! मारो मत ! मै प्रार्थना करता हूँ, मारो मत।

[रोकता है।]

कैसियो छोडिये मुझे ! वर्ना मै आपका भी सिर तोड दूंगा।

मोनटानो छोडो-छोडो। तुम नशे मे हो।

कैसियो . नशे मे हूँ ?

[लडते हैं।]

इआगो . (रोडरिगो से अलग) भाग-भाग ! तुरत बाहर जाकर शोर करके आसमान सिर पर उठा ले। खूब चिल्लाना गदर ! गदर ! बलवा ! बलवा !

[रोडरिगो का प्रस्थान]

सुनिये वीर लेफ्टिनेंट ! भगवान की मर्जी ! महाशयो ! बचाओ ! लेफ्टिनेंट ! मोनटानो ! श्रीमान् ! बचाओ ! स्वामी ! लो-लो घटा बज गया। (घटा बजता है।)खतरे का घटा! कौन बजा रहा है घटा! उफ शैतान ! नगर जाग उठेगा। भगवान की इच्छा। अरे रुको ! कभी सिर उठाने लायक नही रहोगे !

[ऑथेलो तथा सेवकों का प्रवेश]

ऑथेलो : क्या बात है ?

मोनटानो ईश्वर की सौगध। मेरा खून बह रहा है। उफ कितनी चोट लगी है। कितना घायल हो गया हूँ।

[मूर्च्छित हो जाता है।]

ग्रांथेलो : जान प्यारी है तो हाथ रोक दो।

इग्रागो : रुको-रुको लेफ्टिनेंट ! मोनटानो ! श्रीमान् ! नागरिको ! क्या समय, स्थान ग्रौर कर्त्तव्य ! ग्राप सबको भूल गये है ? मैं कहता हूँ रुको। जनरल ग्रापसे कुछ कहना चाहते हैं ? धिक्कार है। रुकिये, रुकिये !

ग्रांथेलो : रुक जाग्रो ! ठहर जाग्रो ! कैसे हुग्रा यह सब ! किसने की इसकी शुरुग्रात ? क्या हम तुर्कों जैसे हो गये हैं ? भगवान ने तुर्कों जैसे शत्रुग्रों को हटाया था, क्या इसीलिये कि हम ग्रापस में लड़ मरें ? ईसाई धर्म की लाज कहाँ है तुम्हारी ? यह बर्बर झगड़ा ! ग्रगर ग्रब किसी का गुस्से से उमँग कर हाथ भी हिला तो समझ लो उसे ग्रपनी जान की परवाह नही है। जो हिला सो मरा। उस भयानक घंटे का बजना रोक दो, व्यर्थ ही द्वीप-निवासियों पर ग्रातंक छा जायेगा। ग्रब कहिये क्या बात है ! इग्रागो ! तुम ईमान-दार हो ! दुख के मारे कैसी मुर्दनी छा गई है तुम पर ? बोलो ! इसे किसने शुरू किया ? मेरे प्रति तेरे प्रेम की सौगंध ! मैं तुझसे पूछता हूँ।

इग्रागो : मैं नही जानता। क्षण भर पहले तो सब एक दूसरे के मित्र थे, मानों दूल्हा-दुल्हिन हों ग्रौर क्षण भर बाद ही खड्ग लेकर एक दूसरे पर टूट पड़े। फिर ऐसे लहू के प्यासे हो गये जैसे ग्राकाश-ग्रहों ने इनकी मति फेर दी। कैसे बताऊँ कि इस दुर्घटना का प्रारंभ कैसे हुग्रा। ग्रच्छा होता किसी गौरवमय युद्ध मे मेरे पाँव ही कट जाते तो कम से कम मैं ऐसा दृश्य देखने को यहाँ उपस्थित तो न होता !

ग्रांथेलो : क्या है यह सब माइकिल ! क्या तुम बिल्कुल भूल गये कि

तुमसे क्या आशा थी ? क्या तुम अपने आपको भुला बैठे ?

कैसियो क्षमा करें जनरल ! मैं कुछ नही कह सकता ।

ऑथेलो वीर मोनटानो ! तुम अपने आचार-व्यवहार मे सदैव अत्यंत सुसस्कृत और सुसयत थे और अपने यौवन मे भी अपने गाभीर्य्य और शातिप्रियता के लिये प्रसिद्ध थे । बुद्धिमानो मे भी तुम्हारा नाम अत्यत आदर के साथ लिया जाता है । क्या बात है कि तुम अपने यश को नष्ट करना चाहते हो ? इस तरह बात-बात में झगडा करना क्या शोभनीय है? मुझे सारी परिस्थिति समझाओ ।

मोनटानो परमदयालु ऑथेलो, मै बहुत घायल हो गया हूँ । तुम्हारा अफसर इआगो तुम्हे सारी बातें बता सकता है । क्षमा करना, मै बोल नही सकता, मेरे अग-अग मे दर्द होता है । न मैं जानता हूँ कि मैने क्या गलती की है । बेशक अगर अपनी जान बचाना, अपनी जिन्दगी से प्यार करना, अपनी रक्षा करना एक भयानक वार से अपनी हिफाजत करना गलती है तो मैं भी कुसूरवार हूँ ।

ऑथेलो ईश्वर की सौगध ! अब मेरी तर्क-बुद्धि पर मेरा क्रोध छाता जा रहा है । मेरी निर्णय-शक्ति मद हो रही है और क्रोध मुझे बहाये लिये जा रहा है । यदि मै तनिक भी अपनी भुजा उठाऊँ या हिला दूँ तो तुममे सबसे अधिक वीर भी आतक से मर जायेगा, मेरे भयानक दण्ड का भागी होगा । मुझे तुरत बताओ कि यह खूनी झगडा कैसे शुरू हुआ, किसने अगुवाई की और कौन अपराधी है। वह मेरा सगा भाई भी क्यो न हो, उसे मेरी मित्रता से हाथ धोना पडेगा । कितने शर्म की बात है कि तुम अपने निजी मामले, अपने घरेलू झगडे ऐसे नगर मे करो जहाँ युद्ध की भयानक छाया का आतक अभी तक प्रजा के हृदय को भयभीत किये हुए है । और वह भी रात को, ठीक दुर्ग मे और वह भी रक्षा-केन्द्र मे ? कितनी

भयानक भूल है। इआगो! यह किसने शुरू किया?

मोनटानो: यदि तुम उसके प्रति स्नेह या नौकरी में उसके साथ संबद्ध होने के कारण सच नही बोलते और इधर-उधर की बात करते हो, तो तुम सच्चे सैनिक ही नही हो!

इआगो: आह मेरे मर्म को न छुओ! माइकिल कैसियो के विरुद्ध कुछ कहने की जगह तो मेरी जीभ कट जाती तो अच्छा होता! किंतु मुझे विश्वास है कि यदि सत्य कह दूंगा तब भी कैसियो का कुछ नही बिगडेगा। सुनिये जनरल! बात यो है। मै और मोनटानो बाते कर रहे थे कि एक आदमी 'बचाओ-बचाओ' चिल्लाता भागा आया। पीछे-पीछे कैसियो तलवार खीचे उसे धमकाते आ रहे थे। लगता था कि मार ही देगे। तब यह (मोनटानो) महाशय, कैसियो के सामने पड़ गये और इन्होने इनसे रुकने की प्रार्थना की। मै उस चिल्लाने वाले के पीछे दौडा, क्योकि कही उसके चिल्लाने से नगर न जाग उठे और हुआ भी यही। वह बहुत तेज दौडता था। मै उसे न पा सका। तभी मै इधर दौडा क्योकि इधर तलवारे खन-खना रही थी। कैसियो चिल्ला रहे थे कि मार डालूंगा और वह ऐसी बात थी जो मैने कभी आज रात से पहले देखी भी नही थी। मुझे लौटने मे ज्यादा देर भी नही लगी। लौटते ही क्या देखता हूँ कि ऐसे जोर-शोरो से तलवारे चल रही थी, बस वैसे ही जैसे कि आपने इन्हें अलग करते वक्त देखा। इससे ज्यादा मुझे इन मामले मे कुछ नही मालूम। इंसान आखिर इंसान है। भूल बडो-बड़ो से होती है। और गुस्से मे ऐसा होता ही है। कैसियो का ऐसा क्या कुसूर है, गुस्से मे तो लोग गलतफहमी मे पड़कर अपने खासुलखासों पर हमला कर बैठते है। और यह भी पक्की बात है कि वह जो आदमी भाग गया है उसने कैसियो का अपमान किया था,

जिसे धैर्य्य से सह सकना भी सभव नही था।

ग्रॉथेलो मै जानता हूँ कि कैसियो के प्रति तुम्हारी सद्‌भावनाएँ, तुम्हारा स्नेह विषय की गभीरता को कम करने के प्रयत्न मे हैं। इसीलिये जहाँ तक हो सका है, तुमने अपने विवरण को ऐसा रग देने का प्रयत्न किया है कि अपराध प्रगट नही हो। यह सच है कि मै तुम्हे चाहता हूँ कैसियो! लेकिन अब तुम्हे मै अपना मातहत अफसर वनाकर नही रख सकता।

[डेसडेमोना का सेवको के साथ प्रवेश]

देखो। इस शोर-गुल से डैसडेमोना भी जाग गई है। मै तुम्हारे मसले को एक मिसाल वनाकर पेश करूँगा।

डैसडेमोना क्या बात है?

ग्रॉथेलो अब सब ठीक है प्रिये! चलो सोने चले। (मोनटानो से) तुम्हारे घावो की देखरेख मैं खुद करूँगा। इग्रागो! नगर पर सचेत दृष्टि रखना और जो इस झगडे से घवरा गये है उन्हे तसल्ली देना। चलो डैसडेमोना! यह तो योद्धा के जीवन का ही एक अग है कि अपनी शातिपूर्ण निद्रा को इस प्रकार के झगडो मे नष्ट किया करे।

[इग्रागो ग्रौर कैसियो के अतिरिक्त सवका प्रस्थान]

इग्रागो क्यो लेफ्टिनेंट! क्या घायल तो नही हुए?

कैसियो इतना कि अब हकीम मेरा इलाज नही कर सकते।

इग्रागो भगवान न करे।

कैसियो : मैने अपना अच्छा नाम आज खत्म कर दिया। वही मेरे जीवन का अमर अश था। अब तो मै पशु से भी गया-वीता हूँ। हाय! मेरा सारा यश चला गया।

इग्रागो . कसम से, मै तो समझा था तुम्हे कोई घातक चोट लगी है।

शरीर के घाव मे जो पीड़ा की भावना होती है वह नाममात्र की हानि से कही अधिक पीडा देती है। यश क्या है ? एक झूठा और बेकार का प्रदर्शन, जो प्राय अयोग्य भी प्राप्त कर लेता है, और मामूली-सी बात पर नष्ट हो जाता है। कोई भी अपना यश तब तक नही गँवाता जब तक अपने को स्वय ही हारा हुआ नही समझता। फिर, निश्चय ही तुम जनरल का स्नेह और विश्वास एक बार फिर जीत सकते हो। इस वक्त तो वह तुमसे नाराज़ है, क्योकि तुमने एक अपराध किया है। और इसलिये तुम्हे निकालने को वह मजबूर हो गया है। लेकिन इसका मतलब यह थोडे ही है कि उसके दिल मे तुम्हारे खिलाफ कोई गहरी रंजिश भी है। यह तो ऐसे समझ लो, जैसे कोई बफरे हुए शेर को धमकाने को एक मासूम कुत्ते को मार उठा हो। (मोनटानो और कैसियो की तुलना ही यहाँ प्रगट की है।) यह तो नीति की बात है। उससे फिर क्षमा माँग लेना और फिर वह तुम्हारा हो जायेगा।

कैसियो : अच्छा यही होगा कि मुझसे घृणा की जाये, बजाय इसके कि इतने वीर जनरल के आधीन कार्य्य करने के लिये मुझ जैसा पूर्णत: अयोग्य, शराबी, नशेबाज़ अफसर रख लेने की प्रार्थना की जाये! शराब पीकर बकना, झगड़ना, हमला करना! और गाली देना! और अपनी छाया को देखकर बहकना! ओ मदिरा की अदृश्य आत्मा! यदि तेरा कोई और विदित नाम न हो तो, ले आ! मै तुझे स्वयं शैतान कहकर क्यों न पुकारूँ ?

इआगो : वह कौन था जिसका तुमने तलवार लेकर पीछा किया था। उसने तुमसे क्या किया था ?

कैसियो : पता नही। मैं नही जानता।

इआगो : यह कैसे हो सकता है ?

कैसियो : मुझे बहुत-सी धुंधली-धुंधली-सी बातें याद हैं। कुछ साफ याद नही आता। एक झगडा हुआ था। और कुछ नही। हे भगवान! अपनी ही बुद्धि को नष्ट करने के लिये मनुष्य एक ऐसी वस्तु अपने ही मुख से गले मे उतार लेता है कि हर्ष, सुख और आनद और मनोरजन की खोज मे वह अपने को पशु बना लेता है!

इआगो : किंतु इस समय बिल्कुल ठीक हो। इतनी जल्दी तुम कैसे ठीक हो गये?

कैसियो : एक शैतान की जगह दूसरे ने ले ली है—नशे की जगह गुस्सा आ पहुँचा है। एक अपूर्णता मुझे दूसरे का अनुभव कराती है यहाँ तक कि मुझे अपने से घोर घृणा हो रही है।

इआगो : अरे तुम तो बडे नीतिशास्त्री हो! समय, स्थान और परिस्थिति को देखते हुए, ऐसा न होता तो कही अच्छा होता, किंतु जब ऐसा हो ही गया है, तो अपने बस मे जितना है मामले को सुधार लेने की कोशिश करो।

कैसियो : यदि मैं अपने पद के लिये उससे प्रार्थना करता हूँ तो अवश्य वह मुझसे कह देगा कि मैं नशेबाज हूँ। यदि मेरे एक नही सौ-सौ मुँह होते तब भी इस अभियोग ने मुझे चुप कर दिया होता। अब अक्ल की बात करूँ, तब मूर्खता की और फिर एक हैवान बन जाऊँ—ऐसे आदमी को कौन अपना विश्वासपात्र बना सकता है? कितना विचित्र है! प्रत्येक मदिरा का अगला चषक अपवित्र है और उसमे सिवाय शैतान के कुछ नही रहता।

इआगो : नही, यह मत कहो। अच्छी मदिरा यदि उचित मात्रा मे ली जाये तो वह एक अच्छे आनददायक मित्र की भाँति है। योग्य लेफ्टिनेंट! उसे दोष न दो। यह तो मैं आशा करता हूँ कि तुम मुझे अपना प्रेमी मानते हो?

कैसियो : इसका तो मैने प्रमाण उपस्थित किया है। मै कितना पी गया था !

इआगो : इसमे विचित्र क्या है ? तुम या कोई भी एक न एक वार पी ही जाता है। अब मैं तुम्हे इस मामले मे बढने की तरकीब वताता हूँ। इस समय हमारे जनरल की पत्नी ही स्वामिनी है, क्योकि उसने उसका हृदय अपने सद्‌गुणो तथा सौदर्य्य से पूरी तरह जीत लिया है। तुम उसी से जाकर प्रार्थना करो कि वह तुम्हे फिर तुम्हारा स्थान दिलाये। वह वडे अच्छे स्वभाव की करुण और विशाल हृदय वाली स्त्री है। वह तो याचना करने पर माँगे हुए से अधिक न देने तक को नीच कार्य्य समझेगी ! उससे प्रार्थना करो कि वही तुम्हारे और उसके पति के वीच की दरार को भर दे। और मै इस वात पर अपनी सारी संपत्ति दॉव पर लगाकर कहता हूँ कि यह जो दरार पडी है भर जायेगी तो ऐसा पक्का सवध होगा कि यह दरार तुम्हे वाद मे लाभदायक-सी दिखाई देने लगेगी।

कैसियो : सचमुच। सलाह तो वहुत अच्छी है।

इआगो : कसम से, मेरी ईमानदारी और प्रेम और सचाई पर शक न करो।

कैसियो : मै भी इसी राय का कायल हूँ। भोर ही मैं डैसडेमोना से इस कार्य्य की प्रार्थना करूँगा। सचमुच इस समय यदि भाग्य ऐसे छोट जायेगा तो फिर मै भला कहाँ का रहूँगा ?

इआगो : यही तो ! गुडनाइट लेफ्टिनेंट ! मैं पहरे पर जाता हूँ।

कैसियो : गुडनाइट मेरे अच्छे इआगो !

[प्रस्थान]

इआगो : कौन कहेगा कि मै यह सव करने के कारण नीच हूँ, कुटिल

हूँ। क्या मैने अपनी राय निहायत ईमानदारी और प्रेम से नही दी, क्या यही आँथेलो की कृपा प्राप्त करने का एकमात्र रास्ता नही है ? दूसरो को मदद देने को तैयार रहने वाली डैसडेमोना को अपने पक्ष में कर लेने के अलावा और कौन-सी आसान तरकीब है ? प्रकृति के तत्त्वो के समान ही वह भी अत्यत दानशीला है। और जहाँ तक डैसडेमोना की मूर को जीत लेने की बात है वह भी क्या मुश्किल है ? वह चाहे तो उसको अपने पवित्र ईसाई धर्म से ही विमुख कर दे। उसके प्रेम के बधन मे मूर इतना बँधा हुआ है कि वह चाहे तो उसे बना दे, चाहे तो बिगाड दे। कैसियो के भले के लिये यदि मैंने उसे ऐसी राह सुझाई है तो फिर मुझे किस तरह कुटिल और दोषी ठहराया जा सकता है ? नरक के देवताओ ! जब शैतान मनुष्य को भयानक पाप करने को प्रेरित करता है तब वह सदैव उन्हे बडा साधुवेश धर कर आकर्षित करता है। यही तो मैं भी कर रहा हूँ। मेरी योजना यह है कि जब वह अपने पद पर पुन नियुक्ति की प्रार्थना लेकर डैसडेमोना के पास जायेगा और वह मूर से उसकी ओर से ज़ोर से सिफारिश करेगी, मै मूर के दिमाग मे यह ज़हर भरूँगा कि डैसडेमोना कैसियो को फिर नियुक्त करवाना चाहती है ताकि वह उससे अपनी वासनाओ की तृप्ति करने का अवसर बदस्तूर पा सके। जितना ही यह कैसियो की ओर से बोलेगी, उतना ही आँथेलो का विश्वास भी उसके पातिव्रत पर से उठता जायेगा। इस प्रकार मैं उसके पवित्र नाम पर बट्टा लगा दूँगा और उसकी अच्छाई मे से ही मैं ऐसा फदा बना दूँगा जिसमे सब के सब अपने आप फँस जायेगे।

[रोडरिगो का प्रवेश]

कहो रोडरिगो ! क्या हाल हैं ?

रोडरिगो : इस शिकार की दौड मे मेरा तो वही हाल है जो शिकार करने वाले का नही, वल्कि शोर मचाने वाले, भोकने वाले कुत्ते का होता है। मेरा धन तो करीव-करीव समाप्त हो गया। आज रात तो मेरी वेहद पिटाई हुई है। मै समझता हूँ, अन्त मे, मुझे जरा ज्यादा अनुभव आ रहा है। पैसा हाथ नही, अक्ल जरा जोर देकर कहती है कि मेरा वेनिस लौट जाना ही अच्छा है।

इआगो : वे कितने दीन होते है जिनमे धैर्य्य नही होता। हर जख्म पुरने के लिये वक्त लेता है। तुम जानते हो, हम मामूली अक्ल से ही काम लेते हैं, कोई जादू तो जानते नही। और वुद्धि तो, देखो, क्रमश अपना विकास प्राप्त करती है। क्या सारी योजना सतोष-जनक रूप से नही चल रही ? इसमे कोई शक नही कि कैसियो ने तुम्हे मारा है, लेकिन तुमने भी जरा-सी तकलीफ सहकर कैसियो को नौकरी से निकलवा दिया है। माना कि हर वस्तु सूर्य के आलोक मे ही पनपती-वढती है, लेकिन देखो न ? जो फल पहले लगते हैं, वे ही पहले पकते भी हैं। तनिक संतोप से काम लो ! भगवान कसम ! सुवह हो गई। आनद और कार्य्य मे रत मनुष्य को समय वीतता हुआ पता भी नही चलता। अव तुम जाओ, जहाँ तुम्हे जाना है। वाकी तुम्हे फिर पता चल जायेगा। जाओ अव जल्दी चले जाओ।

[रोडरिगो का प्रस्थान]

अव मुझे दो काम करने है। एक तो मुझे अपनी स्त्री को कैसियो की ओर से वोलने को डैसडेमोना के पास भेजना है। दूसरे मुझे तव तक ऑथेलो को दूर रखकर, ठीक तभी वीच मे लाना चाहिये जव उसे डैसडेमोना से प्रार्थना करता हुआ कैसियो दिखाई दे। यही रास्ता ठीक है। योजना को विलंव और अकर्मण्यता मे विनष्ट नही करना चाहिये।

[प्रस्थान]

तीसरा अंक

दृश्य १

[दुर्ग के सामने]

[कैंसियो तथा कुछ गायकों का प्रवेश। साथ में विदूषक है।]

कैंसियो उस्तादो ! यहाँ गाइये ! मैं आपके परिश्रम के लिये आपको सतुष्ट कर दूंगा। जनरल के स्वागत मे एक छोटी-सी तान छेड दीजिये।

[सगीत]

विदूषक वाह उस्तादो ! क्या आपके वाजे नेपल्स होकर आये है कि वे नाक के सुर से अलाप रहे हैं ?

एक संगीतज्ञ कैसे जनाव ?

विदूषक क्या यह सब हवाई वाजे है ?

एक संगीतज्ञ मेरी की कसम, आप ही जो वताये ?

विदूषक अरे इसमे तो एक किस्सा है। यह लो उस्तादो ! अपना इनाम। जनरल आपके सगीत से इतने खुश हो गये हैं कि मुहब्बत की खातिर वे चाहते हैं कि आप अव और शोरगुल न करे।

एक सगीतज्ञ अच्छी वात है जनाव ! हम चुप हैं।

विदूषक अगर आपके कोई ऐसा सगीत हो जो सुनाई न दे, तो उसे छेड दे। जनरल उस सगीत को पसद नही करते जो कि सुनाई दे जाता है।

एक संगीतज्ञ माफ कीजिये। ऐसा कोई सगीत हमारे हुनर मे नही।

विदूषक तो अपने वाजे रखिये अपने थैलो मे और हवा मे गायव हो जाइये।

[सगीतज्ञों का प्रस्थान]

कैसियो · सुनते हो मेरे अच्छे दोस्त !

विदूषक . नही मैं तुम्हारे अच्छे दोस्त को नही सुनता !

कैसियो . भई, यह चकल्लस बद करो। यह लो तुम्हारे लिये सोने का एक मामूली सिक्का है। अगर तुम्हे वह महिला जगी हुई मिले जो कि तुम्हारी स्वामिनी की सेवा मे नियुक्त है तो जरा जाकर उससे कह दो कि कैसियो नाम का एक आदमी तुमसे बात करने की प्रार्थना करता है। मेरे लिये यह काम कर दोगे ?

विदूषक . जरूर ! अगर वह जाग गई होगी और इधर आयेगी तो मै कह दूंगा।

कैसियो बहुत अच्छे हो तुम।

[विदूषक का प्रस्थान । इआगो का प्रवेश]

खूब समय से आये इआगो ?

इआगो · तो क्या रात तुम सोये ही नही ?

कैसियो . नही। जब हम एक दूसरे से अलग हुए थे तभी भोर हो गई थी। मैंने तुम्हारी पत्नी को बुलवाने का साहस किया है। मेरी इच्छा है कि वह किसी तरह मुझे दयालु डैसडेमोना के समीप पहुँचा दे।

इआगो · मै अभी उसे तुम्हारे पास भेजता हूँ और मै ऐसी तरकीब भी निकलूंगा कि तब तक मूर बीच से अलग हो जाये जब तक तुम आजादी से अपनी बात कह सको।

कैसियो मैं इसके लिये तुम्हारा बडा आभारी होऊँगा।

[इआगो का प्रस्थान]

मैंने कभी फ्लोरेंस वासी को इतना दयालु और ईमानदार नही देखा।

[इमीलिया का प्रवेश]

इमीलिया नमस्कार लेफ्टिनेन्ट ! मुझे तुम्हारे प्रति स्वामी के असन्तोष की बात जानकर बहुत दुख हुआ, परन्तु विश्वास रखो, मुझे आशा है सब ठीक ही होगा। जनरल और उनकी पत्नी इसी विषय पर वातचीत कर रहे हैं और देवी तुम्हारी ओर से जोर देकर कह रही हैं। किन्तु मूर का कहना है कि जिस व्यक्ति को तुमने घायल किया है वह साइप्रस का एक बडा प्रभावशाली और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है और राजनीति के दृष्टिकोण से वे तुम्हे निकालने के अतिरिक्त और कुछ कर भी नही सकते थे। फिर भी उन्होने तुम्हारे प्रति अपने प्रेम को स्वीकार किया है और तुम्हे तुम्हारे पद को पुन प्राप्त कराने की चेष्टा मे वे सबसे पहला अवसर प्राप्त करते ही अपनी पसद को ही सबसे अधिक स्थान देगे और किसी के सिफारिश करने की जरूरत ही क्या है।

कैसियो फिर भी मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, अगर तुम बुरा न मानो तो, और हो सके तो, मुझे डैसडेमोना से एकात मे बाते करने का कुछ सुयोग अवश्य दोगी।

इमीलिया आइये ! भीतर आ जाये। मै आपको ले चलती हूँ जहाँ आपको उनसे किसी तरह की रुकावट के बिना वातचीत करने का, अपनी वात कहने का काफी समय मिलेगा।

कैसियो इसके लिये मै सचमुच आपका बहुत आभारी होऊँगा।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[दुर्ग का एक प्रकोष्ठ]

[ऑथेलो, इआगो और अन्य नागरिकों का प्रवेश]

ऑथेलो हरकारे को इन पत्रो को दे दो और उसके द्वारा सिनेट को

मेरा अभिवादन भिजवा दो। इसके बाद, मुझसे दुर्ग-प्राचीर पर मिलना, मै वही जा रहा हूँ।

इआगो . जो आज्ञा स्वामी। मै अभी करता हूँ।

ऑथेलो अच्छा महोदयो ! क्या हम इस सुरक्षा-प्राचीर की ओर चले ?

नागरिक हम श्रीमान् की सेवा मे साथ रहेगे।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[दुर्ग का उद्यान]

[डैसडेमोना, कैसियो और इमीलिया का प्रवेश]

डैसडेमोना : विश्वास रखो कैसियो ! मैं तुम्हारी ओर से जितना कुछ कह सकूंगी अवश्य कहूँगी।

इमीलिया : यही करे देवी ! इस विषय मे मेरे पति भी बड़े दुखी हुए है, ऐसे जैसे यह आपत्ति उन्ही पर पडी हो।

डैसडेमोना निश्चय ही तुम्हारे पति बड़े ईमानदार है। इसमें संदेह मत करो कि मैं तुम्हे अपने स्वामी के विश्वास और मैत्री का पात्र बनाने मे कुछ उठा नही रखूंगी।

कैसियो · ओ दयालु देवी ! मुझे चाहे जो कुछ हो जाये, मै सदैव आपका वफादार और सच्चा सेवक बना रहूँगा।

डैसडेमोना : हाँ-हाँ, इसके लिये मैं तुम्हे धन्यवाद देती हूँ। तुम अवश्य ही मेरे पति से परिचित हो। तुम बहुत दिनो तक उनके साथ रहे हो और मैं देखूंगी कि राजनीति की आवश्यकता से अधिक वे तुम्हारे प्रति उपेक्षा-भाव नही रखेंगे।

कैसियो : किंतु राजनीति के मामले तो उन्हें न जाने कितने दिन मुझसे दूर रखेंगे, हो सकता है कि कुछ कल्पित और आधारहीन घटनाएँ

ऑथेलो : मै घर खाना नही खाऊँगा । मुझे दुर्ग मे कप्तानो के साथ खाना है ।

डेसडेमोना : तो फिर कल रात, या मगलवार की सुबह सही, या मगल की दुपहर या रात, या बुध की दुपहर । मै प्रार्थना करती हूँ समय बता दीजिये । लेकिन तीन दिन से ज्यादा न कहे । सच कहती हूँ, वह वास्तव में बडा पश्चात्ताप कर रहा है । आमतौर पर देखने मे आपकी नज़र मे उसकी नशेबाज़ी का कुसूर, सिवाय इसके कि युद्धकाल मे अच्छे से अच्छे आदमी को भी मिसाल पेश करने के लिये सज़ा देनी ही चाहिये, ऐसा कोई कुसूर भी नही है कि उसे आपकी ओर से इतनी कडी सज़ा मिले । बताइये ? वह कब आये ? ऑथेलो ! सच कहिये ! मुझे ताज्जुब होता है कि क्या ऐसी भी कोई बात है जो आप मुझसे करने को कहे और मैं ऐसे ही उसके उत्तर में अनिश्चित-सी रह जाऊँ ? वही माइकिल कैसियो ! जो आपकी ओर से कितनी ही बार प्रेम-सदेसे पहुँचाने आया था, मैंने अनेक बार जब आपके बारे मे ऐसी बाते की जैसे मै आपको महत्त्व न देती होऊँ, तब वही आपकी ओर से बोलता था । सच, मुझे बडा अचरज होता है यह सोच-सोच कर ही कि आज मुझे उसी व्यक्ति को फिर से उसका पद दिलाने के लिये इतना अनुनय करना पड रहा है । सच कहती हूँ, इतना तो मैं ही आसानी से कर सकती थी !

ऑथेलो : मैं कहता हूँ बस करो । जब वह चाहे उसे बुला लो मैंने तो तुमसे कुछ भी इकार नही किया ।

डेसडेमोना : यह मैं तुमसे ऐसी कोई बहुत बडी चीज़ तो नही माँग रही ? यह तो ऐसे ही समझो जैसे मैं तुमसे तुम्हारे दस्ताने पहन लेने की प्रार्थना कर रही होऊँ । या कहूँ कि अच्छा भोजन करिये,

सर्दी में कपड़े पहनिये या कहूँ कि इसमे आपका लाभ है इसे अवश्य करिये! नही! जव मै आपसे कुछ विशेप प्रार्थना करूँगी, जिसमें मै आपके प्रेम की परीक्षा करूँगी, वह तो सचमुच कोई बहुत बड़ी बात होगी और उसे शायद स्वीकार करते हुए आपको भय भी होगा।

ऑथेलो : मै तुम्हे कुछ भी मना नही करूँगा। अब तनिक मुझे कुछ समय के लिये एकात में रहने दो।

डैसडेमोना : मै कब मना करती हूँ। मै जाती हूँ स्वामी!

ऑथेलो : जा रही हो डैसडेमोना! मै बस सीधा तुम्हारे पास ही आता हूँ।

डैसडेमोना : चलो इमीलिया! (पति से) आप जैसा ठीक समझे करे। मैं तो सदैव आपका ही अनुसरण करूँगी।

[डैसडेमोना और इमीलिया का प्रस्थान]

ऑथेलो : आह कितनी प्यारी है! भले ही मेरी आत्मा का नाश हो जाये, किंतु मैं तुझसे प्रेम करता हूँ। और जब मै तुझसे प्रेम करना छोड दूंगा, संसार में प्रलय आ जायेगा।

इआगो : मेरे वीर स्वामी····

ऑथेलो : क्या कहते हो इआगो?

इआगो : क्या जब आप श्रीमती से विवाह से पूर्व प्रेम कर रहे थे माइकिल कैसियो सब कुछ जानता था?

ऑथेलो : शुरू से आखिर तक····सब जानता था···क्यों क्या बात है?

इआगो : नही, अपने एक विचार को संतुष्ट करने के लिये। और कोई बात नही थी।

ऑथेलो : ऐसा तुम्हारा विचार है इआगो?

इआगो : मैं समझता था तब वह उन्हे नहीं जानता था।

ऑथेलो इसका मतलब है कि तुम मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र कर रहे हो और मेरे ख़ास दोस्त होकर ! अगर तुम समझते हो कि मेरे साथ इतनी ही बुराई की गई है तो भी मुझसे तुम इतना रहस्य बनाये हुए हो ?

इआगो हो सकता है मै अपने विचार मे गलत होऊँ। मै मानता हूँ कि मेरी प्रकृति मे बुराई देखने की प्रवृत्ति अधिक है और बहुधा मेरी ईर्ष्या मुझे ऐसी कमियाँ देखने की ओर झुकाती है जो वास्तव मे होती भी नही। फिर भी मै अनुनय करता हूँ कि आपकी बुद्धिमत्ता एक ऐसे व्यक्ति पर ध्यान नही देगी, जो कि अपने बिखरे हुए अनिश्चित वाक्यो से आपको कष्ट दे रहा है और स्वय अधकचरे चिंतन मे ही पडा रहता है। अत यह आपकी मानसिक शाति के लिये ठीक नही है, न आपके भले के लिये ही है, न मेरे पौरुष के लिये, आत्मविश्वास और बुद्धि के लिये ही उचित है कि आप मेरे आतरिक भावो की जानकारी प्राप्त करें।

ऑथेलो तुम्हारा क्या मतलब है ?

इआगो : अच्छा काम निस्संदेह प्रत्येक के लिये बहुमूल्य कोप होता है। जो मेरे धन के बटुए को चुराता है वह तो साधारण मूल्य की वस्तु चुराता है, मामूली चीज़ है वह तो ! पहले मेरी थी, फिर उसकी हो गई। धन तो हज़ारो के प्रयोग मे आता है। लेकिन जो मेरे अच्छे नाम को चुराता है वह तो मुझे ऐसी चीज़ से लूट लेता है जिससे उसका कुछ बनता नही, लेकिन मैं तो कही का नही रहता।

ऑथेलो : ईश्वर की सौगध ! मुझे अपने विचार बताओ न ?

इआगो : यदि मेरा हृदय आपके सामने खुला रखा रहे तब भी आप पता नही चला सकते। तब तक जब तक मेरा हृदय मेरे वक्ष में है उसके भावो का पता चलाना असभव ही है।

ऑथेलो : उफ !

इआगो : आह मेरे प्रभु ! हरी आँखो वाली राक्षसी ईर्ष्या से सावधान रहिये। यह उस व्यक्ति का उपहास करती है जो अपने मस्तिष्क को इसके सामने समर्पित कर देता है। यह उसको वेदनाग्रस्त भावनाओं से निर्मम क्रीडा करती है। सदेह से निरतर वह उसको छलती रहती है। जो व्यक्ति जानता है कि उसे उसकी ऐसी पत्नी ने अपमानित, अनादृत किया है, जिसकी वह तनिक भी चिंता नही करता, वह अवश्य उस व्यक्ति की तुलना मे सुखी है जो अपनी पत्नी से बहुत प्रेम करता है, किंतु फिर भी उस पर सदेह करता है, और फिर उसे अत्यंत चाहता है।

ऑथेलो : आह अभिशाप !

इआगो : संतोषमय दारिद्र्य भी धन है। किंतु अनत धन भी शीत ऋतु की भाँति दारिद्र्य है यदि सदैव यह भय बना रहे कि कही यह धन चला न जाये। हे परमेश्वर ! मानवमात्र की ईर्ष्या से रक्षा करे !

ऑथेलो : क्यो ऐसा क्यो है ? क्या तुम समझते हो कि चंद्रमा के बढती कलाओ के परिवर्तित रूप जैसे ईर्ष्या के परिवर्द्धित स्वरूप को देखते-देखते ही मेरा जीवन भी व्यतीत होगा ? नही। एक बार सदेह मे पड़ना अनिश्चय से मुक्ति प्राप्त करने के समान है। मुझे तुम पशु समझना यदि मै तुम्हारे विचित्र काल्पनिक विचारो को गांभीर्य्य से प्रश्रय दूँ। मुझे इसमें ईर्ष्या नही होती कि मेरी पत्नी सुदरी है, अच्छा भोजन करने की शौकीन है, समाज में मिलती-जुलती है, खूब बाते करती है, गाती है, खेलती है, नाचती है। जब स्त्री पतिव्रता होती है यह सब बाते तो उसकी अच्छाइयो मे चार चाँद लगाती है। न मै यही सोचता हूँ कि मुझमें बहुत कम गुण है इसीलिये वह मेरे प्रति ईमानदार नही रहेगी। उसने अपनी आँखें खोल कर मुझे अपने प्रेमी के रूप मे चुना था। नही इआगो ! सदेह करने से पूर्व मै

नही है। यद्यपि मुझे आशका है कि उसका रुख, अपनी वुद्धि मे स्थिरता पाने पर, बदला, और उसने अपने देशवासियो से आप की तुलना की और सम्भवत इस विवाह पर खेद हुआ, पश्चात्ताप ही हुआ।

आँथेलो विदा ! विदा ! अगर कुछ और देखो तो मुझे वताना। अपनी स्त्री से कहना कि हर वात को गौर से देखती रहे। अब मुझे छोड जाओ।

इआगो मेरे स्वामी ! मुझे आज्ञा दें।

[प्रस्थान]

आँथेलो आह मैने विवाह ही क्यो किया ! यह ईमानदार आदमी और भी, निश्चय से, बहुत कुछ जानता है, जो यह बतलाता नही।

इआगो (लौटकर) स्वामी ! मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप इस विषय को यही रोक दें और खोज-बीन न करे, अभी रुकें और देखे कि क्या-क्या होता है ? इसमे शक नही कि कैसियो को उसका पद फिर देना चाहिये क्योकि वह उसके योग्य हैं, फिर भी कुछ दिन के लिये अभी इस नियुक्ति को और स्थगित कर देना ही उचित होगा। इसी से आपको पता चल जायेगा कि कही वह आपकी पत्नी को ही तो अपनी नियुक्ति का साधन नही समझता। आप इस पर भी ध्यान दें कि कही डैसडेमोना कैसियो की नियुक्ति के लिये बहुत ज्यादा ज़ोर तो नही देती। इसी से सारा मामला स्पष्ट हो जायेगा। इस दौरान मे मुझे डर है और मुझे डरने के कारण भी हैं, क्योकि जहाँ तक मै समझता हूँ, यह सब व्यर्थ का सदेह ही प्रमाणित होगा। डैसडेमोना पवित्र हैं। यही मेरी प्रार्थना है।

आँथेलो तुम इस वात से मत डरो कि मै आत्मसयम खो वैठूंगा।

इआगो : तव फिर मैं चलूं।

[प्रस्थान]

आॅथेलो यह व्यक्ति बहुत ही ईमानदार है और मनुष्य-चरित्र की गहराइयों को जानता है। यदि मैं उसे दुश्चरित्र पाता हूँ तो निश्चय ही उससे संबंध विच्छेद कर लूंगा और यद्यपि इसमे मेरा हृदय विदीर्ण हो जायेगा, मैं उसे जीवन के क्षेत्र मे जुटने के लिये अकेला छोड़ दूंगा। सभवत: मै काला ही नहीं, वे गुण भी नही जानता जिनसे यह सुदरियाँ प्रभावित होती है और फिर मेरी उम्र भी तो ढलान पर आ गई है। पर फिर भी ये सब मामूली बातें है। जहाँ तक मेरा सवाल है, मैं तो उसे खो ही चुका हूँ। मुझे धोखा दिया गया है और मुझे तो उससे घृणा करके ही सांत्वना मिल सकती है। मै एक मेढक बनकर अंधेरे और गदगी मे रहना पसद करूँगा न कि ऐसी स्त्री के साथ जो अन्यो से प्रेम करती है। और यह बड़े लोगो के साथ कितना बड़ा अभिशाप है कि छोटे लोगो की भाँति वे पीडा और दुखों से मुक्त नही रहते। यह भाग्य तो मृत्यु की भाँति अवश्यम्भावी है, मेरी स्त्री पर पुरुष से प्रेम करे। यह लो! वह फिर आ रही है।

[डेसडेमोना और इमीलिया का प्रवेश]

यदि यह विश्वासघातिनी है तब ईश्वर ने नारी को अपनी आकृति मे निर्माण करके अपना अपमान ही किया है। मैं इस पर विश्वास नही करता।

डेसडेमोना . आॅथेलो! तुम्हारे आमन्त्रित कुलीन द्वीपवासी प्रतीक्षा कर रहे हैं। भोजन तैयार है।

आॅथेलो उफ! मुझसे भूल हो गई।

डेसडेमोना · कैसी बात कर रहे हो? क्या तबियत ठीक नही है?

आॅथेलो · मेरे सिर मे दर्द हो रहा है।

डैसडेमोना जागने के कारण ही हुआ है। अभी ठीक हो जायेगा। लाओ मै तुम्हारे सिर पर कपडा कस कर बांध दूं, घटे भर मे चला जायेगा।

ऑथेलो नही, तुम्हारा रूमाल तो बहुत छोटा है।

[ऑथलो रूमाल को हटाता है। रूमाल गिर जाता है।]

रहने दो। मै चलता हूँ तुम्हारे साथ।

डैसडेमोना हाय! तुम्हारी तबियत को न जाने क्या हो गया!

[ऑथेलो और डैसडेमोना का प्रस्थान]

इमीलिया मुझे इसी का हर्ष है कि मुझे यह रूमाल मिल गया। डैसडेमोना को यह ऑथेलो का पहला प्रेमोपहार है। मेरे पति ने बहुधा मुझसे इसे चुराने को कहा है किंतु वह इसे इतना प्रेम करती है कि कभी नही छोडती। ऑथेलो ने भी तो उसे इसे ठीक से रखने को कह रखा है। तभी तो वह इसे इतना सहेजे रहती है कि कभी इसे चूमती है, कभी इससे बातें करती है। मै इसके रग-रूप की नकल करवा लूंगी और इआगो को दे दूंगी। पता नही वह इसका क्या करेंगे। जो हो, वे खुश होगे, मै तो इसीलिये यह काम कर रही हूँ।

[इआगो का प्रवेश]

इआगो क्यो? यहाँ अकेली क्या कर रही हो?

इमीलिया अब मत डाँटना। मेरे पास तुम्हारे लिये एक चीज़ है।

इआगो मेरे लिये एक चीज? होगी कोई ऐसी वैसी

इमीलिया हाय!

इआगो : कैसी मूर्ख पत्नी है!

इमीलिया बस यही! लो, इस रूमाल के बदले मे मुझे क्या दोगे?

इआगो कैसा रूमाल?

इमीलिया कैसा रूमाल! वही जो ऑथेलो ने डैसडेमोना को पहले-

पहले दिया था, वही जो तुम मुझसे अक्सर चुरा लेने को कहते थे।

इआगो · क्या तुमने उसे चुरा लिया है ?

इमीलिया · नही, उससे अनजाने ही यह गिर गया था और किस्मत से क्योंकि मैं यहाँ थी, मैंने इसे उठा लिया। यह देखो, यह रहा।

इआगो : शाबाश ! लाओ, मुझे दो !

इमीलिया : तुम इसका क्या करोगे कि मुझसे बार-बार इसको लाने के लिये कहा करते थे ?

इआगो . (छीनकर) तुम्हे उस सबसे क्या ?

इमीलिया : यदि तुम्हारे लिये इसका कोई विशेष महत्त्व नही है तो मुझे लौटा दो। अगर उसे नही मिलेगा तो सचमुच पागल हो जायेगी।

इआगो यह न कहना कि तुम्हें इसके बारे मे कुछ भी पता है। मुझे इससे बहुत काम है। तुम जाओ, मुझे सोचने दो।

[इमीलिया का प्रस्थान]

मैं इस रूमाल को कैसियो के निवासस्थान में छोड़ आऊँगा और उसे यह मिलेगा। ईर्ष्यालु प्रकृति के लोगो के लिये बहुत ही साधारण बातें भी शास्त्रो की भाँति प्रमाण बन जाती हैं। इस रूमाल का गहरा प्रभाव पड़ सकता है। मेरे विषैले तर्कों से ऑथेलो फुंक ही रहा है। भयानक विचार तो वास्तव में विष की भाँति ही होते हैं। पहले तो पता नही चलता कि उनमे क्या भयानकता है किन्तु कुछ ही समय के बाद जब वे रक्त पर अपना प्रभाव डालते हैं तब गंधक की भाँति सुलग उठते हैं। यह लो। वह आ ही रहा है।

[ऑथेलो का प्रवेश]

इआगो : कोई भी निद्रा के वशीभूत करने वाली औषधि, कोई भी विस्मृत करने वाली वस्तु अब मुझे कलवाली नीद वापिस नही देगी।

आॅथेलो . कितना विश्वासघात ! कितना धोखा !

इआगोः : क्या है सेनानायक ! सदा ही अपने विचार में उसी बात को क्यो रखते हो ?

आॅथेलो : चले जाओ ! तुम्ही ने मुझे इस यातना मे डाला है। धोखा खाते रहना, उसको जान लेने की तुलना मे कही अधिक अच्छा है।

इआगो : क्यो स्वामी ! क्या हुआ !

आॅथेलो : मुझे क्या पता चलता कि वह गुप्त रूप से अपनी वासना को कैसे शात करती है ? न मैं कभी ऐसी बात को स्वप्न में भी सोच सकता था। मेरी तो इससे कोई हानि नही होती है ! मुझे अच्छी नीद आती, मै प्रसन्न और मस्त रहता। मैने तो कैसियो को उसका चुवन लेते नही देखा था ! यदि लुटने वाले को पता ही न चले कि वह लुट रहा है तो उसका न जानना ही अच्छा है और इस तरह वह लुटता ही नही।

इआगो : मुझे यह सुनकर वेदना होती है।

आॅथेलो किंतु अब सदा के लिये मेरी शाति चली गई है। चला गया है सतोष ! वे सेनाएँ, वे महायुद्ध जो महत्त्वाकाक्षा को अच्छाई मे बदलते हैं सब मेरे लिये विदा हो गये हैं। वे हिनहिनाते अश्व, तुरही की तीखी ध्वनि, प्रतिध्वनित भेरी-निनाद, और कर्णभेदी वाद्यस्वर, राजसी पताका, और युद्ध के वैभव और आवेश, सब मेरे लिये अपरिचित हो गये हैं। ओ भीषरग तोप ! तू जो अपने कर्कश कण्ठ से अमर प्रेम का भीषरग गर्जन करती थी ! विदा ! आॅथेलो अब योद्धा नही रहा !

इआगो : स्वामी ! क्या यह सभव है ?

आॅथेलो : ओ धूर्त्त ! पहले तुझे प्रमाण देना होगा कि मेरी स्त्री सचमुच विश्वासघातिनी है। मुझे पक्का प्रमाण चाहिये। वर्ना मैं कसम से

कहता हूँ कि तेरे लिये कुत्ता होना बेहतर होता बनिस्बत इसके कि तू मेरे एक बार भड़क कर उठ खडे होने वाले गुस्से का नतीजा झेले।

इआगो क्या बात यहाँ तक पहुँच गई ?

ऑथेलो : या तो मुझे दिखा या मुझे प्रमाण दे कि फिर शक की कोई गुंजायश नही रहे। अन्यथा देख ! तेरा जीवन ही उत्तर देगा ।

इआगो . मेरे वीर स्वामी !

ऑथेलो : यदि तू उसके पातिव्रत पर लांछन लगाता है और मुझे पीडित करता है, तो यह न समझ कि तू दण्डहीन ही रह जायेगा। यदि तेरा अभियोग असत्य है तो तू भले ही भयानक से भयानक काम कर कि आकाश रो उठे और धरती आश्चर्य्य से भर जाये, किंतु इससे बढ कर पाप तू ससार मे नही कर सकता कि उसके नाम पर कलंक लगाये।

इआगो . हे भगवान ! मुझे क्षमा कर ! क्या आप मे न्यायशीलता नही, या सत्-असत् विवेक नही रहा। ईश्वर आपकी सहायता करे। मुझे नौकरी से छुट्टी दे। (स्वयं से) ओ मूर्ख ! ईमानदारी, प्रेम और स्वामि-भक्ति से प्रेरित होकर तू क्या कर बैठा कि आज तेरे गुण ही पाप बन गये। ओ दुरित संसार ! देख ! ईमानदारी और सचाई मे कितनी हानि है। आपने मुझे यह शिक्षा दी है, इसके लिये मैं आप का आभारी हूँ। अब मै कोई मित्र ही नही बनाऊँगा क्योकि प्रेम ही इतनी हानि का कारण बनता है ।

[जाने को होता है।]

ऑथेलो : नही जाओ मत। तुम्हे ईमानदार होना चाहिये ।

इआगो : नही, मुझे बुद्धिमान होना चाहिये क्योकि ईमानदारी ही बेवकूफी है। वह जिसके कार्य्य करती है उसी को खो देती है।

ऑथेलो जो भी हो, मै अभी तक अपनी पत्नी को ईमानदार समझता हूँ और फिर भी मुझे सदेह होता है। मुझे लगता है तुम ठीक हो, परतु लगता है, नही, ऐसा नही है। मुझे प्रमाण तो मिलना चाहिये। पवित्र चद्रमा के समान उसका उज्ज्वल मुख अब मेरे मुख की भाँति ही काला हो गया है। यदि ससार मे प्रतिहिंसा को पूर्ण करने का कोई साधन है तो वह दण्डहीना नही रहेगी। किंतु मैं अनिश्चय से मुक्त होना चाहता हूँ।

इआगो मुझे लगता है स्वामी! आपको आवेश ने दबा लिया है। मुझे दुख है कि मैंने आपको इस ओर से सचेत ही क्यो किया। किंतु क्या आप सचमुच इस विषय मे सतुष्ट होना चाहते है?

ऑथेलो निश्चय।

इआगो किंतु स्वामी! मैं आपको कैसे सतुष्ट करूँ? यह तो असभव है। आप देखिये न? न वे बकरो की भाँति मुखर है, न बदरो की भाँति चपल, न भेडियो की भाँति ही कि मैं उन्हे दिखा देता। किंतु यदि अभियोग और घटनात्मक साक्ष्य ही अलम् है जिनसे सत्य का द्वार खुलता है और उन्ही से आपका सतोष हो जाये तो मै प्रस्तुत हूँ।

ऑथेलो मुझे इसका पक्का प्रमाण दो कि वह विश्वासघातिनी है।

इआगो . मै यह काम पसद नही करता, किंतु क्योकि मैं इस विषय मे इतना फँस गया हूँ, और वह भी प्रेम और ईमानदारी के कारण, तो अब यही सही। मै अभी कुछ दिन हुए कैसियो के निकट सोया था और डाढ के दर्द के कारण नीद नही आ पायी थी। बहुत-से लोग इतने सयमहीन होते हैं कि वे सोते मे बडबडाते है और अपनी भीतरी बात कह जाते हैं। ऐसा ही कैसियो भी है। मैंने उसे स्वप्न मे कहते सुना प्रिये डैसडेमोना! हमें चौकस रहना चाहिये और

इस अपने प्रेम को छिपाये रखना चाहिये। और श्रीमान् उसके वाद उसने नीद मे ही मेरा हाथ पकड़ कर दवाया और वोला आह सुन्दरी! और तव उसने ऐसे चुवनो की झडी लगा दी और साथ ही वोला 'ओ दुर्भाग्य! तू ने इसे उस मूर के पल्ले वाँध दिया!

ऑथेलो : भयानक! विकराल!

इआगो : किंतु यह तो एक स्वप्नमात्र था।

ऑथेलो : किंतु कोई ऐसी घटना अवश्य हुई होगी! यदि यह स्वप्नमात्र ही है तो भी इससे पाप का कितना सदेह होता है!

इआगो यह तो स्वप्न ही है किंतु है तो सदेहजनक। जहाँ प्रमाण नही है वहाँ यही तो सहायक होता है।

ऑथेलो : मै उस स्त्री के टुकडे-टुकड़े कर दूंगा।

इआगो : नही, वुद्धि से काम लीजिये! हमने अभी उसे कुछ भी वुरा करते नही देखा। हो सकता है वह सच्चरित्रा ही हो। किंतु यह वताये, क्या आपने अपनी पत्नी के हाथ मे कभी-कभी एक ऐसा रूमाल नही देखा है जिस पर रगो से स्ट्रॉवेरी फलों की तस्वीरे-सी वनी है?

ऑथेलो : वही तो उसको मैने प्रथम प्रेमोपहार के रूप मे दिया था।

इआगो : मुझे पता नही था, किंतु मै निश्चय से कह सकता हूँ कि मैने कैसियो को उससे अपनी दाढी पोछते देखा था।

ऑथेलो : यदि यह सत्य है

इआगो : वही रूमाल था, या कोई और, पर अगर वह डैसडेमोना का ही है तो वह उसके विरुद्ध एक प्रमाण ही है।

ऑथेलो . काश, उस गुलाम कैसियो की ४०,००० जिंदगियाँ होती! एक जिंदगी से मेरे वदले की आग कैसे ठडी हो सकेगी! अव मुझे पूरी वात का विश्वास हुआ। देखो इआगो! अव मैं अपने सारे प्रेम को

विलीन किये देता हूँ। अब वह लुप्त हो रहा है और उसका स्थान नरक से निकली हुई काले रग की प्रतिहिंसा ले रही है। अरे प्रेम! मेरे हृदय के सिंहासन से उतर कर गहरी घृणा को स्थान दे दे। विषाक्त विचारो के भार से ओ मेरे वक्ष! भर जा! फूल उठ! सर्प की-सी विषैली जिह्वा! लपलपा उठ!

इआगो : शात रहे।

आॅथेलो : रक्त चाहिये इआगो! मुझे लहू चाहिये!!

इआगो : शात भी रहिये! सभव है आपका विचार बदल जाये।

आॅथेलो : नही इआगो! कभी नही। जिस प्रकार काले सागर की बर्फीली धारा कोई भाटा नही जानती और निरतर मारमोरा समुद्र और डार्डेनिलीज़ की ओर बहती चली जाती है, इसी प्रकार मेरे खूनी विचार भी विकराल गति से पीछे मुड कर नही देखेंगे और न उन्हे कभी प्रेम का भाटा ही कम करेगा, जब तक कि उचित महान् प्रतिहिंसा ही उन्हें निगल नही लेगी। आकाश के ज्वलत पिण्डो की शपथ! (झुक कर) मैं एक पवित्र प्रतिज्ञा के लिये उचित शपथ ग्रहण करता हूँ कि मैं अपने वचनो को अत तक निबाहूँगा।

इआगो : अभी मत उठें। क्योकि मैं भी आपके साथ ही शपथ ग्रहण करूँगा। (झुक कर) ओ आकाश के ज्वलत पिण्डो! ओ सर्वव्यापी तत्त्वो! साक्षी बनो कि मै अपने सारे विवेक और शारीरिक शक्ति से इस आॅथेलो की सेवा करूँगा जिसके साथ अन्याय हुआ है। वह मुझे आज्ञा दे और कैसा भी भयानक, खूनी ही काम क्यो न हो, उसकी आज्ञा का पालन करना ही मेरी न्याय की ओर खडी होने वाली चेतना का पर्य्याय बने।

[दोनों खड़े होते हैं।]

ऑथेलो . तुमने मेरे साथ प्रतिज्ञा की है, मैं केवल धन्यवाद ही नही देता, किंतु भविष्य में इसका उचित पुरस्कार भी दूंगा। अभी से कार्य्य प्रारम्भ करो। तीन दिन में सूचना दो कि कैसियो जीवित नहीं रहा।

इआगो : यद्यपि कैसियो मेरा मित्र है, फिर भी आपके लिये मै यह भी करने को तैयार हूँ। किंतु डैसडेमोना को जीवित रहने दें।

ऑथेलो : मरने दो उसे। तुम जाओ ! मुझे सोचने दो कि किस आसान तरीके से मै इस खूबसूरत शैतान को खत्म कर सकूँ। आयंदा तुम मेरे लेफ्टिनेट हो।

इआगो : मै तो सदा ही आपका हूँ।

[प्रस्थान]

दृश्य ४

[दुर्ग के सामने]

[डैसडेमोना, इमीलिया और विदूषक का प्रवेश]

डैसडेमोना : क्यो जी तुम्हे पता है कैसियो कहाँ है ?[1]

विदूषक : क्या जाने कहाँ है?

---

१. यहां मूल में Lies शब्द का प्रयोग हुआ है। Lies के दो अर्थ हैं—कहाँ पड़ा है अर्थात् कहां है और दूसरा अर्थ है—कहाँ झूंठ बोल रहा है, क्योकि Lie के दो अर्थ हैं। डैसडेमोना Lies का अर्थ लेती है—कहाँ है और विदूषक अर्थ लेता है—कहां झूंठ बोल रहा है। इससे हास्य उत्पन्न होता है। यह कोई उच्चकोटि का हास्य नहीं है। किंतु हमें याद रखना चाहिये कि शेक्सपियर के नाटक खेले जाते थे और दर्शकों में सभी दर्जे के लोग आते थे। उन्हें भी उसे संतुष्ट करना पड़ता था। अनुवाद में हम हिंदी में ऐसा शब्द नहीं ढूंढ सके जिसका Lies का-सा प्रयोग हो सके और दोनों अर्थ एक साथ निकल सकें। इसलिये हमने परिवर्त्तन किया है।

डैसडेमोना क्यो ?

विदूषक वह एक योद्धा है और लडाकू का गलत पता देना मानो मौत को बुलाना है।

डैसडेमोना चलो हटो। कहाँ रहता है वह !

विदूषक इसे वताने का अर्थ है मैं झूँठ बोलूँ।

डैसडेमोना इसका मतलब ?

विदूषक मैं नही जानता वह कहाँ रहता है और गलत बता दूँ तो वह झूँठ ही है।

डैसडेमोना तुम उसके बारे मे पूछताछ कर पता चला सकते हो ?

विदूषक मै उसके लिये सारे जहान से सवाल कर सकता हूँ और इस तरीके के सवालो से आपको जवाब देने लायक बन सकता हूँ।

डैसडेमोना तो उसकी तलाश करो। उसे यहाँ आने की आज्ञा दो। उससे कहना, मैने उसकी बात अपने स्वामी तक पहुँचा दी है और आशा करती हूँ कि सब ठीक ही होगा।

विदूषक . यह काम तो इसान की अक्ल के दायरे के भीतर का ही है। और इसलिये मै इसे करने की कोशिश कर सकता हूँ।

[प्रस्थान]

डैसडेमोना न जाने मेरा रूमाल कहाँ खो गया, इमीलिया ?

इमीलिया मै नही जानती श्रीमती।

डैसडेमोना मुहरो से भरा मेरा बटुआ खो जाता, तो भी, सच कहती हूँ, मुझे इतना अफसोस न होता जितना उसके खो जाने से हुआ है। किंतु मेरे पति वीर और उदात्त भावनाओ से ओतप्रोत हैं। उनमे क्षुद्र ईर्ष्या नही है। अन्यथा उनमें सदेह और ईर्ष्या जगाने को तो यही वहुत है।

इमीलिया क्या वे ईर्ष्यालु नही ?

डेसडेमोना : कौन ? वे ? मैं समझती हूँ जहाँ उनका जन्म हुआ था प्रचण्ड सूर्य ने ऐसे विकारों का पहले ही शोषण कर लिया था।

इमीलिया . लीजिये, वे आ रहे हैं।

डेसडेमोना . मैं अब उन्हे तब तक नही छोड़ूंगी जब तक वे कैसियो को नही बुला लेते।

[ऑथेलो का प्रवेश]

प्रणाम स्वामी! सानंद तो हैं?

ऑथेलो आह श्रीमती! (स्वगत) ढोग करना कितना कठिन है (प्रगट) कैसी हो डेसडेमोना! अच्छी तो हो!

डेसडेमोना : मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ मेरे दयालु स्वामी!

ऑथेलो मुझे अपना हाथ दो प्रिये। अरे! यह इतना पसीजा हुआ क्यों है?

डेसडेमोना इसे न दीर्घ आयु ने छुआ है, न किसी दुर्भाग्य ने ही।

ऑथेलो तुम्हारे हाथ का पसीजापन बताता है कि तुम्हारा हृदय भी बहुत शीघ्र द्रवित हो जाता है। कितना गर्म है। पसीजा हुआ। यह हाथ बताता है कि तुम्हे एकात में व्रत, उपवास, तप और भक्ति-पूर्ण अन्य कार्य्यों मे समय बिताना चाहिये। क्योंकि मुझे इसमे एक ऐसी तरुण वासनामय आत्मा की झलक मिल रही है जो शीघ्र ही लोभ के वशीभूत होकर जाल में फँस सकती है। सचमुच कितना दयालु और स्निग्ध हृदय है।

डेसडेमोना अब जो चाहे कह लीजिये पर यही वह हाथ है जिसने मेरा हृदय आपको दिया था।

ऑथेलो · कैसा दयालु हाथ है। पहले समय मे जब हाथ मिलते थे तब हृदय भी मिल जाते थे किंतु आजकल के विवाहो में हृदय नही मिलते केवल हाथ ही मिलते हैं।

डैसडेमोना क्यो ?

विदूषक वह एक योद्धा है और लडाकू का गलत पता देना मानो मौत को बुलाना है।

डैसडेमोना चलो हटो। कहाँ रहता है वह !

विदूषक इसे वताने का अर्थ है मैं झूठ बोलूं।

डैसडेमोना इसका मतलब ?

विदूषक मै नही जानता वह कहाँ रहता है और गलत बता दूं तो वह झूठ ही है।

डैसडेमोना तुम उसके बारे मे पूछताछ कर पता चला सकते हो ?

विदूषक मैं उसके लिये सारे जहान से सवाल कर सकता हूँ और इस तरीके के सवालो से आपको जवाब देने लायक बन सकता हूँ।

डैसडेमोना तो उसकी तलाश करो। उसे यहाँ आने की आज्ञा दो। उससे कहना, मैंने उसकी बात अपने स्वामी तक पहुँचा दी है और आशा करती हूँ कि सब ठीक ही होगा।

विदूषक यह काम तो इसान की अक्ल के दायरे के भीतर का ही है। और इसलिये मै इसे करने की कोशिश कर सकता हूँ।

[प्रस्थान]

डैसडेमोना न जाने मेरा रूमाल कहाँ खो गया, इमीलिया ?

इमीलिया मै नही जानती श्रीमती।

डैसडेमोना मुहरो से भरा मेरा बटुआ खो जाता, तो भी, सच कहती हूँ, मुझे इतना अफसोस न होता जितना उसके खो जाने से हुआ है। किंतु मेरे पति वीर और उदात्त भावनाओ से ओतप्रोत हैं। उनमे क्षुद्र ईर्ष्या नही है। अन्यथा उनमें सदेह और ईर्ष्या जगाने को तो यही वहुत हैं।

इमीलिया क्या वे ईर्ष्यालु नही ?

ऑथेलो : यह बिल्कुल सत्य है। वह एक जादुई रूमाल है। एक ऐसी पैगम्बर थी जिसने सूर्य्य के दो सौ भ्रमण देखे थे (अर्थात् २०० वरस की थी) उसने तो उसे सिया था और वह भी कब ? तब जब कि उस पर ईश्वरीय आवेश छाया था। हाल-सा आया हुआ था। वे कीड़े जिन्होने इसका रेशम उगला था, वे भी पवित्र थे। और गंधादिक द्रव्य लगाकर सुरक्षित किये हुए शवो—कुमारियो के शवो—के हृदय-प्रदेश मे भिगो कर इसे रँगा गया था।

डैसडेमोना : क्या यह सब सच है ?

ऑथेलो : बिल्कुल ! तभी कहता हूँ उसके बारे मे सदैव ध्यान रखना।

डैसडेमोना · अच्छा होता ऐसा रूमाल मुझे मिलता ही नही।

ऑथेलो : है ? क्या कहती हो ?

डैसडेमोना : इतने जोर से और डाँट कर क्यों बोल रहे हो ?

ऑथेलो : वह खो गया ! वह नही है ? बोलो ! क्या वैसे ही इधर-उधर हो गया है ?

डैसडेमोना : भगवान रक्षा करे !

ऑथेलो · यह क्या कहा ?

डैसडेमोना · खोया तो नही है, लेकिन खो जाये तो ?

ऑथेलो : कैसे ? कहाँ ?

डैसडेमोना : मै कहती हूँ खोया नही है।

ऑथेलो · तो लाओ। मुझे ला के दिखाओ।

डैसडेमोना : दिखा दूंगी, पर इस वक्त नही। मै जानती हूँ यह मेरी प्रार्थना को टालने की तरकीब है। मैं अनुभव करती हूँ कैसियो को फिर बुला लिया जाये।

ऑथेलो : पहले रूमाल लाओ। मेरे दिमाग मे शक पैदा हो रहे हैं।

डैसडेमोना : हाँ-हाँ। ठीक है। मैं कहती हूँ तुम्हे कैसियो से अधिक

डैसडेमोना मै इस विषय मे क्या कह सकती हूँ। चलिये भी। आपको अपना वचन तो याद है ?

ऑथेलो कौन-सा वचन प्रियतमे!

डैसडेमोना : मैंने आपसे बाते करने कैसियो को बुलवाया है।

ऑथेलो : मेरी आँख दुख रही है। बडी तकलीफ है। तनिक पोछने को अपना रूमाल तो देना।

डैसडेमोना : यह लो स्वामी।

ऑथेलो वह जो मैने दिया था तुम्हे।

डैसडेमोना : वह तो मेरे पास नही रहा।

ऑथेलो : नही है ?

डैसडेमोना : हाँ स्वामी! नही है।

ऑथेलो. यह तो एक अपराध है। वह रूमाल मेरी माता को एक मिस्री स्त्री ने दिया था जो कि जादूगर थी और मनुष्य की आतरिक भावनाओ को पढ़ लेती थी। उस स्त्री ने मेरी माता से कहा था कि जब तक वह उसे अपने पास रखेगी, वह आकर्षक बनी रहेगी और मेरे पिता को अपने वश मे ऐसे कर लेगी कि वह उसे सदैव प्रेम करेगा। किंतु यदि वह उसे खो देगी या किसी और को भेंट दे देगी तो मेरा पिता उससे घृणा करने लगेगा और प्रेम और वासना की परितृप्ति के लिये और ही आधार ढूढने लगेगा। मरते समय माँ ने इसे मुझे दिया था और कहा था कि जब कभी भी मैं विवाह करूँ इसे अपनी स्त्री को भेट मे दूं। यही मैने किया और इसीलिये तुम उसे अपनी आंखो का तारा समझ कर प्यार करो। वह खो जायेगा तो तुम्हारी हानि होगी और ऐसी कि कोई उसका मुकाबला नही कर सकेगा।

डैसडेमोना : क्या ऐसा हो सकता है ?

परिणाम को भी शीघ्र जानना चाहता हूँ। यदि मेरा अपराध इतना बडा है कि न मेरी अतीत की सेवाएँ काम आती है, न वर्त्तमान का दुर्भाग्य ही, न भविष्य में मर्यादा से रहने की मेरी प्रतिज्ञा ही, न मेरा पश्चात्ताप ही मुझे उनके प्रेम का पात्र फिर से बना सकता है, तो कम से कम इतना अधिकार तो मै चाहता ही हूँ कि इस विषय मे जो भी हो वह तो मुझे बता दिया जाये। उससे यह तो होगा कि मै सतुष्ट हो जाऊँगा और परिस्थितियों के सामने समर्पण कर दूँगा, चाहे भाग्य ने मेरे लिये कैसी ही भिक्षा क्यों न आयोजित कर रखी हो।

डेसडेमोना हाय वीर कैसियो! मैने स्वामी से प्रार्थना की किन्तु उन पर प्रभाव नही पड़ा। वे वैसे नही है जैसे पहले थे। यदि अपनी बदलती प्रकृति के अनुरूप ही उनकी आकृति मे भी परिवर्त्तन आ गया होता तो मै उन्हे पहचान भी नही पाती। तुम्हारी ओर से मै जो कुछ कह सकती थी वह सब कह चुकी हूँ और बार-बार कहने मे वे क्रुद्ध ही हुए है। इसीलिये तुम्हे कुछ दिन धैर्य्य से काम लेना चाहिये। मै जो कुछ कर सकती हूँ अवश्य करूँगी। तुम्हारे लिये उतना करूँगी जितना अपने लिये भी नही करती। बस अब यही समझ लो।

इआगो क्या स्वामी आज अत्यन्त क्रुद्ध हैं?

इमीलिया वे यहाँ से बहुत ही अस्त-व्यस्त-से असन्तुष्ट-से गये है।

इआगो क्या वे भी कभी अपने ऊपर से अधिकार खो सकते है? मै उनके निकट खड़ा रहा हूँ और उनके समीप ही तोपो के गोले सेना पर बरसते रहे हैं, उन्होंने अपने भाई पर ही गोला चलाया है, किन्तु फिर भी मैंने उन्हे विचलित नही देखा। वे सदैव स्थिरचेतस थे। उनके इतने क्रुद्ध होने का कोई कारण अवश्य रहा होगा। मै

उपयुक्त कोई व्यक्ति नही मिलेगा।

आॅथेलो : रूमाल !

डैसडेमोना : मैं कहती हूँ कैसियो की बात करो न ?

आॅथेलो · रूमाल !

डैसडेमोना · वह व्यक्ति जो सदैव तुम्हारे प्रेम पर निर्भर रहा और जिसने तुम्हारे साथ विपत्तियो का सामना किया

आॅथेलो रूमाल !

डैसडेमोना : सचमुच ! दोपी तुम्ही हो !

आॅथेलो लानत है !

[प्रस्थान]

इमीलिया क्या ये ईर्ष्यालु नही हैं ?

डैसडेमोना . ऐसा तो मैने कभी नही देखा। निश्चय ही इस रूमाल में कुछ अद्भुत बात अवश्य है। मुझे उसके खो जाने का अत्यन्त खेद है।

इमीलिया एक-दो वरस मे मनुष्य की वास्तव प्रकृति का परिचय नही हो जाता। सारे पुरुष पेट हैं और सारी स्त्रियाँ भोजन है। वे वडी भूख से हमे खाते है और जब पेट भर जाता है तव हमे छोड देते हैं। वह लो। मेरे पति और कैसियो आ रहे है।

[कैसियो और इआगो का प्रवेश]

इआगो और कोई तरीका नहीं है। वस ये ही कर सकती है। लो तुम्हारा सौभाग्य ! जाओ प्रार्थना करो।

डैसडेमोना कैसे हो वीर कैसियो ? क्या समाचार है ?

कैसियो देवी ! मेरी वही प्रार्थना है। मै अनुनय करता हूँ कि आपकी सशक्त सहायता से मैं फिर स्वामी का प्रेम और विश्वास प्राप्त कर सकूं। मैं उनका हृदय से सम्मान करता हूँ। मै तो वुरे से वुरे

इमीलिया : ऐसा ही हो।

डेसडेमोना मै उन्हे देखती हूँ। कैसियो ! तुम इधर-उधर घूम लो। यदि मै उन्हे ठीक पाऊँगी तो फिर तुम्हारी बात चलाऊँगी और जहाँ तक मुझसे हो सकेगा तुम्हारे लिये प्रयत्न करूँगी।

कैसियो · मै हृदय से आपका आभार स्वीकार करता हूँ देवी।

[डेसडेमोना और इमीलिया का प्रस्थान]

[वियान्का का प्रवेश]

वियान्का : अरे ! मेरे दोस्त ! कैसियो !

कैसियो : तुम घर से दूर क्या कर रही हो ? मेरी प्रिये ! सुन्दरी वियान्का ! अच्छी तो हो ! सच प्रिये ! मैं तो तुम्हारे ही घर आ रहा था !

वियान्का : और मैं तुम्हारे निवासस्थान की ओर जा रही थी कैसियो ! हफ्ते भर से तुम नही आये। सात दिन, सात रातें ! उफ कितना समय निकाल दिया तुमने ? और प्रेमियो के घटे ! घडियाल में नही वजते ये घटे, हृदय मे वजते हैं ! गिनते-गिनते थक गई।

कैसियो · क्षमा करो वियान्का ! मुझे मुसीवतों ने परेशान कर दिया है। यह जो मेरी लंवी गैरहाजिरी रही है इसका मुआवज़ा मैं किसी ऐसे वक्त ज़रूर चुका दूंगा जिसमें मुझे ज़रा और आज़ादी होगी। प्रिये वियान्का ! तव तक मेरे लिये तुम इस रूमाल की नकल काढ देना।

[डेसडेमोना का रूमाल देता है।]

वियान्का · अरे ! यह तुम्हे कहाँ मिला कैसियो ! यह वात है। तव तो तुम्हारी अनुपस्थिति का कारण है ! किसी नयी मित्र से उपहार लेने में लगे रहते हो ? यह वात है ? समझ गई।

कैसियो : क्या फिजूल की वाते करती हो ! जिस शैतान ने तुम्हारे मुंह

जाता हूँ उनके पास ।

डैसडेमोना : मै कहती हूँ जरूर जाओ ।

[इआगो का प्रस्थान]

अवश्य ही राज्य-सबधी कोई बात है । या तो वेनिस से कोई सवाद आया है या कोई गुप्त षड्यत्र है जो हाल मे ही साइप्रस मे पकडा गया है जिसने उनके दृढ चित्त को विचलित कर दिया है । महत्त्वपूर्ण घटनाओ से विचलित बुद्धि होकर मनुष्य साधारण विषयो मे झगड पडते हैं, जो किसी अन्य अवसर पर उन्हें क्रुद्ध नही कर पाते । उन पर तो वास्तव मे उन्हें असली क्रोध होता भी नही । देखो न ? हमारी छोटी उगली मे भी दर्द होता है तो सारे शरीर को वेदना की अनुभूति होने लगती है । नही । हमे मनुष्यो को अतिमानव नही समझना चाहिये, न उनसे ऐसे व्यवहार की आशा ही करनी चाहिये जैसा कि दूल्हा दुलहिन से करता है । मुझे ही दण्ड मिलना चाहिये । इमीलिया! मैं ही उनको अनावश्यक रूप से उत्तेजित करने वाली हूँ क्योकि मै उन्हे कठोर कह रही हूँ किंतु अब मै देखती हूँ मैंने उन पर अनजाने ही मिथ्या दोषारोपण किया है और वे निर्दोष हैं ।

इमीलिया ईश्वर से प्रार्थना करो कि किसी राज्य-विषयक बात से ही वे ऐसे है, न कि तुम पर ईर्ष्या या सन्देह के कारण ।

डैसडेमोना कैसा बुरा दिन है । मैंने तो उन्हे कभी भी क्रुद्ध नही किया।

इमीलिया किंतु ईर्ष्यालु व्यक्ति तो ऐसे उत्तर से सन्तुष्ट नही होते । वे किसी विशेष कारण से तो ईर्ष्या करते नही, वे तो ऐसे होते ही हैं क्योकि होते ही वे ईर्ष्यालु हैं । ईर्ष्या एक राक्षसी है, जो स्वयजात और स्वय को खाकर ही जीवित रहती है ।

डैसडेमोना ईश्वर ऑथेलो के मस्तिष्क को इसके प्रवाह से बचाये रखे ।

इमीलिया · ऐसा ही हो।

डैसडेमोना : मै उन्हे देखती हूँ। कैसियो ! तुम इधर-उधर घूम लो। यदि मै उन्हे ठीक पाऊँगी तो फिर तुम्हारी बात चलाऊँगी और जहाँ तक मुझसे हो सकेगा तुम्हारे लिये प्रयत्न करूँगी ।

कैसियो : मै हृदय से आपका आभार स्वीकार करता हूँ देवी।

[डैसडेमोना और इमीलिया का प्रस्थान]

[वियान्का का प्रवेश]

वियान्का : अरे ! मेरे दोस्त ! कैसियो !

कैसियो . तुम घर से दूर क्या कर रही हो ? मेरी प्रिये ! सुन्दरी वियान्का ! अच्छी तो हो ! सच प्रिये ! मैं तो तुम्हारे ही घर आ रहा था !

वियान्का : और मैं तुम्हारे निवासस्थान की ओर जा रही थी कैसियो ! हफ़्ते भर से तुम नही आये। सात दिन, सात राते ! उफ कितना समय निकाल दिया तुमने ? और प्रेमियो के घंटे ! घडियाल में नही वजते ये घंटे, हृदय मे वजते है ! गिनते-गिनते थक गई।

कैसियो क्षमा करो वियान्का ! मुझे मुसीवतो ने परेशान कर दिया है। यह जो मेरी लवो गैरहाजिरी रही है इसका मुआवज़ा मैं किसी ऐसे वक्त ज़रूर चुका दूँगा जिसमे मुझे ज़रा और आजादी होगी। प्रिये वियान्का ! तव तक मेरे लिये तुम इस रूमाल की नकल काढ देना।

[डैसडेमोना का रूमाल देता है।]

वियान्का अरे ! यह तुम्हे कहाँ मिला कैसियो ! यह वात है। तव तो तुम्हारी अनुपस्थिति का कारण है ! किसी नयी मित्र से उपहार लेने मे लगे रहते हो ? यह वात है ? समझ गई।

कैसियो : क्या फिजूल की वाते करती हो ! जिस शैतान ने तुम्हारे मुंह

मे ऐसे विचार रखे है उन्हे उसी पर उगल दो। शायद तुम्हे इसकी जलन है कि इसे मुझे किसी प्रेमिका ने भेट कर दिया है कि यह यादगार बनी रहे। नही बियान्का! ऐसी बात नही है।

बियान्का . तो बताओ फिर ? यह है किसका ?

कैसियो : मैं नही जानता प्रिये! मुझे अपने कमरे में पडा मिला। इसके ऊपर अच्छी कढाई है। इससे पहले कि इसकी मालकिन इसे वापिस माँग बैठे, मै चाहता हूँ मेरे पास इसकी एक नकल रह जाये। यह तुम कर दो न ? और इस समय चली जाओ।

बियान्का क्यो तुम अकेले रहोगे ?

कैसियो : मैं यहाँ जनरल की सेवा मे हूँ और न मेरे लिये यह ठीक ही है, न फायदेमन्द ही कि एक औरत के साथ देखा जाऊँ।

बियान्का क्यो उसमे क्या बात है ?

कैसियो तुम यह न समझो कि मै तुम्हे नही चाहता।

बियान्का . पर तुम मेरी परवाह नही करते। यह भी नही कि दस कदम मुझे पहुँचा ही देते! बताओ न ? आज रात को आओगे ?

कैसियो · मै बस थोडी दूर ही चल सकता हूँ क्योकि मुझे फिर जनरल की सेवा मे उपस्थित रहना है। मैं शीघ्र ही तुमसे निश्चय मिलूंगा।

बियान्का : अच्छी बात है। मुझे भी परिस्थिति के अनुसार ही चलना होगा।

[प्रस्थान]

चौथा अंक

दृश्य १

[साइप्रस-दुर्ग के सामने। ऑथेलो और इआगो का प्रवेश]

इआगो क्या सचमुच आप यही सोचते है ?

ऑथेलो . सोचता हूँ इआगो।

इआगो : क्या एकात मे चुवन करना मात्र ?

ऑथेलो : किंतु अनधिकृत चुवन।

इआगो : या मित्र के साथ शैय्या पर नग्न होकर घटे भर या ज्यादा रहना · उसमे हानि नही ?

ऑथेलो : नग्न सहशयन, इआगो ? और उसमे भी हानि नही ? यह तो शैतान के सामने भी ढोग करने के समान है। जो ऐसा भलमनसाहत के लिये भी करते हैं, शैतान उनकी शराफत को ललचाता है, और वे दैव को ललकारते हैं।

इआगो : तब वे कुछ नही करते, यह तो मामूली बात हुई किंतु यदि मैं अपनी स्त्री को एक रूमाल दूं····

ऑथेलो . क्या कहा ?

इआगो : क्यो श्रीमान्! वह तो उसी का हो गया और जब उसका ही है तो वह फिर जिसे चाहे उसी को दे दे· ··

ऑथेलो : वह स्वयं अपने सम्मान और पातिव्रत की भी तो रक्षिका है। क्या वह अपने सम्मान के साथ भी ऐसी ढिलाई दिखा सकती है ?

इआगो : उसका सम्मान एक भावनामात्र है जिसे देखा नही जा सकता। बहुधा ऐसे भी होते है जिनका वास्तव में कोई सम्मान नहीं होता परंतु लोग उनके विषय में कुछ और ही सोचा करते हैं। लेकिन

जहाँ तक उस रूमाल की बात है

ऑथेलो : हे भगवान ! कितना अच्छा होता कि मैं उसे भूल जाता ! तुम फिर याद दिला दी मुझे और फिर मँडराती हुई मुझ पर छा गई जैसे कोई गिद्ध रोगो से भरे किसी दुखी घर पर सबकी मृत्यु की सूचना देता हुआ मँडराने लगता है।

इआगो क्यो क्या बात है ?

ऑथेलो अब वह उतना सरल नही।

इआगो : यदि मैं कह देता कि मैंने उसे आपकी स्त्री के साथ अनाचार करते देखा है, तो क्या हो जाता ? या उसे ऐसा कहते हुए ही सुन पाता ? ससार मे ऐसे धूर्त्त भी हैं जो आपकी हानि कर दें और या तो अपने स्वभाव के कारण या किसी वासनामय स्त्री के कारण ही ऐसा कर बैठे और फिर अपने पर काबू न रख कर उसकी इधर-उधर चर्चा भी करें

ऑथेलो क्या उसने कुछ कहा है ?

इआगो हाँ स्वामी, कहा है। किंतु आप इसको भी पक्की मान लें कि वह कसम खाकर कह देगा कि उसने कभी कहा ही नही ।

ऑथेलो उसने कहा क्या है ?

इआगो . मैं नही जानता देव ! कि कैसे कह दूं उसे !

ऑथेलो : क्या ? क्या ? रूमाल ? स्वीकार किया रूमाल ? यह सभव नही कि कैसियो और डैसडेमोना स्वीकार कर लें और दण्ड प्राप्त करे। अच्छा हो कि हम पहले उन्हे दण्ड दें तभी वे स्वीकार करेंगे। मैं तो कांप उठता हूँ। राह दिखाने को किसी वास्तविकता के बिना किसी की भावनाएँ इतने वासनामय आवरण मे छद्म धारणा नही कर सकती कि वास्तविकता छायामात्र रह जाये मुझे शब्द विचलित नही करते 'नाक कान होठ क्या

यह सभव है· बोलो· ·स्वीकार करो··· रूमाल ! शैतान····

[मूच्छित-सा हो जाता है।]

इश्रागो : श्राह ! मेरी श्रौषधि ! कर अपना काम कर ! ऐसे ही तुच्छ मूर्खों को घेरा जाता है और ऐसे ही अनेक योग्य, पतिव्रता, निर्दोष स्त्रियो को दण्ड मिलता है। (कैसियो को श्राते हुए देखता है।) स्वामी ! अरे ! यह क्या हुआ ! मेरे स्वामी ! श्रॉथेलो ! वोलिये न?

[कैसियो का प्रवेश]

श्ररे कैसियो !

कैसियो : क्यो क्या बात है ?

इश्रागो : मेरे स्वामी को मिरगी-सी श्रा गई है। यह दूसरा दौरा है ! एक ऐसा ही कल श्राया था।

कैसियो : तो कनपटियाँ रगडो।

इश्रागो · नही यह ठीक नही होगा। मूर्च्छा का दौर धीरे-धीरे अपना समय लेकर निकल जाये यही अच्छा होगा। यदि समय से पूर्व व्याघात डाल दिया जायेगा तो मुंह मे से झाग निकलने लगेंगे और उन्हे भीषरण क्रोध का एक भयानक दौरा घेर लेगा। लो, वे तो हिलने भी लगे। तुम चले जाश्रो, मैं अनुनय करता हूँ, तनिक देर को अकेला छोड दो। वे शीघ्र ठीक हो जायेंगे। जब ये चले जायेंगे तब मै तुमसे कुछ जरूरी बाते करूँगा।

[कैसियो का प्रस्थान]

क्या हाल है जनरल ? कही सिर मे चोट तो नही श्राई ?

श्रॉथेलो : क्या तुम मेरा मजाक उडाते हो ?

इश्रागो : मै और मजाक ! ईश्वर न करे ! क्या एक वीर पुरुष की भाँति अपने दुर्भाग्य को सह नही सकते ?

श्रॉथेलो : किंतु जिसकी स्त्री पर पुरुष से व्यभिचार करती है, वह

राक्षस होता है, पशु होता है।[1]

इआगो : महानगर मे न जाने ऐसे कितने पशु होगे, पता नही कितने राक्षस होगे।

ऑथेलो : क्या उसने स्वीकार किया था?

इआगो सुनिये श्रीमान्! आदमी बनिये। अपने विषय को असाधारण मत समझिये। हर मर्द, जिस पर शादी का जुआ रखा है, सभवत आप ही जैसा हो। लाखो आदमी रात को ऐसे बिस्तरो पर सोते हैं जो उनके नही होते हालाँकि वे कसम खा सकते हैं कि वे उन्ही के है। आपका हाल तो कही अच्छा है क्योकि आप कम से कम अपनी बदकिस्मती को जानते तो हैं! यह क्या कम व्यग है, यह क्या शैतान की असली ताकत नही कि एक आदमी ऐसी विश्वास-घातिनी और धोखेबाज औरत को पवित्र समझकर चूमता रहता है! नही। मैं तो यही पसद करूँगा कि मुझे अपना दुर्भाग्य मालूम रहे, क्योकि फिर मुझे यह भी पता रहेगा कि उससे मैं कैसा व्यवहार करूँ?

ऑथेलो निश्चय ही तुम बुद्धिमान हो।

इआगो तनिक हट जाइये और धैर्य्य धारण करिये तो मै आपको कुछ दिखाऊँ। जब आप अपने दुख से मूर्छित पडे थे, जो पुरुप के लिये उचित न था, कैसियो यहाँ आया था। मैंने उसे आपके आवेश के पागलपन के बहाने से यहाँ से हटा दिया था, किंतु उससे कहा था कि वह फिर आये और मुझसे बाते करे। उसने वादा किया था। आप किसी चीज के पीछे छिप जाइये और ध्यान से उसकी मुद्राओ,

---

१ अगरेज़ी में ऐसे पुरप के लिये कहा जाता है—उसके सींग निकल आये हैं अर्थात् उसकी स्त्री व्यभिचारिणी है। यहाँ भी वह कहता है कि जिसके सींग निकले हों वह पशु होता है, मनुष्य नहीं।

चेष्टाओ और हास्य का अध्ययन करिये। वे ही पक्के और घृणा के प्रगट चिह्न होगे जो उसके चेहरे पर स्पष्ट होगे। मेरी की शपथ! अपने ऊपर सयम करियेगा और धैर्य्य भी धरिये, अन्यथा मै समझूंगा कि प्रतिहिंसा की भावना ने आपको पूर्णतया पराजित कर लिया है।

ऑथेलो : सुनते हो इआगो। मै पूर्ण शात रहूँगा, धैर्य्य रखूंगा, किंतु याद रखना भीतर ही भीतर में वहुत भयानक हो उठूंगा।

[हटता है।]

इआगो अव मै कैंसियो से वियान्का के वारे मे पूछूँगा जो एक वेश्या-मात्र है, पैसा लेकर शरीर वेचती है। उसे कैंसियो वहुत प्रिय है। वेश्या भी कितनो को छलती है परतु किसी एक से वह भी छली जाती है। और वह जव उसकी सुनेगा तो हँसे विना नही रह सकेगा। लो वह आ गया।

[कैंसियो का प्रवेश]

जव यह हँसेगा, ऑथेलो पागल हो उठेगा। और उसकी वह अशिक्षित आदिम ईर्ष्या निश्चय ही इसकी मुस्कानों, गतियो, हाव-भावो और इसके कथनो का कुछ का कुछ अर्थ लगायेगी। (जोर से) कहो लेफ्टिनेंट! क्या हाल है?

कैंसियो क्या नाम लिया तुमने? मै तो वैसे ही दुखी हूँ। मुझे तो इसके (पद के) छिनने का ही दुख है। तुम्हारी वात ने तो कटे पर नमक डाल दिया।

इआगो : डैसडेमोना से प्रार्थना करते रहो! तुम निश्चय ही सफल होगे। (धीरे से) यदि वियान्का के हाथो यह प्रार्थना होती तो तुम्हारा काम कितनी जल्दी हो जाता?

कैंसियो : हाय वेचारी!

ऑथेलो हे भगवान! वह तो मेरा रूमाल लगता है।

बियान्का : और यदि तुम रात को खाना खाने आना चाहो तो आ जाना। यदि नही आते तो फिर तब तक इन्तज़ार करना जब तक फिर मै न बुलाऊँ।

[प्रस्थान]

इआगो पीछा करो! पीछा करो!

कैसियो : कसम से, अभी लो! वर्ना वह सडको पर जो चाहे बकती फिरेगी।

इआगो : उसके घर खाना खाओगे?

कैसियो : हाँ यही इरादा है।

इआगो : तब हो सकता है मै तुमसे मिलूं, मुझे तुमसे बातें करनी हैं।

कैसियो : ज़रूर आना! आओगे न?

इआगो : कोई बात नही। अब कुछ मत कहो।

[कैसियो का प्रस्थान]

ऑथेलो : (आगे आकर) इआगो! मैं इसकी हत्या कैसे करूँ?

इआगो : आपने देखा वह अपने पाप पर कितना प्रसन्न था?

ऑथेलो देखा इआगो! देखा!

इआगो : और आपने रूमाल भी देखा?

ऑथेलो आह इआगो! क्या वह मेरा था?

इआगो कसम से आपका ही था। और देखा आपने कि आपकी स्त्री को कैसा मूर्ख समझता है। और उसकी दी हुई भेंट इसने अपनी प्रेमिका को दे दी है!

ऑथेलो इसका तो मै नौ साल मे कत्ल पूरा करूँगा। सुदरी! प्रिया! वाह!

इआगो नही, अब आप इसे भूल जाइये।

ऑथेलो : आज उस नीच स्त्री को नष्ट हो जाने दो क्यो कि मैंने आज रात ही उसका अत कर देने का निश्चय किया है। मेरा हृदय पत्थर की तरह ऐसा कठोर हो गया है कि जब उस पर हाथ मारता हूँ तव हाथ मे दर्द होने लगता है। कितनी सुदर है वह! अद्वितीय! वह तो एक सम्राट के समीप सोने के योग्य है, आज्ञा देने के योग्य है, उसकी प्रत्येक आज्ञा का पालन करने मे सम्राट भी प्रसन्न होगा।

इआगो : यह आपके लिये उचित नही है।

ऑथेलो : उसे मरने दो! वह कितना अच्छा कशीदा काढती है! कितना अच्छा गाती है। उसका गाना सुनकर तो एक जगली भालू भी पालतू वन सकता है। और फिर कितनी वाक्चतुर है वह!

इआगो : किंतु यह सब ही तो उसके पाप को वडा करके दिखाते है।

ऑथेलो : हजार वार वडा करके—फिर भी कितना मीठा स्वभाव है उसका!

इआगो : वहुत!

ऑथेलो : सचमुच! फिर भी कितने दुख की वात है इआगो। इआगो! कैसे शोक की वात है इआगो!

इआगो : यदि उसके पाप के वावजूद आप उसे इतना प्रेम करते हैं तो दीजिये न उसे आज्ञा कि वह पाप करती रहे! क्योकि यदि इससे आपको कोई कष्ट नही है, तो इसकी वेदना किसी और को तो है नही?

ऑथेलो : मैं उसके टुकडे-टुकडे कर दूंगा।

इआगो : यह तो वहुत वुरा किया उसने!

ऑथेलो : तव मेरे अफसर के साथ ही ऐसा काम?

इआगो : यही तो और भी बुरा हुआ।

डैसडेमोना : मैं इस योग्य तो नही थी !

लोडोविको : श्रीमान् ! वेनिस मे इस पर विश्वास भी नही किया जायेगा चाहे मैं कसम खा कर ही क्यो न कहूँ कि मैंने इसे आँखो से देखा है। यह तो बहुत अधिक हो गया। उससे क्षमा माँगिये। वह रो रही है।

ऑथेलो : ओ शैतान ! शैतान ! यदि पृथ्वी पर स्त्री के आँसू गिरने से सृष्टि हो सके तो प्रत्येक बूद मगर[1] बन जायेगी। दूर हो जाओ मेरे सामने से !

डैसडेमोना : मैं तुम्हे क्रुद्ध करने को यहाँ नही रुकूंगी।

[जाती है।]

लोडोविको : सचमुच ! एक विनीत नारी है। स्वामी ! मै प्रार्थना करता हूँ वापिस बुला लें।

ऑथेलो : श्रीमती !

डैसडेमोना : मेरे स्वामी ?

ऑथेलो : आपको उससे कुछ काम है ?

लोडोविको : कौन मुझे श्रीमान् !

ऑथेलो : हाँ। आपने ही तो मुझे उसे लौटाने को कहा था ! श्रीमान् ! वह लौट सकती है, घूम सकती है, और फिर जा सकती है, फिर लौट सकती है। वह रो सकती है श्रीमान् ! रो सकती है। और वह विनीत है, आप कहते हैं विनीत है, बहुत विनीत है। तुम रोती चलो !

[कभी लोडोविको और कभी डैसडेमोना से]

इस विषय मे श्रीमान् !—ओ मक्कार स्त्री ! मुझे आज्ञा मिलती है—चली जाओ यहाँ से ! मैं आपको शीघ्र सूचना दूंगा, श्रीमान्,

---

१ अगरेजी में भी कहावत है—'मगर के आंसू' (Crocodile tears).

मै आज्ञा को मानता हूँ और वेनिस लौट जाऊँगा। चली जाओ यहाँ से !

[डैसडेमोना का प्रस्थान]

कैसियो मेरी जगह लेगा और श्रीमान्, मै प्रार्थना करता हूँ कि आज हम सब रात को साथ-साथ भोजन करे, श्रीमान् ! साइप्रस मे आपका स्वागत है ··· बकरे और बदर ··[1]

[प्रस्थान]

लोडोविको : क्या यही वह वीर मूर है, जिसको हमारी सिनेट ने प्रत्येक रूप से योग्य ठहराया था ! क्या यह वही व्यक्ति है जिसे आवेश कभी विचलित नही करता था ! क्या यही है वह व्यक्ति जिसे किसी प्रकार की दुर्घटना या दुर्भाग्य प्रभावित नही करते थे ?

इआगो : अब वे बहुत बदल गये है।

लोडोविको : दिमाग तो ठीक है न ? क्या कुछ गडबडी तो नही है ?

इआगो : जो है सो हैं—लेकिन मुझे इस विषय पर अपनी राय नही देनी चाहिये। मै तो परमात्मा से यही प्रार्थना करता हूँ कि यदि वे नही हैं, तो वैसे ही हो जाये जैसे उन्हे होना चाहिये।

लोडोविको : अरे पत्नी पर हाथ उठाना !

इआगो निश्चय, यह बहुत बुरा था। मुझे तो यही निश्चय करना है कि यही सबसे घातक आघात था !

लोडोविको : क्या उन्हे आदत है या पत्रों ने उन्हे आवेश से भर दिया था और उनमे यह दोष भर दिया था ?

इआगो : हत ! निश्चय ही मेरे लिये न यह उचित ही होगा, न ठीक ही कि मै उसको कह दूँ जो मैंने जाना और देखा है। आप भी उन्हे

१ पहले वासना के संबंध में इआगो (३.३) इन शब्दों का प्रयोग कर चुका है।

देखेंगे ही, तो स्वय ही न आप सब कुछ देख लें। इससे मेरी रक्षा हो जायेगी। उनके पीछे जाइये और देखिये वे क्या-क्या करते हैं।

लोडोविको : मुझे यह देख कर बडा दुख हुआ है कि जो मैंने सोचा था वह वैसा नही हुआ।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[दुर्ग का एक कमरा]

[ऑथेलो और इमीलिया का प्रवेश]

ऑथेलो : तो तुमने कुछ नही देखा ?

इमीलिया : न कभी सुना, न कभी सदेह ही किया।

ऑथेलो : लेकिन तुमने कैसियो और डैसडेमोना को साथ-साथ देखा है ?

इमीलिया : लेकिन मैने इसमे कोई हानि नही देखी और फिर मैने तो उनकी वातचीत का प्रत्येक शव्द सुना है।

ऑथेलो : क्या उन्होने आपस मे कोई कानाफूंसी नही की ?

इमीलिया : नही स्वामी !

ऑथेलो : कभी तुम्हे वाहर नही भेजा ?

इमीलिया : कभी नही स्वामी।

ऑथेलो · पखा, दास्ताने, वुर्का (झीना वुर्का यूरोप में मुंह पर डाल लिया जाता था।) या ऐसी कोई चीज़ लाने भी नही ?

इमीलिया · विलकुल नही।

ऑथेलो अजीव वात है।

इमीलिया : मै कहती हूँ स्वामी ! मैं कसम खाकर कह सकती हूँ कि वह पवित्र और पतिव्रता है। यदि आप कुछ और सोचते हैं तो उस

कुटिल विचार का त्याग कर दीजिये। उससे आपकी बुद्धि विपाक्त ही होगी। यदि किसी धूर्त्त ने आपके मस्तिष्क मे ऐसा विचार रख दिया है तो परमात्मा करे उसे विषैला नाग डसे। क्योकि यदि डैसडेमोना पवित्र और पतिव्रता नही है तो किसी भी पुरुष की पत्नी पतिव्रता नही हो सकती। तब तो अत्यत पवित्र पत्नी को भी दुराचारिणी होना ही पडेगा, बल्कि मै तो व्यभिचारिणी कहने तक से न हिचकूँगी।

आॅथेलो : उसे यहाँ भेज दो।

[इमीलिया का प्रस्थान]

क्या खूब कहती है ये, लेकिन इसके पेशे की कोई भी औरत यही कहती। ये तो चाहे कितनी भी सीधी क्यो न हो यही कहेगी, और क्या ? यह तो बडी चालाक औरत मालूम होती है जो ऐसी लज्जा-जनक बातो को ऐसे गुप्त रखती है मानो कोई अपनी गुप्त अल-मारी मे पत्रो को छिपा कर रखता हो। लेकिन मैंने तो उसे (कैसियो को) घुटनो के बल बैठकर प्रार्थना करते देखा है।

[डैसडेमोना और इमीलिया का प्रवेश]

डैसडेमोना : मेरे स्वामी ! आपकी क्या इच्छा है ?

आॅथेलो : आओ प्रिये ! मेरे निकट आओ !

डैसडेमोना : क्या आज्ञा है ?

आॅथेलो : मुझे अपनी आँखे देखने दो, मेरी तरफ देखो · ·

डैसडेमोना : यह कैसा भयानक विचार है · ·

आॅथेलो : (इमीलिया से) अब अपना रोज़ का काम करो, प्रेमियों को भीतर छोड़ कर दरवाजे पर पहरा दो, कोई आये तो खाँसना, कूखना। अपना काम करो, अपना काम। जाओ।

[इमीलिया का प्रस्थान]

डैसडेमोना : मैं आपसे सविनय पूछती हूँ कि आप कहना क्या चाहते हैं ? आपकी बात के पीछे एक गुस्सा छिपा है जैसे आपके दिमाग मे वडी भयानक हलचल मच रही है ।

आँथेलो : क्यो ? तुम हो कौन ?

डैसडेमोना : आपकी पवित्र और पतिव्रता पत्नी हूँ ।

आँथेलो : आओ इसकी शपथ ग्रहण करो और अभिशाप तुम पर टूट पडें ताकि तुम्हारे देवदूतो के-से मुख को देख कर शैतान भी तुम्हे पकडते हुए थहर जायें । आओ । शपथ लो कि तुम पवित्र और पतिव्रता हो और इस पाप के लिये तुम पर शाप लद जायें और पाप को अस्वीकार करने के कारण तुम पर दुगना अभि-शाप टूटे ।

डैसडेमोना . भगवान ही वास्तविकता के ज्ञाता हैं ।

आँथेलो : हाँ । भगवान तो जानता है कि तुम बेईमान हो और नरक की भाँति मिथ्याशील हो ।

डैसडेमोना : मिथ्याशील ! किसके प्रति मेरे स्वामी ! किसके साथ ! मैं कैसे झूठी हूँ ?

आँथेलो : आह डैसडेमोना, चली जाओ, जाओ, चली जाओ !

डैसडेमोना : हाय, कैसा बुरा दिन है ! क्यो रोते हो मेरे स्वामी ! क्या मै ही इस सवका कारण हूँ ? यदि आप समझते हैं कि इस सवके पीछे मेरे पिता के तत्र हैं, तो इसलिये मुझे अपराधी क्यो ठहराते हैं ? यदि आप उन्हे अपने लिये शत्रु और पराया ठहराते है तो मेरे लिये भी तो ये वही हैं जो आपके लिये हैं ।

आँथेलो : यदि भगवान को इसी से सतोप हो जाता कि मुझे भयानक दुर्भाग्य घेर लेता, यदि आकाश से मेरे शीश पर कठोर अपमान-जनक दुख वरसते, या मैं दरिद्रता की कचोट को सहता या मुझे

अधकार मे निवास करना पड़ता, तब भी मै अपना धैर्य्य नही खोता। किंतु मुझे ऐसे निरादर का पात्र बनाया है उस भगवान ने! कि मेरी ओर लोग अपनी उगलियाँ उठाये और मुस्करा कर तिरस्कार से इशारे करें . मै तो इसे भी सह लेता! किंतु जहाँ मैने अपने जीवन की समस्त आशाओ को सचित किया, वह स्रोत जहाँ से मेरा जीवन ही सबल ग्रहण करता है, जिसके बिना मेरे लिये केवल मृत्यु है . वही से मै इस प्रकार वचित किया जाऊँ? यह विचार ही कितना विकराल है कि या तो मै अपने प्रेम-पात्र से ही दूर हो जाऊँ या इसको इसी प्रकार कलुपित और कलकित होते हुए देखता रहूँ। इस हालत में तुम कितने भी रग बदल लो, किंतु क्या मेरे पवित्र हौज मे गदे मेढक मौज से नहा-नहा कर टर्राया करेगे? ओ गुलाबी होंठो वाली देवदूत-सी सुदरी! तू मुझे नरक-सी भयानक दिखाई देती है।

डेसडेमोना : मुझे आशा है कि आप मुझे पवित्र और सच्चा समझते हैं।

ऑयेलो : निश्चय ही तुम उस मक्खी के समान पतिव्रता हो जो अडे देती हो फिर गाभिन हो जाती है। तुम उस नरकुल की भाँति हो जो देखने को तो बहुत सुदर लगता है, जिसकी गध भी बड़ी मादक होती है, किंतु जिसको सूंघने से ही नशा आता है। काश तुमने जन्म ही नही लिया होता।

डेसडेमोना : हाय! हाय! आखिर, अनजाने ही सही, पर मैंने ऐसा कौन-सा पाप कर डाला है?

ऑयेलो : क्या यह सफेद कागज, यह सुंदर पुस्तक, इसलिये ही इसे बना गया था कि इस पर शब्द लिखा जाये—'कुलटा!' पूछती हो क्या पाप किया है तुमने? ओ वेश्या! पापिनी! यदि मै उन पापों का वर्णन करने लगूंगा तो तुम्हारे गुलाबी गाल लज्जा से ऐसे

सुलग उठेंगे कि नरक की ज्वाला-सी फरफरा उठेगी, ऐसी तीव्र कि तुम्हारी लज्जा को ही भस्म कर देगी। स्वर्ग इस पाप की दुर्गंध को नही सह सकता, न चन्द्रमा ही इसे देख सकता है।[1] इस जघन्य पाप को देख कर सर्वदयालु पवन भी ऐसा धक्का खा जायेगा कि पृथ्वी के गर्भ मे छिप जाना अधिक पसद करेगा, न कि इस पाप का विवरण सुनना। और तुम पूछती हो तुमने क्या पाप किया है? ओ निर्लज्ज कुलटा!

डेसडेमोना : ईश्वर साक्षी है, आप मेरे साथ अन्याय कर रहे हैं।

ऑथेलो : क्या तुम विश्वासघातिनी दुश्चरित्र कुलटा नही हो?

डेसडेमोना : नहीं। मैं ईसाई हूँ। यदि इस देह को अपने स्वामी के लिये पवित्र रखना, किसी अन्य व्यक्ति के स्पर्श से भी दूर रखना पवित्रता है, दुश्चारित्र नही है, तो मैं भी पवित्र हूँ।

ऑथेलो : तो क्या तुम पर पुरुषगामिनी नहीं हो?

डेसडेमोना : नही। मेरी आत्मा की निश्चय ही भगवान रक्षा करेंगे।

ऑथेलो : क्या यह भी हो सकता है?

डेसडेमोना : हे भगवान! क्षमा कर!

ऑथेलो : तब मुझे क्षमा करो। मै तो तुम्हे ऑथेलो से विवाह करने वाली वेनिस की चालाक वेश्या समझा था। (स्वर उठाकर) श्रीमती! तुम्हारा काम नरक के द्वारो पर पहरा देने का है जैसे सत पीटर स्वर्ग के द्वार की देखभाल करते हैं।

[इमीलिया का प्रवेश]

ऐ, ऐ, तुम हाँ तुम ही। हम अपना काम कर चुके हैं और तुमने जो तकलीफ की है उसके लिये यह दाम लो। दरवाजा वद कर देना और जो हुआ है उसके वारे मे किसी से कुछ कहना नही।

[प्रस्थान]

---

१ अगरेजी में चद्रमा पुरुष नहीं स्त्री है।

इमीलिया : आखिर इन्हे हो क्या गया है ? क्या हुआ तुम्हे स्वामिनी ?

डैसडेमोना : मै जाग रही हूँ या सो रही हूँ ?

इमीलिया . कहो न देवी ! स्वामी को क्या हो गया है ?

डैसडेमोना किसको ?

इमीलिया : मेरे स्वामी को ?

डैसडेमोना : कौन है तुम्हारा स्वामी !

इमीलिया : स्वामी ! वही स्वामी ! और कौन ! आपके स्वामी ही तो मेरे मालिक हैं !

डैसडेमोना . मेरा कोई स्वामी नही है। मुझसे वात मत करो इमीलिया ! मैं तो रो भी नही सकती । आँसू के अतिरिक्त मेरे पास कोई उत्तर भी नही है । मै प्रार्थना करती हूँ आज मेरी शैय्या पर मेरे विवाह की चादरे विछा देना और सुन, तनिक अपने पति को वुला कर ला।

इमीलिया . क्या वात है ! सव कुछ कितना अजीव है !

[प्रस्थान]

डैसडेमोना . मेरे साथ ऐसा ही व्यवहार तो उचित है। कैसा व्यवहार किया गया है मेरे साथ ? मेरी किस जरा-सी भूल पर मुझ पर इतना वड़ा अभियोग लगाया गया है ?

[इमीलिया और इआगो का प्रवेश]

इआगो . आज्ञा दे देवी ! आप सकुशल तो हैं ?

डैसडेमोना : मै नही जानती। जो छोटे वच्चों को पढाते हैं वे मीठी वातें करके उन्हे सिखाते है। वे हमेशा आसान तरीके अपनाते हैं। मुझे ठीक करने को तो मामूली डाँट ही काफी थी। जहाँ तक डाँट का सवाल है मै भी वच्चे की तरह ही हूँ।

इआगो . श्रीमती ! वात क्या है ?

इमीलिया : दुर्भाग्य इआगो ! स्वामी ने इन्हे इतनी भयानक गालियाँ

दी हैं, ऐसे कडे शब्द कह कर कुलटा कहा है कि कोई भी अच्छे हृदय की स्त्री उसे सह नही सकती।

डेसडेमोना क्या मै इसी नाम के उपयुक्त हूँ इआगो ?

इआगो कौन-सा नाम देवी !

डेसडेमोना अभी तो इमीलिया ने कहा, वही नाम।

इमीलिया उन्होने इन्हे कुलटा कहा। अपनी नीचतम पत्नी से कोई भिखारी शराब के नशे में भी ऐसी बात नही कहता !

इआगो ऐसा क्यो किया उन्होने ?

डेसडेमोना मैं नही जानती। किंतु निश्चय ही मेरा कोई अपराध नही है।

इआगो रोइये नही, रोइये नही। कैसा दुर्दिन है !

इमीलिया : क्या देवी ने अपने पिता, देश, और अनेक कुलीन व्यक्तियो के विवाह-प्रस्तावो को इसीलिये छोडा था कि वे कुलटा कहलायें ? क्या यह रुलाने के लिये काफी नही है ?

डेसडेमोना : यह तो मेरा ही दुर्भाग्य है।

इआगो इसका उन्हे दण्ड भगवान देगा। यह बात उनके दिमाग मे आई कैसे ?

डेसडेमोना भगवान जाने !

इमीलिया मुझे फांसी लग जाये यदि यह काम किसी नारकीय नीच कमीने और भयानक रूप से कुटिल नराधम धोखेबाज व्यक्ति का न हो जो कि किसी पद पर नियुक्ति के लिये ऐसी योजनाबद्ध बदनामी कर रहा है। यदि ऐसा न हो तो मुझे फांसी दे दी जाये !

इआगो छि ! ऐसा कोई आदमी नही। यह असभव है।

डेसडेमोना : यदि कोई ऐसा हो तो भगवान उसे क्षमा करें।

इमीलिया : फांसी की रस्सी उसे क्षमा करे। नरक मे उसकी हड्डियाँ

कुतर-कुतर कर चबाई जाये। क्यों कहता है वह इन्हे कुलटा ! कौन आता है इनके पास ? कब ? कहाँ ? किस तरह ! कोई तुक भी हो ! ऑथेलो को अत्यत नीच बदमाश, किसी जघन्य खल, किसी कमीने हरामी ने बहकाया है। हे भगवान ! ऐसे कमीनो की असलियत तू क्यो नही खोल देता। उसके तो छद्म उतार कर हर ईमानदार आदमी के हाथ मे एक-एक कोडा दे दिया जाय और ससार भर मे पूरब से पच्छिम तक ऐसे कमीने को नगा करके इतने कोडे मारे जाये · · ·

इआगो : तनिक धीरे बोलो।

इमीलिया : धिक्कार है ! ऐसा ही कोई नीच था जिसने तुम्हारी भी मति फेर दी थी और तुमने मुझ पर और मूर पर संदेह किया था।

इआगो · तुम मूर्ख हो, जाओ यहाँ से !

डेसडेमोना : ओ अच्छे इआगो ! मै स्वामी का प्रेम प्राप्त करने के लिये फिर क्या करूँ ? तुम मेरे शुभाकाक्षी हो। उनके पास जाओ। मै आकाश के ज्वलंत पिण्डों की शपथ खाकर कहती हूँ, मैं नही जानती कि कैसे वे मुझसे क्रुद्ध हो गये हैं ! मैं यहाँ घुटनों के बल बैठी हूँ, यदि कभी भी मेरी इच्छा उनके प्रेम के विरुद्ध गई हो, बातों मे, विचारो मे या कार्य्यों मे—मनसा-वाचा-कर्मणा कभी मै उन-के विरुद्ध रही हूँ, या कभी मेरी आँखो, मेरे कानो, मेरी किसी भी इन्द्रिय ने उनके अतिरिक्त किसी अन्य रूप मे आनंद का अनुभव किया हो, या यह कि मैंने उन्हें प्यार नही किया था, या नही कर रही, या नही करूंगी। चाहे वे मुझे एक भिखारिन, एक दासी की ही भांति क्यो न रखे, तब भी मै उन्ही को अपना सर्वस्व समझूंगी चाहे उनकी निष्ठुरता मेरे जीवन को नष्ट कर दे किंतु मेरे प्रेम पर प्रभाव नही पडेगा, किंतु फिर भी मैं वह शब्द 'कुलटा' तो कह

भी नही सकती। उसे कहते में ही मैं घृणा से काँप उठती हूँ। यदि सारे ससार का वैभव भी मुझे उसके बदले मे मिल जाये तव भी मै ऐसा पाप नही कर सकती।

इग्रागो · मैं ग्रापसे याचना करता हूँ कि ग्राप धैर्य्य धारण करें। यह तो एक जोश भर है। शायद राज-काज ने उन्हे ग्रस्थिर कर दिया है कि वे ग्रापको यो डाँट गये हैं।

डैसडेमोना : मै भी यही चाहती हूँ कि बस यही कारण हो

इग्रागो मुझे विश्वास है, यही बात है।

[नेपथ्य में तुर्य्य-नाद]

सुनिये! ग्रब रात का भोजन प्रारभ होने की ग्रावाज़ है यह। वेनिस के दूत भोजन के लिये प्रतीक्षा कर रहे होगे। रोइये नही। भीतर जाइये। सब जल्दी ही ठीक हो जायेगा।

[डैसडेमोना ग्रौर इमीलिया का प्रस्थान। रोडरिगो का प्रवेश]

कहो रोडरिगो क्या हाल है?

रोडरिगो तुमने मेरे साथ कितनी ज्यादती की है, कभी इस पर भी सोचते हो?

इग्रागो क्यो मैंने तुम्हारे खिलाफ क्या किया है?

रोडरिगो कोई न कोई वहाना करके तुम मुझे रोज़ टाल देते हो। जव तो यह साफ दिखाई दे रहा है कि तुम मेरी ग्राशाएँ पूरी करने की वजाय मुझे उससे दूर ले जा रहे हो। मैं इसे ग्रौर नही सह सकता, न मैंने जो नुकसान उठाया उस पर चुप रह जाऊँगा, मैंने कितनी मूर्खता से तुम्हारे हाथ इतनी हानि उठाई है?

इग्रागो मेरी वात भी सुनोगे तुम?

रोडरिगो : वहुत सुन लिया। मेरा धीरज चुक गया। जो तुम कहते हो न, तुम्हारा मतलव हमेशा उसके ग्रतिरिक्त ही कुछ होता है।

इश्रागो : क्या वेवजह इल्ज़ाम लगा रहे हो !

रोडरिगो : नहीं । मैं ठीक ही तुम पर दोप लगा रहा हूँ । मैने डैसडेमोना को भेट पहुँचाते-पहुँचाते अपना सारा धन ही नष्ट कर दिया । मैंने जो उसे पहुँचाने को तुम्हे जवाहिरात दिये थे उनसे तो गिरजे की कोई साध्वी भी ललचा जाती । तुम कहते हो वह सब उसने ले लिये हैं और बदले मे तुम्हे आशा दी है कि शीघ्र ही वह मुझसे मिलेगी । लेकिन मुझे ऐसी कोई बात नज़र नही आती !

इश्रागो : तो चलो, हो गया, यही सही ।

रोडरिगो : यही सही ! चलो ! हो गया ! मै जा नही सकता अब, समझे ! यही सही से भी काम नही चलेगा । यह तो धोखा है ! मुझे तो इस मामले मे ठग लिया गया है !

इश्रागो : वहुत खूब !

रोडरिगो : वहुत खूब कहाँ है ? मै डैसडेमोना के पास जाऊँगा, अगर वह मेरे जवाहिरात लौटा देगी तो मै तो इस दौड को छोड दूंगा और इस गैरकानूनी मुहब्बत से बाज़ आऊँगा । नही तो समझ लो, मैं तो तुमसे जवाव मांगूंगा ।

इश्रागो : वस अव कह चुके या और कुछ वाकी है ?

रोडरिगो : मैंने ऐसा कुछ नही कहा जो मैं करके न दिखा दूंगा ।

इश्रागो . तव तो मुझे लगता है तुममे अभी कुछ जान वाकी है और आयदा मुझे तुम्हारे वारे मे अपनी राय भी वेहतर वनानी होगी । लाओ रोडरिगो ! मुझे अपना हाथ दो । तुम्हारी शिकायत मे इंसाफ है, वह उचित है, लेकिन मैने तुम्हारे साथ निहायत अच्छा व्यवहार किया है ।

रोडरिगो : ऐसा नज़र तो नही आया ।

इश्रागो : हाँ यह सच है कि अभी ज़ाहिरा तौर पर ऐसा कुछ नज़र

नही आया। तुम्हारे शक भी बेबुनियाद और बेकार नही है! लेकिन रोडरिगो! अगर तुम्हारा मकसद सच्चा है, तुममे धीरज और बहादुरी है तो आज रात इसका सबूत दो। मुझे विश्वास है कि पहले की बनिस्बत तुममे यह बातें अब पहले से कही ज्यादा हैं। कल रात ही अगर तुम डैसडेमोना के मज़े न उडाओ तो भले ही किसी भी धोखे से कितनी ही तकलीफ देकर तुम मुझे इस दुनिया से ही उठा देना।

रोडरिगो : बताओ फिर! क्या बात है? क्या वह ऐसी है जो मै कर सकता हूँ, जो उचित है?

इआगो जनाब! वेनिस से एक विशेष कमीशन (दल) आया है, कैसियो को ऑथेलो की जगह दिलाने।

रोडरिगो : क्या यह सच है? तो क्या ऑथेलो और डैसडेमोना वेनिस लौट जायेंगे?

इआगो अरे नही! वह तो मॉरीटानिया जायेगा और सग मे सुदरी डैसडेमोना को ले जायेगा। यह है योजना बशर्त्ते कोई रुकावट नही पडी। इस मामले मे कैसियो को हटा देने से बेहतर कोई तरकीब नही।

रोडरिगो कैसियो को हटा देने से तुम्हारा क्या मतलब है?

इआगो हाँ! अगर तुममे अपने को फायदा पहुँचाने की कोई हिम्मत है। बशर्त्ते तुम एक ठीक काम कर सको। आज रात वह एक वेश्या के घर खाना खायेगा। वहाँ मै भी उसके साथ जाऊँगा। उसे अभी पता नही है कि उसकी किस्मत खुल गई है। अगर तुम उसके वहाँ से जाने की टोह मे रहोगे तो तुम्हे मौका मिल जायेगा। और मै ऐसा कर दूंगा कि यह वक्त बारह और एक के बीच मे हो। और फिर तुम्हारी मदद को मै तुम्हारे पास ही रहूँगा। वह हमारे बीच

मे ही तो रहेगा। सुनो! चौंकते क्यों हो! मेरे साथ चलो। मै तुम्हे उसके मरने का ऐसा कारण बताऊँगा कि तुम्हे तो उसे मारने से रुकना कठिन हो जायेगा। अब तो खाने का वक्त हो गया और रात भी काफी हो गई है। तुम चलो।

रोडरिगो तो फिर मुझे इसके और कारण बताओ।

इआगो : जरूर। मै तुम्हे इसका यकीन दिला दूंगा।

[प्रस्थान]

दृश्य ३

[दुर्ग का एक और कमरा]

[ऑथेलो, लोडोविको, डैसडेमोना, इमीलिया तथा सेवकों का प्रवेश]

लोडोविको : मैं प्रार्थना करता हूँ श्रीमान्, कि इस विषय मे अब आ अधिक चिंता न करें।

ऑथेलो · क्षमा करे। घूमने से मुझे चैन मिलेगा।

लोडोविको : नमस्कार श्रीमती! मै आपको धन्यवाद देता हूँ।

डैसडेमोना . श्रीमान् के आगमन से मुझे प्रसन्नता है। क्या आप घूम जायेगे ?

ऑथेलो : आह डैसडेमोना!

डैसडेमोना : मेरे स्वामी!

ऑथेलो : तुरत सोने चली जाओ। मै अभी लौट कर आता हूँ। अपन नौकरानी को वहाँ से छुट्टी दे देना। ऐसा ही हो।

डैसडेमोना : जो आज्ञा स्वामी!

[ऑथेलो, लोडोविको और सेवको का प्रस्थान]

इमीलिया : यह कैसी बात? इस समय तो पहले की तुलना मे वे व नम्र दिखाई देते हैं।

डैसडेमोना उन्होने कहा है, वे शीघ्र लौटेंगे। उन्होने कहा है कि मैं सोने जाऊँ और तुम्हे छुट्टी दे दूं।

इमीलिया मुझे छुट्टी दे दो ?

डैसडेमोना यह उनकी आज्ञा है, इसलिये मेरी अच्छी इमीलिया ! मेरे सोने के वस्त्र दे दो और जाओ। अब हमे उन्हे और क्रुद्ध नही करना चाहिये।

इमीलिया : अच्छा होता तुम उनसे कभी मिली ही न होती !

डैसडेमोना नही मैं ऐसा कभी नही चाह सकती। मेरा प्रेम उनको इतना बढा-चढा कर देखता है कि उनका क्रोध, उनका डाँटना, उनकी कठोरता, सबमे मुझे सौदर्य्य दिखाई देता है। मेरे वस्त्र उतारो न ?

इमीलिया मैंने बिस्तरे पर वही चादरें बिछा दी हैं। जिन्हे बिछाने को तुमने कहा था।

डैसडेमोना . एक ही बात है। सच हम कभी-कभी कितने बेवकूफ बन जाते हैं। यदि मैं तुमसे पहले मर जाऊँ तो मुझे इन्ही मे से एक चादर मे ढँक देना।

इमीलिया रहने दो। बेकार की बातें करना शुरू कर दिया।

डैसडेमोना : मेरी माता की एक सेविका थी, उसका नाम था बार्बरा। वह किसी से प्रेम करती थी जो पागल हो गया और उसे छोड गया। वह अक्सर एक बहुत ही दुख-भरा गाना गाया करती थी। वह उसे गाते हुए ही मरी थी। पता नही आज रात मुझे वही गाना क्यो याद आ रहा है। क्यो जाने मन करता है उसी की तरह एक ओर सिर लटका कर उसी की भाँति इस गाने को गाऊँ। जल्दी करो न ?

इमीलिया क्या आपका रात का चोगा लाऊँ ?

डैसडेमोना नही, यह गाँठ खोल दो। यह लोडोविको सुदर व्यक्ति है।

इमीलिया . सच, बहुत सुदर है।

डेसडेमोना वेनिस मे एक ऐसी स्त्री मै जानती हूँ जो लोडोविको से एक चुबन पाने के लिये फिलिस्तीन जैसी दूरी से भी पैदल आ जाती !

डेसडेमोना . [गीत]

चीड़ के ऊँचे घने तरु की सलोनी छाँह में,
दीन मन कितनी न भर लीं आह हैं
गीत गाती जा सलोनी वेल से
हृदय पर रख कर, धरे शिर जानु पर,
गीत गाती जा सलोनी वेल से,
विमल झरने वह रहे मृदु शब्द कर
वेदना उसकी बनी मर-मर मदिर
गीत गाती जा सलोनी वेल से
अश्रु वहते नयन से उर-भार भर
पिघलते पाषाण के भी वज्र स्तर···

जल्दी जाओ वे आते होगे।

[गीत]

यह वने गलहार मेरा वेल[1] ही
दोष दो उसको न कोई तुम कहीं,
वहुत निर्दयता दिखाये वह कहीं
तो मुझे वह प्रिय लगे, सुंदर यहीं···

वह कपडे नही · सुनो ! कोई द्वार खटखटाता है · ·

इमीलिया : वह तो हवा है।

---

१. अंगरेजी में है—'विलो विलो विलो···' यह एक झाड़ी होती है। हिन्दी में इसी से मैंने इसे वेल कर दिया है।

डैसडेमोना [गीत]

झूठ मैंने प्यार को अपने कहा
जानती हो तब सजन ने क्या कहा
गीत गाती जा सलोनी बेल से
यदि करूँ वह प्रेम पर नारी मिले
तो पुरुष-पर देख तेरा मन खिले—

अच्छा, तू जा। गुडनाइट। मेरी आँखो मे दर्द हो रहा है। क्या मुझे रोना पडेगा ?

इमीलिया यह तो कोई वात नही है।

डैसडेमोना मैंने लोगो को ऐसा कहते सुना है। आह ये पुरुष! पुरुष! सच बता इमीलिया! क्या तू समझती है ऐसी भी स्त्रियाँ हैं जो अपने पति से विश्वासघात करती हैं ?

इमीलिया निश्चय ऐसी भी स्त्रियाँ होती हैं।

डैसडेमोना क्या ससार मे किसी कीमत पर तू भी ऐसा पाप कर सकती है ?

इमीलिया क्यो क्या तुम न करोगी ?

डैसडेमोना आकाश के ज्वलत पिण्ड की शपथ। मैं तो नही करूँगी।

इमीलिया आकाश के ज्वलत पिण्ड के आलोक मे तो मैं भी नही करूँगी, हाँ रात मे तो कर डालूँगी।

डैसडेमोना क्या तू ऐसा पाप ससार के धन के लिये करेगी !

इमीलिया : ससार तो वहुत वडा है और इसी लिये एक तनिक से पाप का यह तो वहुत वडा मूल्य है!

डैसडेमोना : मै निश्चय जानती हूँ, तुम ऐसा पाप कभी नही करोगी।

इमीलिया : क्यो ? मै समझती हूँ ज़रूर कर लूंगी। लेकिन करने के वाद, अपने पति से क्षमा माँग लूंगी। मेरी की शपथ! मैं मामूली

मुआवज़े के लिये ऐसा गुनाह नही करूँगी कि एक अँगूठी ले ली, या कुछ गज़ लिनिन के कपडे का टुकडा, या टोप, या चोगे, या पेटीकोट, या ऐसी ही कोई और वस्तु ही क्यो न हो ? भले ही मेरे पति को अपमान मिले किंतु यदि उन्हे ससार के सम्राट का पद मिले तो मैं अवश्य ऐसा कर लूंगी। ऐसे परिणाम के लिये तो मै नरक मे भी दण्ड भोगने को तत्पर हूँ।

डैसडेमोना : ईश्वर का दण्ड गिरे मुझ पर जो सारे ससार का वैभव भी मुझसे ऐसा पाप करा ले !

इमीलिया : पाप क्या है ? लोकाचार मे पाप है और जब तुम ससार के ही स्वामी बन गये, तो फिर उसका अनुकूल उपाय भी किया जा सकता है।

डैसडेमोना : मै नही समझती कि ऐसी भी कोई स्त्री हो सकती है !

इमीलिया . दर्जनो हैं और इतनी है कि अनाचार की सतान से ससार को भर सकती है। उनकी तो क्रीडा ऐसी है। किंतु यदि स्त्रियाँ विश्वासघातिनी होती है तो मै इसके लिये उनके पतियो को ही दोपी समझती हूँ। जब वे अपने कर्तव्यो का ठीक से पालन नही करते, या अन्य स्त्रियो पर पत्नियो के अधिकार न्यौछावर कर देते हैं, या अनावश्यक रूप से अकारण ही ईर्ष्यालु होकर पत्नियो पर बधन बांधते हैं, या उन्हें मारते है या विद्वेप से उनका खर्चा कम कर देते है, तब हमारे भी तो गुस्सा होता है, हममे भी तो बदला लेने की भावना होती है भले ही हमे अधिक दयालु कहा जाता है। प्रत्येक पति को जानना चाहिये कि हममे भी उन्ही के समान भावनाएँ होती हैं। उन्ही के समान पत्नियाँ भी देख सकती हैं, सूंघ सकती हैं, अच्छे-बुरे, सुदर-असुदर की पहँचान कर सकती है। हमारे लिये सुरक्षित प्रेम को वे अन्य स्त्रियो को क्यो दे देते

हैं ? क्या यह केवल खेल है ? क्या यह अशतः वासना, अशत स्नेह और कुछ सीमा तक मानवीय निर्बलता नही है ? वही बात हमारी भी है। इसीलिये, उन्हे हमारे साथ उचित व्यवहार करना चाहिये। अन्यथा उन्हे जानना चाहिये कि जब वे हमारे विरुद्ध पहला पाप करते हैं, तभी हम भी पाप करना सीख जाती है ।

डेसडेमोना : गुडनाइट ! गुडनाइट ! भगवान करे, मुझमे बुरा देख कर बुरा करने की भावना न जागे, किंतु बुरा देखकर मुझमे अपने को और सुधार लेने की भावना ही जाग्रत हो।

[प्रस्थान]

पाँचवाँ अंक

दृश्य १

[साइप्रस-सडक]

[इआगो और रोडरिगो का प्रवेश]

इआगो : देखो। यहाँ इस निकले हुए मकान के हिस्से की आड मे खड़े हो जाओ वह सीधा इधर ही से आयेगा। म्यान मे से तलवार निकाल लो और जब वह यहाँ पहुँचे उसके शरीर मे पूरी घुसे देना। जल्दी करना, डरना मत। मै पास ही रहूँगा। एक बार की बात है, इधर या उधर। वर्ना मौका जाता रहेगा। यह याद रखन और मजबूती से दिल को कडा कर लेना।

रोडरिगो · तुम पास ही रहना, शायद मै ठीक से न कर सकूँ।

इआगो : हाँ-हाँ, मै यही हूँ। हिम्मत बाँधो और यही खडे रहो।

[जाता है।]

रोडरिगो : मेरी तो यह काम करने की कोई विशेष इच्छा नही लेकिन उसने मुझे कारण तो ठीक बताये हैं। मुझे यह काम कर ही चाहिये। क्या है ? ज्यादा से ज्यादा इसका मतलब है कि दुनि मे एक आदमी और कम हो गया। एक बार मेरी तलवार तक घुसी और फिर वह सदा के लिये उठ जायेगा।

इआगो : मैंने इस नौजवान बेवकूफ को पूरी तरह से भड़का दिया वह बहुत नाराज़ हो गया है। अब यह तो मेरे फायदे की चीज कि वह कैसियो को मारता है या कैसियो उसे या दोनो एक दू को। रोडरिगो अगर जिंदा रहता है तो वह अपना धन जवाहिरात माँगेगा जो सब मैंने उससे डैसडेमोना के नाम से धो

देकर हडप लिया है। यह तो नही होना चाहिये। अगर कैसियो जीवित रहता है तो उसके चरित्र की उदात्तता मेरे कार्य की नीचता को तुलना मे और भी नीचतम प्रदर्शित करेगी। और फिर मूर भी उसके सामने मेरी बात खोल सकता है। इस सबसे यह साफ है कि मै अब बडे खतरे मे हूँ। नही उसे भी मरना ही चाहिये। शायद वह आ रहा है, आहट हो रही है।

[कैसियो का प्रवेश]

रोडरिगो उसके चलने के ढग से ही पता चलता है कि वह कैसियो है। ओ नीच अब तू मरा।

[तलवार का वार करता है।]

कैसियो : तेरा वार पक्का बैठता अगर मैं ऐसा कवच भीतर न पहने होता जिसमे तलवार की नोक अटक जाती है। तू सोच भी नही सका। अब ले मेरी बारी है।

[तलवार खींच कर रोडरिगो को घायल करता है।]

रोडरिगो हाय! हाय! मै मर गया! मैं मर गया!

[इआगो पीछे से कैसियो के पैरों पर भारी जख्म करके भाग जाता है।]

कैसियो मैं हमेशा के लिये लँगडा हो गया। बचाओ, बचाओ, खून! खून!! (गिरता है।)

[ऑथेलो का प्रवेश]

ऑथेलो . यह तो कैसियो की आवाज है। तब वादा पूरा किया।

रोडरिगो : हाय मैं कितना नीच हूँ।

ऑथेलो : सच कहता है।

कैसियो बचाओ-बचाओ! डॉक्टर को

आॅथेलो : यह तो कैसियो ही है। ओ वीर और ईमानदार इआगो ! तूने किस वीरता से मेरे प्रति अन्याय का बदला लिया है। तूने मेरे सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। ओ विश्वासघातिनी स्त्री ! देख, यह तेरा प्रेमी मरा पडा है और शीघ्र ही तेरा नीच अंत भी समीप आ रहा है। ओ दुश्चरित्रे ! मै तेरे पास आ रहा हूँ। अपने हृदय से मैं तेरी मोहिनी को, तेरे सुन्दर नेत्रों को, दूर कर रहा हूँ। वह शैय्या जिसे तूने व्यभिचार से अपवित्र किया है अब तेरे लहू से भीग जायेगी, वासना की पुतली !

[प्रस्थान]

[लोडोविको और ग्रेशियानो का प्रवेश]

कैसियो : अरे कोई चौकीदार नहीं ? कोई राही नही ? खून ! खून !

ग्रेशियानो . कोई दुर्घटना हुई है। वडी भयानक आवाज़ है।

कैसियो : वचाओ ! वचाओ !

लोडोविको · सुनो-सुनो !

रोडरिगो : ओ नीच कमीने !

लोडोविको . दो या तीन कराह रहे हैं। बड़ी अंधेरी रात है। हो सकता है यह कोई जाल ही हो ! अक्ल से काम लेना चाहिये। जब तक और लोग न आ जाये वहाँ जाना ठीक नही।

रोडरिगो · कोई नही आता ! हाय सारा खून वह जायेगा ! मौत ही आ रही है · ·

लोडोविको : सुनो-सुनो !

[इआगो का बत्ती के साथ प्रवेश]

ग्रेशियानो : वह कोई कमीज पहने आ रहा है, वत्ती लिये हथियारो से सजा है।

इआगो : कौन है वहां ? खून-खून करके कौन चिल्ला रहा है।

लोडोविको : हम नही जानते ।

इआगो : क्या तुमने पुकार नही सुनी ?

कैसियो यहाँ भाई यहाँ । भगवान के लिये मदद करो, बचाओ मुझे··

इआगो बात क्या है ?

ग्रेशियानो : जहाँ तक मै समझता हूँ यह तो ऑथेलो का एन्शेन्ट है ।

लोडोविको : हाँ, है तो वही । बडा बहादुर आदमी है ।

इआगो कौन यहाँ इस बुरी तरह चिल्ला रहा है ?

कैसियो इआगो ? हाय मैं मारा गया । गुडो ने घेर लिया, मुझे बचाओ, मेरी मदद करो

इआगो : अरे तुम ! लेफ्टिनेंट ! किन बदमाशो ने यह हाल कर दिया ?

कैसियो मेरे खयाल से उनमे से एक तो यही पडा है कही, वह अधिक दूर नही गया होगा ।

इआगो ओ धोखेबाज़ बदमाशो !

(**लोडोविको और ग्रेशियानो से**) तुम यहाँ क्या कर रहे हो ? यहाँ आओ और कुछ मदद करो ।

रोडरिगो : मैं यहाँ हूँ, जरा सहारा दो ।

कैसियो : वह रहा उनमे से एक ।

इआगो ओ खूनी गुलाम ! ओ कमीने !

[**रोडरिगो को छुरा मार देता है ।**]

रोडरिगो : ओ नीच इआगो ! ओ नराधम कुत्ते !

इआगो · आदमियो को अँधेरे मे मारते हो ? कहाँ है ये खूनी बदमाश ? नगर कितना स्तब्ध है ! खून-खून ! तुम कौन हो ? तुम भले हो या बदमाश ?

लोडोविको · यह तो तुम हमारा व्यवहार देखकर ही जानोगे ।

इआगो · कौन ? श्रीमान् लोडोविको ?

लोडोविको हाँ, मै ही हूँ।

इआगो . क्षमा करे। यहाँ कैसियो गुण्डों के हाथ घायल होकर पडे है।

ग्रेशियानो : कैसियो !!

इआगो : कैसे हो भैया ! क्या हुआ ?

कैसियो मेरे पांव के दो टुकडे हो गये है।

इआगो : मेरी बचाए ! हे ईश्वर ! रोशनी लाइये ! श्रीमान् ! मैं इस पर अपनी कमीज़ से पट्टी बाँधूंगा।

[वियान्का का प्रवेश]

वियान्का : क्या वात हुई ? अरे ? कौन चिल्लाया था ?

इआगो : कौन चिल्लाया था ?

वियान्का : हाय ! मेरे प्यारे कैसियो ! मेरे प्रिय कैसियो ! ओ कैसियो ! कैसियो ! कैसियो !

इआगो : ओ विख्यात् दुराचारिणी वेश्या ! (कैसियो से) क्या तुम वता सकते हो, वे खूनी-वदमाश कौन थे ?

कैसियो : नही।

ग्रेशियानो . तुम्हारी यह दशा देखकर मुझे सचमुच वहुत दुख हो रहा है। मै तो तुम्हे ढूंढ रहा था।

इआगो : ज़रा इस पट्टी को सँभालने को एक गेटिस दीजिये। वस अव इन्हे आराम से ले चलने का हमे एक कुर्सी चाहिये।

वियान्का . हाय मुझ पर पहाड़ टूटे। वे तो वेहोश हो गये। कैसियो कैसियो ! कैसियो !

इआगो : सभ्रांत नागरिको ! मै इस वेकार के प्राणी पर संदेह करता हूँ। यह ज़रूर इस हमले मे शामिल है। ज़रा ठहरिये। रुको कैसियो ! हिम्मत रखो। लाओ, मुझे रोशनी थमाओ। हाँ, क्या हम इस चेहरे को पहचानते है ! हाय ! मेरे दोस्त, मेरे प्रिय

स्वदेशवासी ! रोडरिगो नही, अरे हाँ, निश्चय !! हे भगवान !
रोडरिगो !

ग्रेशियानो कौन ? वेनिस का ?

इआगो : वही-वही श्रीमान् ! क्या आप इसे जानते थे ?

ग्रेशियानो जानता था ! हाँ-हाँ !

इआगो : श्रीमान् ग्रेशियानो !! मुझे क्षमा करें। इस खूनी झमेले में मैं आपको अब तक पहचान नही सका।

ग्रेशियानो तुम्हे देखकर मुझे खुशी हुई !

इआगो क्या हाल है कैसियो ! एक कुर्सी चाहिये, एक कुर्सी !

ग्रेशियानो : रोडरिगो !

इआगो वही-वही, हाँ वही है। (एक कुर्सी लाई जाती है।) यह ठीक रहा। कुर्सी आ गई। कोई भला आदमी इसे ले चले यहाँ से अब ! होशियारी से ! मै जनरल के डॉक्टर को लाता हूँ। (बियान्का से) हाँ जी श्रीमती ! आप अपनी परेशानी छोड दीजिये ! कैसियो ! यह जो यहाँ मरा पडा है, मेरा दोस्त था, प्यारा दोस्त ! उसकी तुमसे क्या दुश्मनी थी ?

कैसियो कोई दुश्मनी नही थी। मै तो उसे जानता तक नही।

इआगो : (बियान्का से) तुम क्यो पीली पड गई हो ? (कुर्सी वालों से) अरे उसे ठडी हवा से हटा ले चलो।

[कैसियो और रोडरिगो वहाँ से हटाये जाते हैं।]

सभ्रात नागरिको ! जरा ठहरिये। हाँ श्रीमती ! तुम इतनी पीली क्यो पड गई हो ? देखते हैं नागरिक गण ! इसकी आंखो मे कैसी भयानकता है ? नही-नही ! तुम भले ही चुप खडी रहो, विना वोले ऐसे ही देखती रहो लेकिन हम जल्दी ही सारे मामले की तालाश कर लेंगे। श्रीमान् ! मै विनय करता हूँ कि इस पर नजर रखी जाये और

आप साफ देखेंगे कि इसका चेहरा हो सारे अपराध को बता देगा।

[इमीलिया का प्रवेश]

इमीलिया : अरे ! क्या बात हो गई ? मेरे स्वामी ! क्या हो गया ?

इआगो : कैसियो पर अधेरे मे यहाँ रोडरिगो ने अपने साथियो के साथ हमला किया। कैसियो के बहुत चोट आई है, पर रोडरिगो मर गया है।

इमीलिया . हाय। बेचारा कैसियो ! हाय-हाय ! कैसा भला आदमी है।

इआगो यह है वेश्याओं के पीछे लगे रहने का नतीजा। इमीलिया ! इसका पता लगाओ, आज रात कैसियो ने खाना किसके यहाँ खाया है। (बियान्का से) तुम क्यों घबरा रही हो यह सुन कर ?

बियान्का : मैं नहीं कांपती। उन्होने मेरे यहाँ भोजन किया था !

इआगो · अच्छा, तो यही बात है ? तो मै हुक्म देता हूँ कि तुम भी साथ चलो हमारे।

इमीलिया धिक्कार है तुझे रडी !

बियान्का · मैं रडी नही हूँ। तुम जो मुझे गाली दे रही हो मै भी तुम्हारी ही भाँति ईमानदारी से रहती हूँ।

इमीलिया : मुझ जैसी ! ओ रहने दे ! तुझ पर धिक्कार है।

इआगो . दयालु नागरिको ! चल कर पहले हम कैसियो के जखमो को देखें। चलो, अब कोई दूसरी ही कहानी भी सुनाना। इमीलिया ! तुम तुरत दौडकर दुर्ग मे जाओ और स्वामी और स्वामिनी से जो हुआ है कह सुनाओ ! (लोडोविको और ग्रेशियानो से) आप तो चलेंगे न ? (स्वगत) आज की रात है, या तो मुझे बना देगी या बिल्कुल बिगाड देगी।

[प्रस्थान]

दृश्य २

[दुर्ग में शयनागार । डैसडेमोना शैय्या पर सो रही है । आॅथेलो दीप के साथ प्रवेश करता है।]

आॅथेलो ओ मेरी आत्मा ! यही कारण है, यही कारण है, ओ पवित्र नक्षत्रो ! मै तुम्हारे सामने इस जघन्य पातक को कहते हुए भी हिचकता हूँ । यह ऐसा ही कारण है। फिर भी मै इसका रक्त नही बहाऊँगा । न इसकी हिम-श्वेत त्वचा की ही हानि करूँगा और न इसकी स्निग्ध-श्वेत मर्मर की सुघर प्रतिमा जैसी देह-यष्टि को ही विकृत करूँगा । किंतु इसे मरना ही होगा, अन्यथा यह न जाने कितने लोगो को छलेगी ! दीप बुझा दूँ और फिर यह दीपक भी बुझा दूँ। ओ ज्वलत आलोक ! यदि मै तुझे बुझाता हूँ और फिर मुझे खेद होता है तो फिर तुझे प्रदीप्त भी कर सकता हूँ। किंतु ओ प्रकृति के कौशल की पराकाष्ठा ! एक बार यदि मैंने तुझे बुझा दिया तो तुझे फिर से प्रदीप्त करने के लिये मैं फिर वह दैवी[1] ज्वाला कहाँ से लाऊँगा जो तू फिर लकलक कर उठे। एक बार गुलाब को तोड लेने के बाद तो वह मुरझायेगा ही, क्योकि मै उसे जीवत शक्ति नही दे सकता। इसलिये मैं इसे सूघ तो लूँ ! (डैसडेमोना का चुंबन लेता है।) इससे पहले कि यह मुरझा जाये ! मै इसे वृक्ष पर ही सूघ लूँ ! आह ! गर्वित श्वास ! तू तो मुझे विवश कर रही है कि मैं न्याय के खड्ग का सचालन भी रोक दूँ ! एक बार और ! यद्यपि न्याय कहता है कि मेरे लिये तेरी मृत्यु आवश्यक है, किंतु यदि मृत्यु के उपरात भी तू ऐसी ही सुदर दिखाई दी तो मै तुझे फिर भी प्यार करूँगा। एक चुबन और, और यही अतिम

---

१. प्रोमेथियस एक देवता था, जिसने मनुष्यो को अग्नि दी थी। यहाँ प्रोमेथियन अग्नि का अर्थ दैवी ज्वाला है ।

है ! तुझ जैसा रूप इतना घातक और भयानक तो कभी नही था ! तेरे भाग्य पर आँसू बहाये बिना मै नहीं रह सकता, किंतु मेरे आंसू मेरे हृदय को नही पिघलाते कि मै अपना दृढ निश्चय ही बदल लूं। आह निठुर आँसुओ ! कितनी दैवी वेदना है ! यह वही प्रहार करती है जहाँ इसका सचित प्रेम है ! यह तो जाग रही है !

डैसडेमोना कौन है ? आँथेलो ?

आँथेलो : हाँ डैसडेमोना !

डैसडेमोना : क्या आप शैय्या पर आयेंगे स्वामी ?

आँथेलो : आज रात तुमने प्रार्थना कर ली डैसडेमोना ?

डैसडेमोना : हाँ स्वामी !

आँथेलो · यदि तुम्हे अपना कोई ऐसा अपराध याद आता है जिसकी तुमने ईश्वर से क्षमा याचना नहीं की है तो शीघ्र ही उसे समाप्त कर लो।

डैसडेमोना · क्या कहते है स्वामी ?

आँथेलो : ऐसा ही करो और शीघ्र ही। मै यहीं टहल रहा हूँ। मै अनुद्यत आत्मा का नाश नही करूँगा। नही। ईश्वर क्षमा करे ! मै तुम्हारी आत्मा का नाश नही करूँगा।

डैसडेमोना : क्या आप हत्या की बात कर रहे है ?

आँथेलो : हाँ, हत्या ही।

डैसडेमोना . हे ईश्वर ! मुझ पर दया कर।

आँथेलो · मेरे हृदय की आवाज है—आमीन !

डैसडेमोना · आप यह कहते है, तो शायद मुझे मारेंगे नही ?

आँथेलो · हूँ।

डैसडेमोना . फिर भी मुझे आपसे डर लगता है, क्योंकि जब आपकी आंखे इस तरह घूमती है, मै जानती हूँ आप भयानक हो जाते हैं।

क्योकि मै निर्दोष हूँ और कोई कारण भी नही है, फिर मैं क्यो भयभीत रहूँ ? फिर भी न जाने क्यो मुझे भय लग रहा है !

ऑथेलो अपने पापो का स्मरण कर लो।

डैसडेमोना : वे और कुछ नही, आपको प्रेम करना अवश्य एक है।

ऑथेलो : हाँ और उसी के लिये तुम्हे मरना होगा।

डैसडेमोना : किंतु तुम्हे प्रेम करने से मुझे मरना होगा। क्या यह अस्वाभाविक नहीं ? हाय ! तुम क्यो अपने होठ चबा रहे हो ? अवश्य ही तुम्हारी हत्या करने का विचार है जो तुम इस तरह काँप रहे हो ! किंतु मुझे आशा है, मै आशा करती हूँ, ये सब मेरे लिये तो नही है ?

ऑथेलो चुप रहो। शात। हिलो नही !

डैसडेमोना : मै नही हिलूँगी ! लेकिन बात क्या है ?

ऑथेलो : वह रूमाल जिसे मैं इतना चाहता था और मैंने तुम्हे दिया था, वह तुमने कैसियो को दे दिया ?

डैसडेमोना अपने जीवन और प्राणों की कसम खाकर कहती हूँ— नही। उसे बुलाओ और पूछ लो।

ऑथेलो ओ सुदर आत्मा ! अब मिथ्या शपथ से सावधान रहो ! तुम अपनी मृत्यु-शैय्या पर हो।

डैसडेमोना नही, अभी से मृत्यु के लिये तो नही ?

ऑथेलो : हाँ-हाँ, अभी ! इसीलिये स्वतन्त्रता से अपने पाप को स्वीकार कर लो ! क्योकि यदि तुम एक-एक करके भी उन्हे अस्वीकार करती जाओगी, तब भी मेरे हृदय मे से तुम्हारे अपराध की दृढ धारणा नही मिटेगी, जो मेरे हृदय को मथे दे रही है। तुम्हे मरना ही होगा।

डैसडेमोना तब ईश्वर ही मेरा रक्षक है।

ऑथेलो : आमीन् !

डैसडेमोना : मुझ पर दया करो। मैंने तुम्हें जीवन मे कभी भी क्रुद्ध नही किया। कभी भी कैसियो से प्रेम नही किया, उतना ही किया जितना ईश्वरीय नियमों से एक मनुष्य दूसरे से कर सकता है। मैंने कोई स्मृति-चिह्न नही दिया।

ऑथेलो : ईश्वर की शपथ ! मैंने उसके हाथ मे अपना रूमाल देखा है। ओ झूठी कसम खाने वाली स्त्री ! तूने मुझे पाषाण-हृदय बना दिया है। तू मुझे हत्या की ओर प्रेरित कर रही है जब कि तेरे अंत को मैंने न्याय का बलिदान समझा था। मैंने स्वयं रूमाल देखा था।

डैसडेमोना तो उसे मिल गया होगा। मैंने उसे कभी नही दिया। उसे बुलवाओ। उसे सत्य स्वीकार करने दो।

ऑथेलो · उसने स्वीकार कर लिया है।

डैसडेमोना : क्या ! मेरे स्वामी !!

ऑथेलो : कि उसने तेरा भोग किया।

डैसडेमोना . कैसे ? गैर कानूनी तरीके से ?

ऑथेलो : हाँ।

डैसडेमोना . वह ऐसा नही कह सकता।

ऑथेलो : हाँ। अब वह नही बोल सकता क्योंकि वह नही रहा। ईमानदार इआगो ने इसका बदला ले लिया है।

डैसडेमोना · मुझे भय है आपको छला गया है। क्या वह मर गया ?

ऑथेलो : यदि जितने उसके शरीर के बाल है उतने भी उसके जीवन होते तब भी मेरी प्रतिहिंसा इतनी बडी है कि उन सबसे बदला लेती।

डैसडेमोना : हाय ! वह धोखा खा गया और मैं बरबाद हो गई।।

ऑथेलो : चुप रह वेश्या ! मेरे सामने ही तू उसके लिये रो रही है ?

डेसडेमोना मेरे स्वामी मुझे निर्वासित कर दे, पर मेरे प्राण न ले ।
आँथेलो पड़ी रह वेश्या !
डेसडेमोना : कल मुझे मार डालना । आज भर जीवित रहने दो !
आँथेलो . नही, यदि तूने प्रयत्न किया •
डेसडेमोना केवल आध घटा और
आँथेलो अव क्या देर जब निश्चय हो गया •
डेसडेमोना : एक बार प्रार्थना तो कर लूँ
आँथेलो : अब बहुत देर हो गई ।

[गला घोटता है ।]

इमीलिया (नेपथ्य से) स्वामी ! प्रभु ! स्वामी ! मेरे प्रभु !
आँथेलो कौन बुला रहा है ? क्या अभी नही मरी ? मैं जो इतना निर्दय हूँ फिर भी कितना दयालु हूँ मैं तुझे वेदना मे तडपने नही दूंगा ले ले !

[फिर गला घोंटता है ।]

इमीलिया : (नेपथ्य से) स्वामी ! सुनिये ! प्रभु !
आँथेलो . कौन है ?
इमीलिया : (नेपथ्य से) मेरे स्वामी ! मै आपसे एक बात कहना चाहती हूँ ।
आँथेलो हाँ, वही है, इमीलिया । ठहरो । वह मर गई है । मालूम देता है वह कैसियो की मौत की खबर देने आई है । हा ! अब यह बिल्कुल नही हिलती । कब्र की तरह खामोश ! चुप ! क्या उसे भीतर बुला लूं ? क्या यह ठीक होगा ? क्या यह फिर हिल रही है ? नही ! अब सबसे अच्छी बात क्या होगी ? यदि वह भीतर आयेगी तो वह जरूर मेरी स्त्री से बातें करेगी । मेरी स्त्री ! मेरी पत्नी ! कौन-सी पत्नी ! मेरी कोई पत्नी नही है । ओ असहनीय !

ओ भयानक क्षण ! ऐसा लगता है जैसे चंद्र और सूर्य्य को देर से ग्रहण ने ग्रस कर घोर अंधकार कर दिया है और भयभीत पृथ्वी मुँह खोल कर भयानक जमुहाइयाँ ले रही है।

इमीलिया : (नेपथ्य से) मै प्रार्थना करती हूँ, मेरे स्वामी। मुझे भीतर आने दीजिये, मै कुछ कहना चाहती हूँ।

आॅथेलो : अरे मैं तो तुझे भूल ही गया था! इमीलिया, भीतर आ जाओ। धीरे, ठहरो! मुझे पर्दे खीच लेने दो। कहाँ हो तुम?

[द्वार का ताला खोलता है। इमीलिया का प्रवेश]

क्या बात है?

इमीलिया : मेरे प्रिय स्वामी! वहाँ भयानक हत्या हो गई।

आॅथेलो . क्या इस समय ?

इमीलिया · हाँ देव। अभी।

आॅथेलो : यह तो चद्रमा का ही दोष है। वही मनुष्यो पर अपना भयानक प्रभाव डालता हुआ अपना पथ छोड कर घूम रहा है।

इमीलिया : कैसियो ने, देव! एक रोडरिगो नामक तरुण वेनिसवासी की हत्या कर दी है।

आॅथेलो : रोडरिगो मर गया। और कैसियो भी मर गया?

इमीलिया . नही, कैसियो नही मरा।

आॅथेलो · क्या कैसियो नही मरा! तब हत्या चूक गई और प्रिय प्रतिहिंसा कठोर और तीखी हो गई। आनद नही आया।

डैसडेमोना : हाय मै झूठ के लिये मारी गई।

इमीलिया : प्रभु! यह कैसी पुकार है?

आॅथेलो क्या? कैसी ?

इमीलिया : हाय! वह तो मेरी स्वामिनी का स्वर था! बचाओ! बचाओ! अरे! बचाओ! अरे! स्वामिनी! फिर बोलिये!

प्रिय डैसडेमोना ! ओ प्रिय स्वामिनी ! बोलो !

डैसडेमोना : मै निर्दोष मरती हूँ।

इमीलिया : हाय ! ऐसा काम किसने किया ?

डैसडेमोना : किसी ने नही   मैने ही   बिदा   मेरे स्वामी से मेरी ओर से कहो   अल   बिदा

[मृत्यु]

आॅथेलो : किस प्रकार इसकी हत्या हुई ?

इमीलिया : कौन जाने !

आॅथेलो : तुम्हे याद है न, इसने कहा था कि मैने ऐसा नही किया !

इमीलिया : हाँ, इन्होने कहा था। मै सत्य ही कहूँगी।

आॅथेलो : वह एक महान झूठी थी। वह नरक की ज्वालाओ मे जलने के लिये चली गई है। मैने ही उसकी हत्या की है।

इमीलिया : तब तो वह वास्तव मे कितनी महान देवी है और तुम और भी भयानक शैतान हो।

आॅथेलो : वह वासनामय स्त्री परपुरुषगामिनी थी, वेश्या की भाँति थी।

इमीलिया : कितनी नीचता से तुम उसकी व्यर्थ निंदा करते हो और तुम पूरे शैतान हो !

आॅथेलो : वह जल की भाँति चचल थी।

इमीलिया : और तुम उसे विश्वासघातिनी कहते हुए अग्नि की भाँति क्रूर और हठी हो। वह देवी थी, पतिव्रता।

आॅथेलो : यदि मुझे इतने उग्र पथ पर चलने के ठोस कारण न होते तो मै इतनी जघन्य धिक्कार का पात्र होता कि नरक की भी निम्नतम गहराई मुझे अपने भीतर नही रख पाती। तुम्हारा पति सब जानता है।

इमीलिया : मेरा पति ?

ऑथेलो : हाँ तुम्हारा पति !

इमीलिया : कि वह अपने पवित्र वैवाहिक बंधन के प्रति विश्वास-घातिनी थी ?

ऑथेलो . हाँ, इसके कैसियो से अनैतिक संबध थे। यदि यह पवित्र होती तो भले ही परमात्मा ने मेरे लिये एक भिन्न ससार वनाया होता, एक ऐसा संसार जो केवल एक ही अद्भुत और अनुपम मरकतमणि को काट कर बनाया गया होता तो भी उसे मै डैसडेमोना के वदले में स्वीकार नही करता।

इमीलिया : मेरा पति !

ऑथेलो · हाँ ! उसी ने सबसे पहले मुझे बताया ! वह एक ईमानदार आदमी है और दुष्कर्मों पर चिपके कर्दम से घृणा करता है।

इमीलिया : मेरा पति !

ऑथेलो · ओ औरत ! तू क्या इसे वार-वार दुहराती है ! हाँ, तेरा पति ! तेरा पति !

इमीलिया : आह स्वामिनी ! नीचता प्रेम से अपना खेल खेल गई। मेरा पति कहे कि यह विश्वासघातिनी थी ?

ऑथेलो . हाँ री स्त्री ! उसी ने कहा। मै कहता हूँ तेरा ही पति था। समझती है न ? मेरा दोस्त, तेरा पति। ईमानदार सच्चा इआगो !

इमीलिया · यदि उसने ऐसा कहा है तो उसकी कुटिल आत्मा तिल-तिल कर सड़े। उसने गहरी झूठ बोली है। तुम जैसे गदे पति को चुनने वाली वह स्त्री तुमसे ही बहुत प्रेम करती थी।

ऑथेलो : हा . हा

इमीलिया : जो भी बुराई कर सको करो। तुम उसके लिये ऐसे ही अयोग्य थे जैसे स्वर्ग के लिये तुम्हारा यह कार्य्य !

ऑथेलो : बेहतर हो तू बोलना वन्द कर दे।

प्रिय डैसडेमोना ! ओ प्रिय स्वामिनी ! बोलो !

डैसडेमोना : मै निर्दोष मरती हूँ ।

इमीलिया : हाय ! ऐसा काम किसने किया ?

डैसडेमोना : किसी ने नही मैने ही बिदा मेरे स्वामी से मेरी ओर से कहो अल बिदा

[मृत्यु]

ऑथेलो : किस प्रकार इसकी हत्या हुई ?

इमीलिया : कौन जाने !

ऑथेलो : तुम्हे याद है न, इसने कहा था कि मैने ऐसा नही किया !

इमीलिया . हाँ, इन्होने कहा था । मै सत्य ही कहूँगी ।

ऑथेलो : वह एक महान झूठी थी । वह नरक की ज्वालाओ मे जलने के लिये चली गई है । मैने ही उसकी हत्या की है ।

इमीलिया : तब तो वह वास्तव में कितनी महान देवी है और तुम और भी भयानक शैतान हो ।

ऑथेलो . वह वासनामय स्त्री परपुरुषगामिनी थी, वेश्या की भाँति थी।

इमीलिया : कितनी नीचता से तुम उसकी व्यर्थ निंदा करते हो और तुम पूरे शैतान हो !

ऑथेलो : वह जल की भांति चचल थी ।

इमीलिया : और तुम उसे विश्वासघातिनी कहते हुए अग्नि की भॉति क्रूर और हठी हो । वह देवी थी, पतिव्रता ।

ऑथेलो : यदि मुझे इतने उग्र पथ पर चलने के ठोस कारण न होते तो मैं इतनी जघन्य धिक्कार का पात्र होता कि नरक की भी निम्नतम गहराई मुझे अपने भीतर नही रख पाती । तुम्हारा पति सब जानता है ।

इमीलिया : मेरा पति ?

आॅथेलो · हाँ तुम्हारा पति !

इमीलिया : कि वह अपने पवित्र वैवाहिक बंधन के प्रति विश्वास-घातिनी थी ?

आॅथेलो . हाँ, इसके कैसियो से अनैतिक संबंध थे। यदि यह पवित्र होती तो भले ही परमात्मा ने मेरे लिये एक भिन्न ससार बनाया होता, एक ऐसा ससार जो केवल एक ही अद्भुत और अनुपम मरकतमणि को काट कर बनाया गया होता तो भी उसे मै डैसडेमोना के बदले में स्वीकार नही करता।

इमीलिया . मेरा पति !

आॅथेलो : हाँ ! उसी ने सबसे पहले मुझे बताया ! वह एक ईमानदार आदमी है और दुष्कर्मों पर चिपके कर्दम से घृणा करता है ।

इमीलिया . मेरा पति !

आॅथेलो · ओ औरत ! तू क्या इसे बार-बार दुहराती है ! हाँ, तेरा पति ! तेरा पति !

इमीलिया . आह स्वामिनी ! नीचता प्रेम से अपना खेल खेल गई । मेरा पति कहे कि यह विश्वासघातिनी थी ?

आॅथेलो : हाँ री स्त्री ! उसी ने कहा। मैं कहता हूँ तेरा ही पति था । समझती है न ? मेरा दोस्त, तेरा पति। ईमानदार सच्चा इआगो !

इमीलिया : यदि उसने ऐसा कहा है तो उसकी कुटिल आत्मा तिल-तिल कर सडे। उसने गहरी झूठ बोली है। तुम जैसे गंदे पति को चुनने वाली वह स्त्री तुमसे ही बहुत प्रेम करती थी।

आॅथेलो : हा. . हा ..

इमीलिया : जो भी बुराई कर सको करो। तुम उसके लिये ऐसे ही अयोग्य थे जैसे स्वर्ग के लिये तुम्हारा यह कार्य्य !

आॅथेलो : बेहतर हो तू बोलना बन्द कर दे।

इमीलिया : जितना दुख में झेल सकती हूँ, मुझे नुकसान पहुँचाने की उससे आधी भी ताकत तुममें नही है। ओ मूर्ख ! ओ बोदे ! धूल और कूडे की तरह अज्ञानी, व्यर्थ ! तूने कितना भयानक कार्य्य किया है, मै तेरी तलवार से नही डरती, मैं ससार मे तेरा नाम सबसे कह दूंगी, भले ही मुझे अपने बीस जीवन खोने पड़ें बचाओ बचाओ . अरे बचाओ मूर ने मेरी स्वामिनी की हत्या कर दी है खून खून

[मोनटानो, ग्रेशियानो, इत्यादि का प्रवेश]

मोनटानो : क्या बात हुई ? क्यो जनरल ! क्या हुआ ?

इमीलिया : अच्छा इआगो ! तुम आ गये ! खूब किया तुमने ! अच्छा है कि लोग खून करके तुम पर जिम्मेदारी थोपे ।

ग्रेशियानो : बात क्या है ?

इमीलिया : (इआगो से) यदि तुम आदमी हो तो इस नीच (ऑथेलो) की बात को काटो। यह कहता है कि तुमने इससे कहा था कि इसकी स्त्री विश्वासघातिनी थी । मै जानती हूँ तुमने नही कहा होगा, तुम ऐसे कमीने नही हो। बोलो ! मेरा हृदय भर आया है।

इआगो : जो मैंने सोचा वही मैंने इनसे कहा था, जो मुझे सच और ठीक लगा उससे अधिक मैंने कुछ नही कहा।

इमीलिया : पर क्या तुमने कभी इससे कहा था कि वह कुटिला थी ?

इआगो : हाँ कहा था।

इमीलिया . तब तू भी झूठा है, घृणित है, झूठा शैतान है। परमात्मा की सौगन्ध यह एक भीषण झूठ है कि डैसडेमोना के कैसियो से अनुचित सम्बन्ध थे। क्या कहा था—कैसियो से ?

इआगो : हाँ कैसियो से ही। अब चुप रहो, अपनी जीभ पर काबू करो।

इमीलिया : मै नही रुकूंगी। मैं तो जरूर बोलूंगी। मेरी स्वामिनी

विस्तर मे पडी है, उसकी हत्या हुई है।

सब : हे भगवान ! यह क्या हुआ !

इमीलिया : (इआगो से) तो तुम्हारी खबरो से आँथेलो ने भडक कर यह हत्या की है ?

आँथेलो : नही सज्जनो ! इस तरह आँखें फाडकर न देखिये। वास्तव में यह सच है।

ग्रेशियानो : कितना विचित्र सत्य है।

मोनटानो : कितना भयानक कार्य्य है !

इमीलिया : नीचता ! कमीनापन ! वदमाशी ! मुझे इसमे भयानक शैतानी दिखाई दे रही है। जी करता है, मै तो इस पीडा से मर जाऊँ।

इआगो : क्या तुम होश मे नही हो। मै कहता हूँ घर चली जाओ।

इमीलिया : योग्य सज्जनो। मुझे वोलने की आज्ञा दो। यही उचित है कि मै इसकी आज्ञा का पालन करूँ। किंतु इस समय नही। शायद इआगो अब कभी घर नही लौटेगा।

आँथेलो ओह ! ओह !

[विस्तर पर गिरता है।]

इमीलिया : नही। वही पडे-पड़े अब दहाड़ो क्योकि तुमने इस ससार के सवसे सुन्दर जीवित प्राणी की हत्या की है !

आँथेलो : (उठ कर) नही वह विश्वासघातिनी थी ! (ग्रेशियानो से) अरे चाचा ! मै तो आपको पहँचान भी नही पाया। वह रही आपकी भतीजी ! मैने ही अभी उसका गला घोंटा है। मै जानता हूँ यह कार्य्य भयानक और राक्षसी प्रतीत होता है।

ग्रेशियानो : वेचारी डैसडेमोना ! मै इसी वात से प्रसन्न हूँ, तेरे जिस पिता को तेरे विवाह से गहरा धक्का लगा था अचानक ही कुछ

इमीलिया : जितना दुख मै झेल सकती हूँ, मुझे नुकसान पहुँचाने की उससे आधी भी ताकत तुममें नही है। ओ मूर्ख! ओ बोदे! धूल और कूडे की तरह अज्ञानी, व्यर्थ! तूने कितना भयानक कार्य्य किया है, मै तेरी तलवार से नही डरती, मै ससार मे तेरा नाम सबसे कह दूंगी, भले ही मुझे अपने बीस जीवन खोने पडें बचाओ बचाओ अरे बचाओ मूर ने मेरी स्वामिनी की हत्या कर दी है खून खून

[मोनटानो, ग्रेशियानो, इत्यादि का प्रवेश]

मोनटानो : क्या बात हुई? क्यो जनरल! क्या हुआ?

इमीलिया : अच्छा इआगो! तुम आ गये! खूब किया तुमने! अच्छा है कि लोग खून करके तुम पर ज़िम्मेदारी थोपें।

ग्रेशियानो : बात क्या है?

इमीलिया : (इआगो से) यदि तुम आदमी हो तो इस नीच (ऑथेलो) की बात को काटो। यह कहता है कि तुमने इससे कहा था कि इसकी स्त्री विश्वासघातिनी थी। मै जानती हूँ तुमने नही कहा होगा, तुम ऐसे कमीने नही हो। बोलो! मेरा हृदय भर आया है।

इआगो : जो मैने सोचा वही मैने इनसे कहा था, जो मुझे सच और ठीक लगा उससे अधिक मैने कुछ नही कहा।

इमीलिया : पर क्या तुमने कभी इससे कहा था कि वह कुटिला थी?

इआगो : हाँ कहा था।

इमीलिया : तब तू भी झूठा है, घृणित है, झूठा शैतान है। परमात्मा की सौगन्ध यह एक भीषण झूठ है कि डैसडेमोना के कैसियो से अनुचित सम्बन्ध थे। क्या कहा था—कैसियो से?

इआगो : हाँ कैसियो से ही। अब चुप रहो, अपनी जीभ पर काबू करो।

इमीलिया : मै नही रुकूंगी। मै तो जरूर बोलूंगी। मेरी स्वामिनी

विस्तर मे पडी है, उसकी हत्या हुई है।

सब : हे भगवान ! यह क्या हुआ !

इमीलिया : (इआगो से) तो तुम्हारी खबरो से आँथेलो ने भड़क कर यह हत्या की है ?

ऑथेलो : नही सज्जनो ! इस तरह आँखें फाडकर न देखिये। वास्तव में यह सच है।

ग्रेशियानो : कितना विचित्र सत्य है।

मोनटानो : कितना भयानक कार्य्य है !

इमीलिया : नीचता ! कमीनापन ! वदमाशी ! मुझे इसमे भयानक शैतानी दिखाई दे रही है। जी करता है, मै तो इस पीडा से मर जाऊँ।

इआगो : क्या तुम होश मे नही हो। मै कहता हूँ घर चली जाओ।

इमीलिया : योग्य सज्जनो। मुझे वोलने की आज्ञा दो। यही उचित है कि मै इसकी आज्ञा का पालन करूँ। किंतु इस समय नही। शायद इआगो अब कभी घर नही लौटेगा।

ऑथेलो : ओह ! ओह !

[विस्तर पर गिरता है।]

इमीलिया : नही। वही पडे-पड़े अब दहाडो क्योकि तुमने इस ससार के सबसे सुन्दर जीवित प्राणी की हत्या की है !

ऑथेलो : (उठ कर) नही वह विश्वासघातिनी थी ! (ग्रेशियानो से) अरे चाचा ! मै तो आपको पहँचान भी नही पाया। वह रही आपकी भतीजी ! मैने ही अभी उसका गला घोटा है। मै जानता हूँ यह कार्य्य भयानक और राक्षसी प्रतीत होता है।

ग्रेशियानो : वेचारी डैसडेमोना ! मैं इसी वात से प्रसन्न हूँ, तेरे जिस पिता को तेरे विवाह से गहरा धक्का लगा था अचानक

इमीलिया : जितना दुख मैं झेल सकती हूँ, मुझे नुकसान पहुँचाने की उससे आधी भी ताकत तुममें नहीं है। ओ मूर्ख! ओ बोदे! धूल और कूडे की तरह अज्ञानी, व्यर्थ! तूने कितना भयानक कार्य्य किया है, मै तेरी तलवार से नही डरती, मै ससार मे तेरा नाम सबसे कह दूंगी, भले ही मुझे अपने बीस जीवन खोने पड़ें बचाओ बचाओ अरे बचाओ मूर ने मेरी स्वामिनी की हत्या कर दी है खून खून

[मोनटानो, ग्रेशियानो, इत्यादि का प्रवेश]

मोनटानो : क्या बात हुई ? क्यो जनरल! क्या हुआ ?

इमीलिया : अच्छा इआगो! तुम आ गये! खूब किया तुमने! अच्छा है कि लोग खून करके तुम पर ज़िम्मेदारी थोपें।

ग्रेशियानो : बात क्या है ?

इमीलिया : (इआगो से) यदि तुम आदमी हो तो इस नीच (ऑथेलो) की बात को काटो। यह कहता है कि तुमने इससे कहा था कि इसकी स्त्री विश्वासघातिनी थी। मै जानती हूँ तुमने नही कहा होगा, तुम ऐसे कमीने नही हो। बोलो! मेरा हृदय भर आया है।

इआगो : जो मैंने सोचा वही मैंने इनसे कहा था, जो मुझे सच और ठीक लगा उससे अधिक मैंने कुछ नही कहा।

इमीलिया : पर क्या तुमने कभी इससे कहा था कि वह कुटिला थी ?

इआगो : हाँ कहा था।

इमीलिया : तब तू भी झूठा है, घृणित है, झूठा शैतान है। परमात्मा की सौगन्ध यह एक भीषण झूठ है कि डैसडेमोना के कैसियो से अनुचित सम्बन्ध थे। क्या कहा था—कैसियो से ?

इआगो : हाँ कैसियो से ही। अब चुप रहो, अपनी जीभ पर काबू करो।

इमीलिया . मै नही रुकूंगी। मै तो जरूर बोलूंगी। मेरी स्वामिनी

विस्तर मे पडी है, उसकी हत्या हुई है।

सब : हे भगवान ! यह क्या हुआ !

इमीलिया : (इआगो से) तो तुम्हारी खबरों से ऑथेलो ने भड़क कर यह हत्या की है ?

ऑथेलो : नही सज्जनो ! इस तरह आँखें फाड़कर न देखिये। वास्तव मे यह सच है।

ग्रेशियानो : कितना विचित्र सत्य है।

मोनटानो : कितना भयानक कार्य्य है !

इमीलिया : नीचता ! कमीनापन ! बदमाशी ! मुझे इसमे भयानक शैतानी दिखाई दे रही है। जी करता है, मै तो इस पीडा से मर जाऊँ।

इआगो : क्या तुम होश मे नही हो। मै कहता हूँ घर चली जाओ।

इमीलिया : योग्य सज्जनो। मुझे बोलने की आज्ञा दो। यही उचित है कि मै इसकी आज्ञा का पालन करूँ। किंतु इस समय नही। शायद इआगो अब कभी घर नही लौटेगा।

ऑथेलो . ओह ! ओह !

[विस्तर पर गिरता है।]

इमीलिया : नही। वही पडे-पड़े अब दहाड़ो क्योकि तुमने इस ससार के सबसे सुन्दर जीवित प्राणी की हत्या की है !

ऑथेलो : (उठ कर) नही वह विश्वासघातिनी थी ! (ग्रेशियानो से) अरे चाचा ! मै तो आपको पहॅचान भी नही पाया। वह रही आपकी भतीजी ! मैने ही अभी उसका गला घोटा है। मै जानता हूँ यह कार्य्य भयानक और राक्षसी प्रतीत होता है।

ग्रेशियानो : बेचारी डेसडेमोना ! मै इसी बात से प्रसन्न हूँ, तेरे जिस पिता को तेरे विवाह से गहरा धक्का लगा था अचानक ही कुछ

समय पहले मर चुका है। अब यदि वह जीवित रहता तो इस दृश्य ने तो उसे पागल कर दिया होता। सच! उसमें से भलमनसाहत तो बिल्कुल ही चली गई होती और वह फिर बुरे ही बुरे कामो में लग जाता।

ऑथेलो : सच यह बहुत बुरी बात है। लेकिन इआगो जानता है कि डैसडेमोना के कैसियो से अनुचित सबध थे। कैसियो ने इस बात को स्वय स्वीकार किया था। और इसने अपने प्रेम की यादगार के तौर पर कैसियो को एक भेंट भी दी थी जो कि एक दफा मैंने इसे दी थी। मैने स्वय अपना रूमाल देखा था—वह मेरे पिता ने मेरी माता को दिया था, वह कैसियो के हाथ मे था।

इमीलिया · ओ दैवी शक्तियो! हे भगवान!

इआगो : चुप रहो! ज़बान पर काबू करो!

इमीलिया : अब तो सचाई को बाहर आना ही पडेगा। मैं क्यो न बोलूं। मै तो निडर हो कर बोलूंगी। ऐसे जैसे उत्तर का निर्भीक प्रभजन चलता है। चाहे परमात्मा, सारे मनुष्य और सारे शैतान मिल कर भी क्यो न मेरे विरुद्ध चिल्ला उठे 'धिक्कार है निर्लज्ज' किन्तु फिर भी मैं बोलूंगी।

इआगो अक्ल से काम लो और घर जाओ।

इमीलिया नही जाऊँगी!

[इआगो इमीलिया को तलवार से मारने का प्रयत्न करता है।]

ग्रेशियानो : क्या स्त्री पर तलवार उठाते हो? धिक्कार है!

इमीलिया : ओ मूर्ख मूर! तू उस रूमाल की कहता है? वह तो किस्मत मे मुझे मिल गया था और मैने अपने पति को दिया था क्योकि अक्सर कर यह बहुत ही अनुनय करके, इतना कि इतनी-सी चीज़

के लिये कोई नही करता, मुझसे उसे चुरा लेने की प्रार्थना किय करता था।

इआगो : ओ वदमाश छिनाल !

इमीलिया : डैसडेमोना ने उसे कैसियो को दिया था! नहीं। हाय ! व मुझे मिला था और मैने उसे अपने पति को दिया था।

इआगो : नीच, तू झूठ वोलती है !

इमीलिया : ईश्वर की सौगंध ! मै झूठ नही कहती, मै झूठ नही वोलती सज्जनो ! अरे हत्यारे मूर्ख ! क्या ऐसा मूर्ख ऐसी कुलीन स्त्री योग्य था !

ऑथेलो : क्या आकाश मे अव ऐसा कोई वज्र नही जो इस जघन्य ट टूट सके ? ओ महान नीच ! नराधम !

[इआगो पर हमला करने दौड़ता है। इआगो पीछे से इमीलिया के तलवार घुसेड़ कर भाग जाता है।]

ग्रेशियानो : स्त्री गिर गई। निश्चित ही उसने अपनी स्त्री की हत्या कर दी।

इमीलिया : आह उसने मुझे मार डाला···मुझे मेरी स्वामिनी पास ही लिटाना ·

ग्रेशियानो : वह भाग गया किन्तु उसकी स्त्री मारी गई !

मोनटानो : यह तो वडा भारी वदमाश था ! यह लीजिये, यह शस्त्र मैंने अभी मूर से छीन लिया है। आइये, द्वार पर दृष्टि रखि उसे जाने न दें। अगर भागने की चेष्टा करे तो जान से म डाले। मैं उसी वदमाश के पीछे जाता हूँ, कैसा नीच गुलाम है

[सब जाते हैं। ऑथेलो और इमीलिया रह जाते हैं।]

ऑथेलो : अव मुझमे वह वीरता भी नही रही। एक तुच्छ व्यक्ति हाथ से मेरी तलवार छीन ले गया ! और ईमानदारी से हट

सम्मान रहे भी कहाँ ? जाने दो, सब कुछ जाने दो !

इमीलिया : तुम्हारे गीत ने क्या भविष्य की छाया दिखादी देवी ! सुनती हो ! क्या मेरी सुन रही हो ? मै हसिनी हूँ, सगीत में मेरा अत है ।[1]

[गीत]

चीड के ऊँचे घने तरु की
सलोनी छाँह में......
दीन मन कितनी न भर लीं आह हैं
गीत गाती जा सलोनी बेल से......

मूर ! वह पतिव्रता स्त्री थी वह तुम्हे प्यार करती थी निर्दय मूर ! मैंने सत्य कहा है, मेरी आत्मा पवित्र हो मैंने सत्य कहा है यही कहते हुए मै मरती हूँ मै मरती हूँ

[मृत्यु]

आॅथेलो · मेरे पास इस कमरे मे एक और शस्त्र है । वह स्पेन की तलवार है, बर्फीले पानी मे बुझा कर उसका लोहा तैयार किया गया है यह रही (पुकार कर) चाचा ! मै बाहर आऊँगा ।

ग्रेशियानो : (नेपथ्य से) यदि तुम ऐसा प्रयत्न करोगे तो गहरा मोल चुकाओगे । तुम्हारे पास कोई आयुध नही और विवश होकर तुम्हे हानि उठानी पडेगी ।

आॅथेलो : इधर देखो और तब बात करो । क्या मै आयुधहीन हूँ, लो मै आक्रमण करता हूँ ।

[ग्रेशियानो का प्रवेश]

ग्रेशियानो : क्या बात है ?

आॅथेलो : यह देखो, मेरे पास शस्त्र है । किसी सैनिक के पास इससे

---

१ कहते हैं, मरते समय हंस गाता है ।

अच्छा शस्त्र नही था। एक दिन मैने ऐसा भी देखा है जब इस छोटे-से तीखे खड्ग से मैने ऐसे पथ की बाधाएँ दूर की है जो तुम जैसी बाधा से बीस गुनी भयानक थी। किंतु अब यह सब व्यर्थ की प्रशंसा है। कौन अपने भाग्य पर विजय पा सकता है? अब वह सब नही रहा। किंतु मुझे सशस्त्र देख कर भयभीत न होओ। मै अपनी जीवन-यात्रा के अत तक आ पहुँचा हूँ। यही मेरी मजिल है और इससे आगे मेरा गतव्य नही, यही मेरी गति का अतिम लक्ष्य है। क्या तुम्हे इसका खेद है! अब यह सब एक विनष्ट भय-मात्र है। अब तो कोई भी ऑथेलो को मार सकता है। ऑथेलो अब कहाँ जाये? इस अपराध के बाद उसको कहाँ शरण है? (डैसडेमोना के पास जा कर) ओ हत भागिनी! क्या देख रही है तू! कैसी पीली पड़ गई है तू! जैसे तेरा अधोवस्त्र हो! क्या हम अब न्याय के दिन मिलेगे? तेरी यह दृष्टि तो मेरी आत्मा को स्वर्ग से नीचे फेक देगी और शैतान इसे पकड़ लेगे। कैसी शीतल हो गई है, निर्जीव! जैसे तेरा पातिव्रत था। ओ नीच अभिशप्तदास! ओ शैतानो! मुझे मारो, मुझे कोड़े मारो! इतना मारो कि मै इस दैवी दृश्य से दूर हो जाऊँ! मुझे तूफानो मे तिनके की तरह उडाओ! मुझे खौलते हुए गंधक मे उबालो! मुझे अथाह तरल अग्नि की खाड़ियो मे बार-बार भिगो कर पछाडो! ओ डैसडेमोना! डैसडेमोना! तू मर गई है · · हा-हा-हा ·

[लोडोविको, मोनटानो, कैसियो को एक कुर्सी में उठाये कुछ लोग तथा अन्य अफसर इआगो को बंदी बना कर लाते हैं।]

लोडोविको : वह आतुर और अत्यत हतभागी कहाँ है?

ऑथेलो : क्या तुम्हारा मतलब उससे है जो पहले ऑथेलो कहलाता था! लो वह मै हूँ!

लोडोविको : और वह धोखेबाज़ कहाँ है। पकड के लाओ उस नराधम को।

ऑथेलो : मै उसके पाँव तो देख लूं[1]। लेकिन वह तो एक दतकथा है। किंतु एक शैतान मैं स्वय हूँ, मै तुझे कैसे मारूँ

[इआगो को घायल करता है।]

लोडोविको : इससे वह तलवार छीन लो।

इआगो : मै घायल हो गया हूँ श्रीमान् मगर मरा नही हूँ।

ऑथेलो : मुझे इसका खेद नही है। मै यही चाहता हूँ कि तुम जीवित रहो। क्योकि मेरी राय मे मृत्यु तो छुटकारा है। आनद है।

लोडोविको : अरे ऑथेलो! एक समय तुम इतने वीर और उदात्त थे किन्तु तुम इस अभिशप्त दास के कुटिल षड्यत्र मे फँस गये। तुम्हारे बारे मे क्या कहा जाये ?

ऑथेलो : मुझसे कुछ भी क्यो न कहा जाये श्रीमान् मै एक सम्मा-ननीय हत्यारा हूँ क्योकि मैने घृणा से हत्या नही की। आत्मसम्मान के लिये की है

लोडोविको : इस नीच ने कुछ हद तक तो अपनी बदमाशी को मजूर कर लिया है। क्या तुमने और इसने मिल कर कैसियो की हत्या का आयोजन किया था ?

ऑथेलो : हाँ।

कैसियो : किन्तु प्रिय जनरल! मैने तो आपका कुछ नही बिगाडा था ?

ऑथेलो : मै मानता हूँ, और क्षमा चाहता हूँ। क्या तुम मनुष्य के रूप मे छिपे इस (इआगो) शैतान से पूछोगे कि किस लिये इसने मेरे शरीर और आत्मा को अपने जाल मे फँसाया ?

---

१. शैतान के पांव नहीं खुर होते हैं।

इआगो : मुझसे कुछ मत पूछो। जो तुम जानते हो वही जानो। अब से मैं एक भी शब्द नही बोलूँगा।

लोडोविको : प्रार्थना भी नही करोगे ?

ग्रेशियानो : यातना मिलेगी न, तो आप बोलने लगेगा। वही इसकी जीभ खुलवायेगी।

ऑथेलो : यही सबसे अच्छा रहेगा।

लोडोविको : मै जहाँ तक समझता हूँ आप नही जानते, पर अब सब समझ जायेंगे। यह मृत रोडरिगो की जेब से निकला हुआ एक पत्र है और यह एक और है। इनमे से एक पत्र से ज्ञात होता है कि रोडरिगो ने कैसियो की हत्या करने का भार उठाया था।

ऑथेलो : ओह कैसा बदमाश था!

कैसियो : शैतान! भयानक! क्रूर!

लोडोविको : यह दूसरा पत्र है, जिसमे रोडरिगो इआगो से शिकायत करता है कि इसने डैसडेमोना के सम्बन्ध मे अपने वादे पूरे नही किये। यह पत्र रोडरिगो इस नीच बदमाश इआगो को भेजना चाहता था लेकिन बीच मे ही इआगो उससे मिला और इसने उसे किसी तरह समझा-बुझा दिया।

ऑथेलो : ओ कमीने बदमाश!! सुनो कैसियो! तुमको मेरी पत्नी का रूमाल कैसे मिला ?

कैसियो : वह मुझे अपने कमरे मे पडा मिला, पर अब तो इसने स्वीकार ही कर लिया है कि इसी ने अपना उल्लू साधने को उसे विशेषकर मेरे कमरे मे डाला था।

ऑथेलो : सुन ले मूर्ख! सुन ले! मूर्ख! नितात मूर्ख!

कैसियो : रोडरिगो के पत्र में इआगो को बुरा-भला भी कहा गया है, क्योंकि इसने उसे उत्सव की रात को मुझसे ड्यूटी के वक्त भिड़ा

दिया था जिसकी वजह से मेरी नौकरी जाती रही। और अभी-अभी रोडरिगो जो काफी देर तक ज़ाहिरा तौर पर मुर्दा-सा पडा रहा, कुछ देर को उठा था और उसने बताया था कि मुझ पर हमला करके घायल करने वाला इआगो ही था।

लोडोविको : आप अब इस कमरे को छोडें और हमारे साथ आयें। आप साइप्रस के अधिकार से वंचित किये जाते हैं और आपकी जगह कैसियो शासन करेंगे। और जहाँ तक इस गुलाम इआगो का सवाल है, इसको तो भयानक से भयानक दण्ड दिया जायेगा जिसमे इसे बहुत ही कडी यातना झेलनी पडे। आप तब तक बंदी बनाकर रखे जायेंगे जब तक आपके अपराध की सूचना वेनिस सरकार तक नही पहुँचा दी जाती।

आँथेलो : आपके जाने के पहले मै दो शब्द कहना चाहता हूँ। जाने के पहले मुझे बोलने की आज्ञा दीजिये। वे जानते हैं कि मैंने राज्य की क्या-क्या सेवाएँ की है और अब मै उनका गर्व भी नही करूँगा। मै आपसे केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि इस हतभाग्य घटना का वर्णन करते समय आप जब मेरे विषय को लें तब वही लिखे जैसा कि मै वास्तव मे था। न कुछ कम करे, न विद्वेष से कुछ बढायें ही, तब आपको यही लिखना होगा कि मैंने बुद्धिमानी से नही, वरन् बहुत गहराई से प्रेम किया था। मेरी ईर्ष्या मामूली बातो से नही जाग सकती थी, किंतु जब एक बार वह भडक उठती थी तो वह मुझे पराकाष्ठा की यातना देती थी। मै ऐसा था जिसने एक अमूल्य और अद्वितीय स्त्री खो दी थी, जैसे कोई नीच भारतीय अपनी जाति से भी मूल्यवान मोती को फेंक देता है। मै ऐसा था जिसकी आखें नही बरसती थी, किंतु अब जब रोने को

मजबूर किया गया हूँ तो आँसू ऐसे टपक रहे है जैसे अरब के वृक्षों का गोद टपका करता है। यह सब लिखना और अंत मे लिखना कि एक वार एलप्पो मे जब एक ईर्ष्यालु साफा बांधे तुर्क ने एक वेनिसवासी को मारा और हमारे राज्य को गाली दी, तब मैंने उस सुन्नत किये हुए कुत्ते की गर्दन पकड ली और इस तरह से उसे मार डाला जैसे अब मै अपने को मारता हूँ

[आत्महत्या करता है।]

लोडोविको : कैसा भयानक समय है।

ग्रेशियानो : हमारा सारा विवाद ही ऑथेलो की आत्महत्या से व्यर्थ हो गया

ऑथेलो : (डेसडेमोना से) मैंने तेरी हत्या करने के पहले तेरा चुबन लिया था ·· इसी तरह जैसे अब लेता हूँ अब मै भी मरता हूँ · एक चुबन पर न्योछावर होकर ·

[शैय्या पर गिरकर मृत्यु]

कैसियो : मुझे तो इसका पहले ही डर था। पर मै समझता था इसके पास आयुध नही है अत अपने को मार नही सकेगा। निस्सदेह इसका हृदय महान् था।

लोडोविको : (इमागो से) अरे वर्बर कुत्ते! तू वुभुक्षा, उन्नद्ध सिधु और विक्षोभ से भी अधिक क्रूर है। देख इस शैय्या पर कितनी वेदना सचित पडी है। यह तेरा कार्य्य है · देखकर ही नयनो मे विषाक्त छाया पडती है। इन्हे ढँक दो। इन्हे ढँक दो। ग्रेशियानो! तुम इस घर की देखभाल करो। मूर की संपत्ति पर अधिकार कर लो, क्योंकि तुम ही इसके उत्तराधिकारी हो। श्रीमन्त गवर्नर! अब यह आप पर निर्भर है कि इस कमीने शैतान को आप कैसी सजा दें—इसे यातना देने का समय, स्थान और तरीका आपकी मर्जी

पर है श्रौर कृपया खूब कडाई से काम लीजियेगा । श्रौ
मेरा सवाल है मै जहाज़ मे बैठकर लौट जाता हूँ श्रौ
घटना भारी हृदय से राज्य को सुनाऊँगा ।

[प्रस्थान]